श्रीमज्जानकीवल्लभो विजयते

निवेदन।

माननीय श्रीसीतारामानुरागीवृन्द और साहित्य प्रेमी सज्जनों

चिदानन्द भक्तवत्सल भगवान् श्रीविदेहजावल्लभजी की कृपासे आज हम अपना प्रथम प्रकाशन यह "श्रीसीताराम प्रेमप्रवाह" लेकर आपलोगोंकी सेवामें उपस्थित होते हैं। यह श्रीसीतारामजीके प्रेमामृतका पुण्य प्रवाह कैसा सुमधुर सुंदर व सुखद है इस विषयमें निवेदन करनेकी कुछ आवश्यकता नहीं क्योंकि इस रसके परम मर्मज्ञ और सुरसिक आपलोग स्वयं इसका आस्वादन व अवगाहन कर हमारे निवेदनकी अपेक्षा अधिक अनुभव करसकेंगे, पर जिससमय आप इसका प्रेम पूर्वक अवगाहन करेंगे और आनन्दकी लहरें आपके मनको बारंबार आल्हादित करेंगी उस समय आपके हृदयमें स्वतः यहजाननेकी इच्छा उत्पन्न होगी कि यह प्रवाह कहांसे चला आरहाहै? इसका मूल स्थान कोनसाहै? अतः इसी विषयमें हम यहांपर दो शब्द निवेदन करदेना उचित समझते हैं।

इस दिव्य श्रीसीताराम प्रेमामृतका मूल स्थानहै श्रीरामप्रियतमा पुरी श्रीअयोध्या जानकीघाटनिवासी सकल सद्गुणराशि साधुभूषण भक्त-कमल-पूषण अशरण-शरण अधमोद्धार परायण अखिलश्रुतिशास्त्र मर्मज्ञ श्रीमद्रामानन्दीय श्रीसंप्रदायाचार्य महात्मा अनन्त श्री पं० श्री रामवल्लभाशरणजी महाराजका हृदयसमुद्र। इस अगाध समुद्रसे यह दिव्य अमृत करुणारूपी मेघमालाके द्वारा सर्वत्र वितरित होता रहताहै तथा जहां अपने लिये उपयुक्त स्थान पाता है वहां भरजायाकरताहै। बस इसीमार्गसे उक्त अमृत हमारे जयपुर नगरमें भी आया और यहांपर पारीक वंशोद्भव परम मनस्वी श्रीमान् गंगासहायजी

बहुरा (प्रेम) के हृदयस्थलको अपना स्थल बनाया और यहांसे ही इसने प्रवाहका रूप धारण किया।

यहांपर हम आपको इस प्रवाहके प्रवाहित होनेके परम सहायक एक और महामना महानुभावका परिचय करा देनाचाहतेहैं। वे हैं जयपुरीय विद्वन् मंडलके एक सुरत्न, शिष्य-समुदायके लिये विद्यारूप अक्षय धनके अमोघ दानी, राजकीय संस्कृत कालेजके प्रधान व्याकरणाध्यापक, प्रकांड विद्वान साधुस्वभाव, राजगुरु, मैथिलवंशावतंस, श्री१०८श्री श्री झा चन्द्रदत्तजी महाराज। आप श्रीबहुराजीके विद्यागुरुहैं और आपनेही श्रीबहुराजीकी विलक्षण प्रतिभासे प्रसन्न होकर कविता करनेका प्रोत्साहन दियाथा। अपनी समस्त रचना सर्व प्रथम आपको निवेदन करनेका श्रीबहुराजीका सदासे नियम रहाहै और आपनेभी यह वचनदियाहै कि तुमारी समस्त रचनाका संशोधन हम करेंगे। आपने इस पुस्तकके छपते समय भी अपने अनेक आवश्यक कार्योंको छोड आतिमप्रूफ अवलोकन करने की कृपा की है अतः हम आपके अत्यन्त आभारीहैं।

भक्ति पथके पथिक इसबातको भली प्रकार जानतेहैं कि इसमार्गमें गायनका क्या स्थानहै. श्रीगोस्वामीजी ने लिखा है "कलियुग योग यज्ञ नहिं ज्ञाना। एक अधार रामगुण गाना" श्रीभगवानकाभी वचनहै "नाहं वसामि वैकुंठे योगिनां हृदये न च। मद्भक्ता यत्र गायंति तत्र तिष्ठामि नारद" बस इसी गायन भक्ति के आधारपर श्रीबहुराजीके द्वारा इस प्रवाहकी रचना हुई है।

यह कोई क्रमबद्ध काव्य नहींहै किंतु श्रीगोस्वामीजीकी विनय पत्रिकादि की तरह यह भी आपके समय समय पर गाये हुए भगवानके और भक्तोंके गुणानुवाद हैं और पीछेसे इनका संग्रह व तरंग विभागादि किये गये हैं।

प्रस्तुत पुस्तकके गायन हिंदी भाषाकी तीन शाखाओं

अर्थात् व्रजभाषा खड़ीबोली और जयपुरीय बोलचालकी भाषामें वर्णित हैं और आठ तरंगोंमें विभाजित हैं जिनमें से प्रथम तरंगमें श्रीगुरुमहिमा और श्रीगुरुजन्मोत्सव; दूसरीमें श्रीरामजन्मोत्सव, श्रीजानकीजन्मोत्सव, श्रीचन्द्रकला और श्रीचारुशीला जन्मोत्सव, श्रीसरयू जन्मोत्सव, गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीका जन्मोत्सव, श्रीहनुमज्जन्मोत्सव, और श्रीरामानन्द जन्मोत्सव; तीसरीमें ग्रीष्म ऋतुके विहार जैसे पुष्प शृंगार, जलक्रीडा, नौकाविहार आदि; चौथीमें पावस और झूले; पाँचवीं में शरदोत्सव; छटी में विवाहोत्सव और शृंगार; सातवींमें होली फागोत्सव और आठवींमें चेतावनी व विनय के पद हैं।

श्री बहुराजीकी लिखी और भी कुछ पूर्ण व अपूर्ण पुस्तकें उपस्थित हैं जिनमेंसे पूर्ण पुस्तकों के प्रकाशनका प्रबंध तो यथा संभव शीघ्र होगा। परंतु अपूर्ण पुस्तकोंके संपन्न होने में इस समय एक यह दैवी बाधा उपस्थित होरही है कि आप लगातार ४-५ वर्षसे अस्वस्थ हैं जिससे आपके शारीरिक और मानसिक सभी कार्योंमें बाधा पडरहीहै अतः श्री भगवद्भक्ति के नाते हम अपनी तरफसे समस्त श्री भगवद्भक्त सज्जनों से आपको आरोग्य प्राप्त करनेके लिये आशीर्वाद देने की प्रार्थना करते हैं। आप हमारे ज्येष्ठ गुरुभ्राता हैं और हमारे ऊपर आपका पितृवत् वात्सल्य रहता है तथा हमारे समाज के आप जीवन स्वरूप हैं।

अब हम इसके प्रकाशनका कुछ हाल बतलाकर अपने इस निवेदनको समाप्त करते हैं।

ऊपर बताया जा चुका है कि प्रस्तुत पुस्तकके पद समय समय पर निर्माण हुएहैं। जब यहपद बहुतही थोडे बनेथे तभीसे इनके सुनने वाले प्रेमी जनोंकी इनको अपने अपने पास रखनेकी इच्छा होतीथी फल स्वरूप अनेकानेक पदोंकी अनेक लिखित प्रतियां भीहोगईहैं। इसी रसिक समाजकी प्रबल इच्छा से

प्रेरित होकर ७-८ वर्ष पहिले एक प्रेमी सज्जनने प्रकाशित करनेको लिये बड़ी प्रार्थना पूर्वक श्रीवहुराजीसे इनका संग्रह कराकर छपानेके लिये बम्बई श्रीवेंकटेश्वर प्रेसको भेजा, वहांसे एक पेजका प्रूफ भी आया किंतु फिर उस समय अनेक कारणों से छप नहीं सका और वो प्रति भी वहांही रहगई। उस समयके संग्रहका नाम प्रेमोत्सव था। जैसे जैसे पदोंकी संख्या बढती गई वैसे वैसे ही सज्जन समुदायके हृदयमें प्रकाशित होने की इच्छा भी बलवती होती गई इसी बीचमें यह एक छोटासा प्रेस हमारे यहां होगया और हमारी प्रकाशित करने की प्रार्थना भी स्वीकृत होगई। इसी समयमें श्री अयोध्याजी जानेका संयोग भी बनगया और वहां से श्रीगुरुमहाराजकी आज्ञा भी मिल गई। श्रीवहुराजी के अस्वस्थ रहने के कारण उपस्थित होने वाली प्रूफ संशोधनादि की कठिनाइयोंको परमोदार श्रीओझाजी महाराज ने दूर करदी और यह समस्त भार आपने अपने ऊपर लेलिया। इस प्रकार श्रीराम कृपासे यह प्रकाशित होकर आप लोगों के कर कमलों में उपस्थित है।

श्रीवहुराजीके अनुज श्रीयुक्त कृष्णसहायजी आदि अनेक गुरुभ्राता जन इसकी प्रेसकापी लिखने आदिकार्योंमें हमारे बडे सहायक हुएहैं अतः आपलोंगो के हम परम कृतज्ञ हैं।

इस प्रेसका यह पहिलाही कार्य होनेसे छपाईके संबंधमें त्रुटियोंका रहना अत्यन्तही स्वाभाविकहै अतः इसके लिये हम क्षमाप्रार्थी हैं।

श्रीरामनवमी सं० १९८६
प्रेमप्रकाश इलेक्ट्रिक प्रेस
जयपुर।

आपलोगोंके कृपाभिलाषी
वंशीधर मुरलीधर जौंहरी लड़ीवाले
(प्रकाशक)

सूचीपत्र।

—❁—

श्रीचारुशीला जन्मोत्सव पद०–

श्रीसरयू जन्मोत्सव पद–

श्रीतुलसीदास जन्मोत्सव पद

श्रीहनुमज्जन्मोत्सव०–

श्रीरामानन्द जन्मोत्सव पद०

तृतीय तरंग

ग्रीष्म विहार

वन विहारके पद०–

षष्ठ तरंग ।

विवाहोत्सव पद ।

सप्तम तरंग ।

होरी फागोत्सव पद०—

॥ श्रीं

श्रीसद्गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

श्रीसीतारामप्रेमप्रवाह

❀ प्रथम तरंग ❀

मंगलाचरण

दो० — वन्दों श्रीसद्गुरुचरण हरण जगत् जंजाल।
जिनके सुमिरण तें सकल सिद्धि होत तत्काल ॥१॥
कोशलराजाकिशोर की प्राणप्रिया गुणखानि।
श्रीविदेहनृप नन्दिनी वन्दों सब सुखदानि ॥२॥
जन गुण गाहक अघहरण अशरण जन विश्राम।
ऐसे श्रीरघुनन्दनहिं वारम्बार प्रणाम ॥३॥
जिनतें उऋण न व्है सकहिं श्रीरघुबीर उदार।
सुकृतपुंज जन हित करण वन्दों पवन कुमार ॥४॥
भाव शिशुहिं पोषत सदा वर जननी की भाँति।
वन्दों वारम्बार अस चन्द्रकला नख पाँति ॥५॥

छं०— सब-विघ्नहर गणनाथ शारद गिरिसुता हर ध्यायके।
भगवत् स्वरूप समस्त साधुनके चरण चित लायके ॥
सिय राम पद पंकज मधुप सब भक्त वृन्द मनायके।
सिय राम प्रेमप्रवाह वरणौं गुरु चरण शिर नायके ॥६॥
हे सर्व सज्जन गण विनय मम करि कृपा सुन लीजिये।
बुध कवि नहीं मैं जानि यह जानि दोष पै दृग् दीजिये ॥

सुखधाम-दृग् अभिराम जन विश्राम श्रीसियराम हैं।
दुखदलनकलिमलशमन जिनको पतितपावन नाम है ॥७॥
विन हेतु ही हित कारिणी संसार शोक निवारिणी।
गुण गहनि तिनकी वानि है सब दास दोष विसारिणी॥
तिनके शुभोत्सव–पद रचत हौं विरुद बल उर आनिके।
सुनिये तिनहिं वात्सल्य करि अति शिशु गिरा सम मानिके ८

दो० —नमस्कार गुरु चरण में करके बारम्बार।
गुरु महिमा पद लिखत हौं प्रथम तरंग मझार ॥६॥

श्रीगुरु महिमा पदः—

काहूके भरोसो गणनाथ बुद्धि-सिन्धु को है
काहूके भरोसो भानु तिमिर हरण को।
काहूके भरोसो शक्ति शत्रुगण गंजनी को
काहूके भरोसो शंभु तारण तरण को।
प्रेम योग ज्ञान को विरागको भरोसो काहू
काहूके भरोसो हरि पील-उद्धरण को।
मेरे है भरोसो सीताराम पद पद्म भृंग
श्रीगुरु उदार रामवल्लभाशरणको ॥१॥

जय जय श्रीगुरु रामवल्लभाशरण कृपा आगार।
अवध जानकीघाट निवासी जय करुणा भंडार॥
दम्पति लीला ललित मानसर राजहंस शिर मोर।
श्रीसिय रघुवर वदन मनोहर अनुपम चन्द्र चकोर॥

गुण गाहक हो दोष दलन हो रखते जनकी लाज ।
जग जलनिधिसे पार लगानेको हैं आप जहाज ॥
अशरणशरण पतित-जन-पावन तारण तरण उदार ।
नवलकमलदल—अरुण मृदुल पद वन्दौं वारंवार ॥
शरण सुखद मुझ दीन दासके पूर्ण करो सब काम ।
सियरघुनन्दन सहित प्रेम नित करो हृदयमें धाम ॥२॥

जयति गुरु करुणा—पारावार ।
अवधपुर जानकिघाट निवासी भक्त जन सन्तन प्राणाधार ।
जीव वहु प्रभु संमुख नित करहिं विरुद है जिनको अधम उधार
नाम श्रीरामवल्लभाशरण जपत ही पावैं जन फल चार ।
प्रेम तिन चरणन में चित राखु सहज जैहैं भव सागर पार ॥३॥

जयति गुरु मंगल मोद निधान ।
रामवल्लभाशरण सुहावन शरण सुखद पावन अभिधान ।
गौरवर्ण तन जलज विलोचन अति प्रसन्नमुख सदा अमान ।
चितवनि ललित कृपा परिपूरण दासन देहिं अभय वरदान ।
जीव उधारण कारण तत्पर सन्तत तारण तरण सुजान ।
रघुनन्दन-भक्तन सन्तनके मन मीननके जीवन प्राण ।
सजल जलद वर वरण रामघनके चातक हैं ज्ञान-निधान ।
धन्य अहहिं ते सुजन प्रेम युत करहिं निरन्तर गुरु गुण गान ४

कर प्यारे प्राणी निशिवासर गुरु चरणनको ध्यान ।
जो परलोक लोकके भीतर चाहत है कल्याण ॥

जबलों श्री गुरु नाहि द्रवहिं साधन किये न जाहिँ
विन साधन कबहू नहीं संसृति मूल नशाहिं
विन नाशे भव मूल शोक प्रद मिटहिं न मोह महान ॥
यदि रोगी सेवन करै अगणित औषधि तथ्य
रोग बढै विनशै नही जबलों करै न पथ्य
त्यों विन गुरु सेवा न मिटै भ्रम कीन्हे साधन आन ॥
सींचत है माली चतुर केवल तरुको मूल
विन प्रयास कछु दिननमें लहत सुफल अरु फूल
त्यों केवल गुरु पद सेवातैं अपनी गति पहचान ॥
कपट चातुरी छाँड़िके सरल प्रकृति उर आन
जान गुरुहिं आरत-हरण श्रीरघुवीर समान
रामवल्लभाशरण-चरणमें प्रेम सदा रति मान ॥५॥

श्रीसद्गुरु पद पंकज ध्याइये ।
रामवल्लभाशरण सुहावन नाम सुमिरि कलिकलुष नशाइये ।
गौर दिव्य मनहरणि मूरति शान्तिमयी निज हृदय वसाइये ।
परम प्रसन्न वदन सरसिज पर चित्त विलोचन भ्रमर लुभाइये ।
सुन्दर चिकुर प्रफुल्ल कमलदल आयत लोचन चित विच लाइये ।
कृपामयी अति अनुपम चितवनि-सुरसरिता विच नित्य नहाइये
गुरु उपदेश नाव चढ़ि विन श्रम प्रेम जगत् जलनिधि तरजाइये६

युगल पदकमल गुरु देवके ध्याइये ।
हरण दुख जाल सुख करण दूषण शमन
रुचिर गुण ग्राम अति भाव युत गाइये ।

अखिल-श्रुतिसार उपदेश आरूढ व्है
　　अगम भवजलधितैं आशु तर जाइये ।
गुरुकृपा अष्टसिधि-मौलिमणि भक्तिनिधि
　　प्रेम सब अभिलषित सहज ही पाइये ॥ ७ ॥

श्रीसद्गुरुकी जाऊँ बलिहारी ।
जो अनेक जन्मनकी बिगरी एक निमिषमें सकहिं सुधारी ।
जिनकीचरण-रेणु सेवनतैं करतल होहिं पदारथ चारी ।
कृपावलोकनिके प्रभावतैं मलिन हु होय धर्म्मव्रतधारी ।
भूलि न चले सुमारग जे जन तेहू होहिं भक्ति-अधिकारी ।
करि अति कृपा स्वभक्ति देत हैं श्रीरघुनन्दन जनकदुलारी ।
लोक और परलोक दुहुनमें प्रेम अहहिं गुरु मङ्गलकारी ॥८॥

नित ध्यान कीजे गुरुके चरणको
फल पूर्ण लीजे नर दिव्य तनको ।
इह लोकमें हू परलोकमें हू
गुरुकी कृपा तैं सिधि है नरन को ।
गुरु भक्ति नौका नीकी बनी है
गहरे जगत्सागरके तरन को ।
विश्वास जीमें करि प्रेम जपिये
शुभनाम श्रीरामवल्लभाशरणको ॥ ९ ॥

गुरु तात माता गुरु ही विधाता
गुरु ही गजेन्द्रानन सिद्धि दाता ।

गुरु शम्भु दुर्गा रवि दृष्टिदाता
गुरुदेव ही हैं हरि लोक त्राता।
गुरु ब्रह्म निश्चय गुरु ज्ञानदाता
यह साधु भाखैं परमार्थज्ञाता।
करि प्रेम श्रीसद्गुरु-भक्ति नीकी
बन तू जगत्सागर-पारयाता ॥ १० ॥

सब सुकृतनको मुख्य फल गुरुपद्–अनुराग
या ही के आधीन हैं जप योग विराग।
ज्ञान ध्यान प्रेमा परा अनपायिनि भक्ति
मूल सबनको एक है गुरुपद्–अनुरक्ति।
सद्गुरु भजन प्रभावतैं व्है आशु उदोत
जिमि कुधातु पारस परसि भल कंचन होत।
कु तरु मलय सँग मलय बनि सुर शीश चढन्त
त्यों मलिनहु गुरु भक्ति तैं पावै भगवन्त।
उभयलोक बिच सुख चहसि अरु सब विधि क्षेम
तो तू निश्चल चित्त व्है करु गुरु-पद-प्रेम ॥ ११ ॥

कृपा गुण सागर परम उजागर आरति हरण जयति गुरुदेव।
शरण-जन जगत्जलधि-भय मोचन तारण तरण जयति गुरुदेव
दुरित दुख वारण अशुभनिवारण मंगल करण जयति गुरुदेव।
दास गुण अल्पहु बहु करि मानैं दूषण शमन जयति गुरुदेव।
हृदय बिच भक्ति प्रकाश प्रकाशी भ्रमतम-हरण जयति गुरुदेव
दयावश प्रेम हु से अपनावैं अशरणशरण जयति गुरुदेव ॥१२॥

गुरुपद प्रेम सुमंगल कारी
अखिल-दुरित-दुख-दूषणहारी ।
गुरु विश्वास अचल जिन ठान्यो
चहुँ श्रुति मर्म भलो तिन जान्यो ।
अटल रहहिं जे गुरु आयसु पर
निर्भय विचरहिं त्रिभुवन भीतर ।
जिनतें बनि आई गुरुसेवा
ताके बश रिधि सिधि सब देवा ।
गुरुको ध्यान सिद्ध जिन कीनो
निश्चय तिन निज मन बश कीनो ।
गुरु करि कृपा जिनहिं अपनाये
ते सियराम हृदय अति भाये ।
गुरु महिमा नहिं विधि हू जानी
और कहहु को सकै बखानी ।
जिन गुरु भक्ति हृदय दृढ धारी
प्रेम जाय तिनकी बलिहारी ॥ १२ ॥

श्रीसद्गुरुके चरणनमें मन काहे न लागे रे ।
यह संसार भयंकर कानन भटकत लहै न पार
जबलों परम मृदुल चित श्रीगुरु करि हैं नाहिं सँभार ।
सुगम अगम हैं जेते साधन फलदायक नहिं कोय
सकल सिद्धिदायक श्रीगुरु की जब लों दया न होय ।
श्रीगुरु ध्यान आनु चित भीतर दोष सकल मिट जाहिं ।

दिनकर उदय भये भूतल पर रहत यथा तम नाहिं ।
सब विधि हित यदि चहसि प्रेम निज तो तू सब भ्रम त्यागु
सुख साधन अति वड फल दायक गुरु हरि सों अनुरागु ॥१४॥

जगत् में धन्य सो ही है हिय विच जिन धारी गुरु भक्ति ।
श्रीसद्गुरुके विमल वचन पर जिन श्रद्धा दृढ ठानी
उदित भयो तिन हृदय ज्ञान रवि जग तम रैन सिरानी ।
करहु प्रेम श्रीसद्गुरु-सेवा सब मुद मंगल खानी
वेग कृपा करि हैं श्रीरघुवर अरु सिय जू महारानी ॥१५॥

हे मन गुरु पद पंकज ध्यावहु तिनके निर्म्मल गुण गावहु ।
यह जग जलधि भयंकर अति ही लखि नहिं परत किनारे ।
या तैं श्रीसद्गुरु ही केवल तोहि उबारन हारे ।
यद्यपि वहु साधन सुगमागम निगमागम सब टेरहिं
सिद्ध तथापि होत तब जब गुरु कृपादृष्टि करि हेरहिं ।
कपट चातुरी छाडि प्रेम युत करु गुरुभक्ति सुहाई
उभय लोक बिच यातैं तोरी होइ हैं परम भलाई ॥ १६ ॥

श्रीगुरु चरण सरोज हे मन ध्यावहु रे ।
श्रीगुरु पदपंकज सुमिरे तैं दुहुँ लोकन हित तोरा रे
श्रीगुरु कृपा प्रसन्न होय हैं प्रेम सिया रघुवीर ॥१७॥ हे मन०

राखैं जो गुरुचरणन को ध्यान ।
सो ही ज्ञानवान, परम सुजान सोही सब गुण खान नीतिमान
भाग्यवान कोउ वा सम न आन ।

गुण गण गावैं नित प्रेम सों रिझावै
अति सेवै बनि निपट अमान।
अति सुख पावै सीताराम मन भावै
भव सिंधु तरजावै प्रेम गोपद समान। राखै ॥१८॥

भवभयहारी श्रीगुरुकी बलिहारी जी। श्रीगुरुकी बलिहारीजी।
बिगरीके बनैया गुरु हैं लाज के रखैयागुरु हैं
श्रीगुरु समान नहिं कोउ है हित कारी जी।
विश्व सिन्धु नर तन नैया गुरु कृपाल ताहि खेवैया
सब भाँति प्रेम गुरु कृत जन रखवारी जी॥ १६ ॥

गज़ल :—

देखने लायक़ अगर हो वस्तु तुमको देखना
तो हृदयमें धरके गुरु पद पंकजोंको देखना।
देखता है ज्यों चकोरक पूर्णिमाके चन्द्रको
उस तरह से तुम लगाये सर्वदा लो देखना।
गुरु चरण परमार्थ-पथ दर्शक कुशल अगवा हैं दो
सब दिखादेंगे तुम्हें चाहोगे जो जो देखना।
कुछ दिनो अभ्यास कीजे गुरु पदों के ध्यानका
प्राप्त इस से लाभ क्या क्या आपको हो देखना।
ये मनुज तन रामने करके कृपा तुमको दिया
प्रेम इसको व्यर्थ ही देना न तुम खो देखना ॥२०॥
धन्य है वो जिसका सद्गुरुमें अचल विश्वास है
स्वप्नमें भी जो न रखता दूसरे की आस है।

है नहीं विश्वास श्रीगुरु पर जिसे उसके लिये
शुद्ध पारस है उपलवत कल्प तरु भी घास है।
सत्य श्रद्धा जिसकी श्रीसद्‌गुरु वचन पर होगई
ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ उसके निरन्तर पास हैं।
जिसके मनमें मूर्ति गुरुकी है विराजी वो पुरुष
जिस जगह चाहे रहै साकेत ही का वास है।
है वचन मन कर्म्मसे जो भक्त श्रीगुरुदेवका
श्रीसिया और रामका सच्चा वही नर दास है।
छोडकर छल प्रेम सच्चे मनसे श्रीगुरु भक्ति कर
विश्वबन्धन खोलनेकी युक्ति यह ही खास है ॥२१॥

वही है धन्य जगमें जिसने श्रीसद्‌गुरुको पाया है
जो उनके हित भरे उपदेश पर विश्वास लाया है।
अहंता दुष्ट ठगिनीसे छुडा जिसने लिया दामन
भयानक मनमुखी दुर्वृत्तिको दिलसे हटाया है।
पुराणों वेद शास्त्रों हीं में साधन हैं मगर वे सब
सफल गुरु मुखसे होते हैं ये तत्त्वज्ञोंने गाया है।
जलधिजल मेघद्वारा ही सुखद त्यों गुरुमुखद्वारा
फलप्रद शास्त्र साधन हैं ये सन्तोंने जनाया है।
धुवाँमें आके विद्या बुद्धिकी जो रहगया नुगरा
न पाया तत्त्व उसने व्यर्थ ही जीवन गँवाया है।
विना श्रीगुरुकृपा साधन नहीं संशय हटा सकते
विना रवि क्या चराग़ों ने जगत्‌का तम मिटाया है।

हुआ है मुक्त वह ही इस जगत् जंजालसे प्राणी
कृपा अपनी से श्रीगुरु देवने जिसको छुडाया है।
बिना गुरु शास्त्र कर सकते नहीं हैं मुक्त प्राणीको
बिना केवट ठिकाने किसको नौकाने लगाया है।
वही है भक्त ज्ञानी वह जिसे सद्गुरुने अपनाया
वही विद्वान है जग में छुटी उस ही की माया है।
हृदय मन्दिरमें उस ही के सदा भगवान रहते हैं
सदा गुरुकरकमल पावन की जिसके सर पै छाया है।
सदा यह प्रेम उनकी ही कृपा की आस रखता है
श्रीसद्गुरु-भक्ति जिनके चित्तमें रहती अमाया है ॥२२॥

संसार-सिन्धुसे तुम जो चाहते हो तरना
तो चाहिये श्रीगुरुका सुमिरन सदैव करना।
गुरुमुखसे सर्व साधन होते हैं सिद्धि दायक
भ्रम-विघ्न-शूल-कारण केवल सकल हैं वरना।
परलोकमें सुगतिका जगमें महानताका
वेदोंने मुख्य कारण श्रीगुरु-प्रसाद बरना।
बिन गुरु किये असम्भव शुभगति की प्राप्ति है यों
थल बिन यथा असंभव है तोयका ठहरना।
विधि शंभु सा हो चाहे ज्ञानी गुणी व ध्यानी
बिन गुरु किये छुटैगा हरगिज़ न जन्म मरना।
औरोंकी बात ही क्या हरिभी हैं शिष्य होते
पड़ता है जगमें उनको जब नरशरीर धरना।

प्रत्यक्ष मूर्ति गुरु हैं सियरामकी कृपाकी
तू ध्यान प्रेम उनका मत चित्तसे विसरना ॥२३॥

दर्शनकी चाह चित्तमें हरदम लगी रहे
गुरु भक्ति रंगमें ये सदा मति रँगी रहे।
सुनते रहैं सदैव श्रवण गुरु-गुणानुवाद
रसना सदैव नाम रटनमें पगी रहे।
दुर्वासना हो दूर अखिल दुःख दायिनी
गुरुदेव-ध्यान-वृत्ति निरन्तर जगी रहे।
मानस भवनसे मोह महा तमका नाश हो
गुरुपद नखोंकी उसमें लगी जगमगी रहे।
भगवन् गुरूपदेश पै हो प्रेम दृढ ये मन
इसमें जरा भी अबतो न आवारगी रहे ॥२४॥

श्रीगुरु जन्मोत्सव पदः—

सद्गुरु कृपाल उदारको शुभ जन्मवासर आज है
जग मोद मंगल मूल पूरण करण जन मन काज है
आषाढ कृष्ण त्रयोदशी शुभलग्न अति शुभ बारमें
अवतरे करुणा मय दुखित बहु जीव लखि संसार में।
अति बालपन तें राम पद सुख सद्म में अनुराग भो
तेहि हेतु परिजन गेहतें मन माँझ परम विराग भो
निज ग्राम धाम हुलास को सुख जानि दुख सम तजदियो
प्रभु जन्म भू कोशलपुरी में वास अपनो तिन कियो।

तहँ प्रभुहिं सुमिरत कछुक दिन में साधु कुल सेवित भये
उपदेश लहि वहु जीव कलिमल ग्रसितहू भव तर गये
तिन दीनबन्धु उदारको शुभ जन्मउत्सव आज है,
यह उत्सवनको राज है जग जलधि हेतु जहाज है।
तिनके युगल पद कमल मनमें प्रीति संयुत राखिये
आरति हरण अशरण शरण गुरुदेवकी जय भाखिये
तिनके विमल गुण गण हरण भव प्रीति संयुत गाइये
कह प्रेम बिनु श्रम तरिय भव श्रीरामसिय मन भाइये ॥२५॥

पावन परम सुखमूल अति ही धन्य है दिन आजको
है जन्मउत्सव गुरु कृपामय जगत् जलधि जहाज को
सब सुखकराणि दुख हराणि तिथि आषाढ कृष्ण त्रयोदशी
यह धन्य अभिमतदायिनी बर कल्पलतिका सी लसी।
देवी रमा श्रीरामलाल द्विजेन्द्र धन्य महान हैं
जिनके सदन बिच अवतरे गुरुदेव ज्ञान निधान हैं
वह ग्राम धन्य रोह श्रीगुरु जन्मभूमि सुहावनी
ते धन्य थल जिनमें पड़ी गुरुचरण रज अति पावनी।
श्रीअवध-साधु समाज अतिशय धन्य भगवद्रूप हैं
गुरुदेव जिनके संग रहि सुख देत लेत अनूप हैं
ते धन्य सुकृती जीव जे श्रीगुरुशरणमें आवहीं
विन हेतु हित सुखधाम जिन कँह करि कृपा अपनावहीं।
ते धन्य जे छल छाँडि श्रीगुरुदेव-सेवा करत हैं
सुख सों जपैं गुरुनाम सन्तत ध्यान हिय में धरत हैं

जिमि मलय संगति प्राप्त करि सब तरु मलयता पावहीं
शुभ रूप श्रीगुरु संग तैं अति धन्य ते हो जावहीं ।
सद्गुरु जयन्ती आज है सब दुःख शोक नशावनी
उपजावनी उत्साह परमानन्द हिय सरसावनी
सब साजि मंगल साज जे उत्सव अनूप सजावते
ते धन्य श्रीगुरुभक्तिरत श्रीरामसियके भावते ।
तू हू चहसि यदि धन्य होन सदैव गुरुपद ध्याउ रे
तिनके विमल गुण गानकर हिय भक्ति भाव बढाउ रे
रखु प्रेम केवल एक आस त्रिताप भव भय हरण की
जय बोल बारम्बार श्रीगुरु रामवल्लभाशरण की ॥२६॥

दास जन हेतु दिन कामतरु आजको ।
मास आषाढ कृष्ण त्रयोदशि रुचिर
ख्यात जगमें करणि सिद्ध सब काजको ।
जनमदिन तरणतारण शरण जन सुखद
सन्त जन पूज्य गुरुदेव महाराजको ।
मोद युत कीर्ति तिनकी विमल गाइये
सकल मिलि साजि मंगलनके साजको ।
प्रेम अत्यंत ही सुगम यह मार्ग है
वश करण हेतु श्रीसीय रघुराज को ॥२७॥

आज अवतीर्ण भये हैं श्रीगुरु करुणाधाम ।
अधम-उधारक जनगुण-गाहक दायक जन विश्राम ।
रामवल्लभा शरण सुहावन पावन जिनको नाम ।

कल्पवृक्ष हू तैं यह वासर मोहि लखि परत ललाम।
बिन याचे ही भये जननके प्रेम पूर्ण सब काम ॥२८॥

शुभ जन्म दिवस है श्रीगुरु सुखसागर करुणा धाम को।
दासन को है यह उत्सव सब उत्सव को शिर मोर
सब भाँतिसहायक दायक धर्मार्थ मोक्ष अरु काम को।
सब भाँतिन सज के मंगल के सुन्दर साज समाज
अति सुख उपजावन पावन यश गैये जन विश्राम को।
संशय संहर्ता हरता जग केरी तीनिहु ताप
निश्चिल चित व्है के जपिये प्रमुदित गुरु नाम ललाम को।
हे प्रेम अहहिं यह अवसर अति सुन्दर गुरु गुण गाय
बन प्रेम भावतो मिथिलाधिप नन्दिनि अरु श्रीराम को ॥२९॥

सुन्दर जन्म दिवस गुरु स्वामी को अति मंगल कारी आज
रुचिर मास आषाढ यह चर अचरन चित चैन
असित पक्ष शुभ वार तिथि त्रयोदशी सिधि दैन। सुन्दर०
उत्सव जेते जगत् में अहहिं सकल फल फूल
श्रीसद्गुरु उत्सव परम है तिन सब को मूल। सुन्दर०—
प्रभु हू तैं गुरुता अधिक गुरु विच निःसन्देह
त्यों हीं सब उत्सवन में गुरु है उत्सव येह। सुन्दर०—
सकल सुमंगल साज साजि हिय बिच अति हरषाय
नर तनु फल भल पाइये गुरु कल कीरति गाय। सुन्दर०—
गुरु प्रसाद तैं होय वश शीघ्र सिया रघुनाथ
देय भक्ति अनपायिनी प्रेम राखिहैं साथ। सुन्दर- ॥३०॥

गावो गावो सब हिल मिल आज शुभ सरस बधाई ।
महिना आषाढ सुहावन, कृष्णा तेरस अति पावन
करुणा सागर श्रीसद्गुरुकी वर्षगाँठ है आज सुहाई ।
मंगल सब विधि सज लीजे, श्रीसद्गुरु अर्चन कीजे
उत्सव रचिये गुण गण गैये प्रेम सहित अतिशय सुखदाई ।
कीन्हे गुरु उत्सव पावन, रीझहिं श्रीसिय रघुनन्दन
देहिं भक्तिवर लेहिं दास करि करहिं प्रेम सब तव मन भाई

॥ ३१ ॥

सुहावन श्रीसद्गुरुको जन्मदिवस हितकारी जी
जन मन प्रकटन परमानंद
श्रीसद्गुरुको जन्म दिवस हितकारी जी अहा ।
भलो है मंगल कारी शुभ आषाढ महीना ये
कृष्णा त्रयोदशी तिथि आज
सब सिधि करणी हरणी त्रिविध दवारी जी अहा ।
नहीं है दासन को हित या दिन सम कोउ दूजो जी
पूरक जन मन की अभिलाष
प्रगटे जामें श्रीगुरु भव भय हारी जी अहा ।
सजो जी सब मिलि मंगल उत्सव गुरु सुख राशी को
कीजे श्रीगुरु हरि गुण गान
जो है भ्रम तम नाशक तरुण तमारी जी अहा ।
करो जी प्रेम सहित वर अर्चन सद्गुरु स्वामी को
यातैं रीझहिं सियवर बेग
कृपा करहिं श्रीस्वामिनि जनक दुलारी जी अहा ॥३२॥

आज जन्मदिन श्रीसद्गुरुको सब विधि पूरण काम
मंगल मोद निधान।
शीतलकरण हरण जग जरणि मास रुचिर आषाढ है
कृष्णपक्ष सिद्धिदा त्रयोदशि जानत सकल जहान। मंग०-
रामजन्म नक्षत्र सुहावन अभिजित परम पवित्र में
प्रकटित भये कृपासागर गुरु करन सकल कल्याण। मंग०-
गुरुशरणागत जीवन को नहिं बासर यहिं सम दूसरो
सब उत्सव को चूडा मणि है यह उत्सव सुखदान। मंग०-
जगत् काज सब त्यागि बन्धु जन या उत्सव बिच लागिये
अतिहर्षित-चित होय साजिये मंगल सकल विधान। मंग०-
जन्म समय पंचामृत स्नानादिक विधियुक्त कराइये
भोग धरिय षट रस व्यंजनको पै विशेष मिष्टान्न। मंग०-
संध्या समय समाज साजि सब साज बाज संग लीजिये
करिय जागरण श्रीसद्गुरु-हरि कीरतिको कल गान। मंग०-
श्रीयुत सद्गुरु रामवल्लभाशरण सुहावन नाम ये
नीको अहहिं अमियरस हू तें करिय निरन्तर पान। मंग०-
श्रीसियरघुवरके रिझवनके यत्न अनेक प्रकार हैं
पै तिन सब में अहहिं प्रेम श्रीसद्गुरुभक्ति प्रधान। मंग.।२३।

गुरुदेव-त्रिलोक-उजागर की शुभ साल गिरह सुखदायी है।
गुरुभक्त-जनोंके भवनोंमें अति धूम खुशीकी छाई है।
हो गया बाहिरी ताप शमन वर्षा ने है कर दिया अमन
सुखसिन्धु दयाघन श्रीगुरुने जनमनकी तपन बुझाई है।

आषाढ त्रयोदशि कृष्ण भली जन मंगलकारिणि मोदथली
सबसिद्धि-प्रदायिनि कामदुघा अवनी पर यह जनु आई है।
आनन्दमग्न हैं भक्त सकल सबके मनमें उत्साह नवल
सब सगुण सुमंगल सजते हैं घरघरमें आज बधाई है।
गुरुदेव कृपाल दयामयकी जय हो करुणावरुणालय की
मति मन्द प्रेमकी बिगड़ीको जिनने सब भाँति बनाई है ३४

बाजत अति गह गही बधाई, सुनि सुनि हिय सुख अधिकाई ॥
शुभ आषाढ त्रयोदशि कृष्णा भृगु वासर सुखदायी
बड भागिनी रमा सुत जायो त्रिभुवन आनँद दायी।
आँगन चौक पुराये द्वारन बन्दनवार बँधाये
मंगलकलश आदि मंगलके नाना साज सजाये।
धूम कपूर धूपकी छाई घटा सरिस यह राजै
बिबिध बाजने बजत मनोहर मधुर मधुर जनु गाजै।
गान करहिं युवती जन सुनि सुनि कोकिल कंठ लजावै
करि करि रुचिर सुवनको दर्शन प्रेम महा सुख पावै ॥३५॥

अति वड भागिनी रमाने जायो पुत्र वर
सुढर ढरयो है आज धाता सब सृष्टि कर।
सुवन को जनम श्रवण सुन पावत ही
दौरि आये ग्राम के निवासी सब नारी नर।
भूल गये हरष विवश सुधि देहन की
नाचन और गावन लगे हैं अति प्रेम भर।
केते भर फैकत गुलालनकी झोरी नभ

केते शुभ बाजन बजावत हैं तारतर।
ऐसी भाँति प्रेम सुखदायी मनभाई लागी
बाजन बधाई श्री द्विजेन्द्र रामलाल घर ॥ ३६ ॥

बाजत द्विज मन्दिर बधाई माई आज
प्रकट भये श्रीरामलाल घर भक्त सुवन सुखदायी माई आज।
चाहत चातक स्वाति बिन्दु ज्यों लोग सकल जेहिं चाहत हैं
जिवनजरी सी मोद भरी शुभ घरी आज वह आई। माई०
पूरब दिशा रमा देवी तैं सुवन चन्द्रमा उदित भये
लहि हैं सुजन चकोर कुमुद सुख पाय सुभाक्ति जुन्हाई। माई०
सब नर नारी हर्षित भारी नाचत दै दै तारी री
भूले सुधि तन भये मगन मन भई प्रेम मनभाई। माई० ।३७।

मन की आज पूजी आस
पुरुष बानिता सबनके हिय भयो परम हुलास।
रामलाल द्विजेन्द्र तिय श्रीरमा जाको नाम
शुभ नखत विच पुत्र जायो सकल गुण गण धाम।
गणक बोलि द्विजेन्द्र पूछे तनय गुण करि हेत
दीन्ह उत्तर तिन सबन सुन लेहु ज्ञान-निकेत।
देखि याके रुचिर ग्रह चित चकित हमरो होय
तनय छल करि अवनि आई दिव्य मूरति कोय।
निगम विद् सद्ग्रन्थ विद् शुभ शास्त्र ज्ञान निवास
मन बचन अरु कर्म तें यह राम सिय के दास।
साधुभूषण तरणतारण पतितपावन प्रेम

तरहिं ते भव नाम इनको जे जपहिं करि नेम ॥ ३८ ॥

हुआ री सबके मनका सुहाया है आज
पुत्र देवी रमाजीने जाया है आज ।
सब नारि और नर द्विज वर सदन पर
गाते हैं सुन्दर बधाई अनूप
दे दे तारी दिखाते हैं सुन्दर वो नृत्य
हो रहा है खुशीका मनोहर समाज ।
होकर मुदित मन द्विज सब व गुरु जन
देते हैं द्विज वर को ऐसी अशीश
प्रभु पूरी तुम्हारी करैं कामना
उम्र हो इस तुम्हारे लला की दराज ।
अपनें जनोंको इस जग जलधि के
अन्दर दुखी देख करके महा
करुणा करके श्रीरघुबर ने की है दया
भेजा उनके तरानेको अनुपम जहाज़ ।
गौतमकी नारीको जिससे उबारा
अपना लिये पातकी भी अनेक
वो ही कारुण्य रघुवर कृपाधाम का
होके शिशु मानो पृथ्वी पै आया है आज ।
देवी रमा अरु श्रीराम द्विज वर
इस जग के अन्दर परम धन्य हैं
जिनने हम सबके सुकृतोंके भंडारको
प्रेम इन लोचनों से दिखाया है आज ॥ ३९ ॥

श्रीयुत द्विज बर रामलालके सदन बधाई बाजे
अति पुनीत आषाढ मास वर कृष्णपक्ष तेरस भृगुवासर
जायो देवी रमा सुवन वर जीव उधारण काजे।
गावहिं गीत ग्राम नर नारी नाचहिं हर्ष सवन हिय भारी
कल रव बजत झाँझ सहनाई दुन्दुभि घन इव गाजे।
याचक जन जो याचहिं पावहिं लहि सन्तोष वचन अस भाखहिं
चिरजीवो यह भक्त सुवन यश प्रेम अचल जग राजे। ४०

सुवन छवि नेक निहारो री
श्रीयुत रामलाल द्विजराजसुवन छवि नेक निहारो री
बड़भागिनि श्रीरमा बिराजत गोद मोदयुत लीन्हे
अतिशय रुचिर चन्द्र आनन पर नयन चकोरक कीन्हे।
लोहित लोहित चरण कमल मृदु अरुण कमल छवि हारी
चपल चित्त रूपी मधुकर कहँ बरवश निज वश कारी।
पारिजात दल मृदु करतल लखि जानि परत, मन माहीं
त्रिविध घाम तापित वहु जीवन पर करिहैं यह छाँहीं।
नयन विशाल शान्त रस पूरण चितवनि सुन्दर भौंहैं
आनन रुचिर अंग अनुपम शिशु वसन विभूषण सोहैं।
शान्त होत अति चित्त इनहिं लखि त्यागत चंचलताई
प्रेम बचन वृद्धाके सुनि अस सकल तिया हरषाई ॥ ४१ ॥

यह छवि अतिशय रुचिर निहारो, निज तन मन धन सब वारो।
सुन्दर भवन शयन अति नीको कोमल धवल बिछौना।
शयन किये तापर मन मोहत रामलाल द्विज छोना। यह छ०

बैठी परम निकट बडभागिनि लखहु रमा महतारी
व्यजन हाथ लीन्हे प्रमुदित-मन शिशु कहँ करत बयारी । यह०
मोदमयी मूरति जोहत है टारत नयन न इक पल
लहत अघाय प्रेम निज कृत बड सुकृत समूहनको फल । यह०
॥ ४२ ॥

रामलाल द्विज सदन जागरण हिलमिल ललना वृन्द करैं ।
नाना लीला ललित करनको नाना भाँतिन वेष धरैं ।
गावत मंगलगीत मनोहर लय स्वर संयुत तान भरैं ।
नृत्य करत हैं बहु भाँतिनसों भाव दिखावत चित्त हरैं ।
निरखि तनय श्रीरमा गोद बिच प्रेम विवश तन सुधि बिसरैं ४३

निहारो बडभागिनि श्रीरमा पालने शिशुहिं झुलावै री ।
निरखि निज सुन्दर बालकको हेरी आली
पुलकित तन व्है हर्ष विवश दृग सलिल बहावै री ।
विविध रँग नाना भाँतिनके हेरी आली
अतिशय सुन्दर अमित खिलौना आनि दिखावै री ।
सुजन मन पावन कारी री हेरी आली
श्रीरघुनन्दन बाल केलि पद गाय सुनावै री ।
श्रवण करि करि शिशु हर्षत है हेरी आली
किलकनि अरु लरखरनि प्रेम मनमें अति भावै री ॥ ४४ ॥

पालने बिच पौढाऊँ मैं
हे मम जीवन प्राण तनय अति मधुर झुलाऊँ मैं ।
विविध खिलौने लाय दिखाऊँ चुटकि बजाऊँ मैं ।

चूमूँ बदन हरषि हिय लाऊँ लाड लडाऊँ मैं।
श्री रघुनन्दन बाल केलि पद गाय सुनाऊँ मैं।
किलकहु प्रेम चपल करि कर पद बलि बलि जाऊँ मैं॥ ४५॥

ललन पलना बिच झूलत है।
माता बैठी मुदित झुलावत चुटकि बजावत ख्याल दिखावत
लाड लडावत तदपि न शिशु अति हर्ष जनावत है।
रघुपति चरित सुजन मन पावन जब लागत है जननी गावन
तब करि करपद तरल तनय आनँद बश कूजत है।
निरखि अलौकिक रामचरणरति अम्ब हिये मानतअचरजअति
सुकृत बेलि निज फली जानि अति सुखसों फूलत है।
छठी जगनको आई तिय जे निरखि अलौकिक शिशु लीला ते
धन्य धन्य कहि प्रेम हर्ष वश तन सुधि भूलत है ॥ ४६॥

श्रीरामलाल द्विज तिया ललनको पलना बीच झुलावति हैं।
सुकृत बेलि निज फली मानि के हियमें अति हर्षावति हैं।
हिल मिल ललना वृन्द हरषि हिय गीत छठीके गावति हैं।
नाना बेष बनावति नाचति बाजन बिबिध बजावति हैं।
नृत्य करति नाना भाँतिनतैं हिय अति सुख उपजावति हैं।
अबला गीतनकी सुनि कल ध्वनि कोकिल हिये लजावति हैं।
मुदित रमा अपने लालनके सादर लाड लडावति हैं।
किलकत निरखि प्रेमयुत अपने सुकृतनके फल पावति हैं॥४७॥

श्रीरामलाल द्विज द्वार चलहु साजि ढाढनियाँ।
मंगल मय तिथि योग नखत बिच जायो पूत पुनीत,

रमा बड़भागनियाँ । श्रीरामलाल०—
नाचिय तहाँ मनोहर गतितैं सादर करि करि गान
कीर्ति कल पावनियाँ । श्रीरामलाल०—
मिलहिं तहाँ मन भावत भूषण वसन अन्न भर पूर
विविध हीरा मणियाँ । श्रीरामलाल०—
मात गोद बिच तनय प्रेमयुत निरखि करहु हेवाम
सफल दृग आपनियाँ । श्रीरामलाल०— ॥ ४८ ॥

ढाढी अब ना विलम्ब लगाइय जू ।
श्रीयुत रामलाल द्विज वर घर मोहि लै संग सिधाइय जू ।
सुवन जन्म आनन्द बधाई वर बिरुदावलि गाइय जू ।
तिनहिं रिझाय विविध मणि भूषण वसन निछावर लाइय जू ।
प्रेम पाय पावन शिशु दर्शन नर तनु फल भल पाइय जू ४६

भयो है सब ही को मनभायो री ।
तकत अति सुचिर कालतैं बाट आज विधि दाहिनो आयो री ।
सुकृतनिधि रामलाल द्विज घरनि रमा सुत सुन्दर जायो री ।
चलहु तहँ सकल सुमंगल साजि गान कल करत बधायो री ।
हरषि हिय हिलमिल कीजे गान सोहिलो परम सुहायो री ।
प्रेमयुत करि शिशु दर्शन नयन लाभ अति लेहु अघायो री।५०।

दिवस यह परम सुहावन री ।
रामलाल द्विज राज सदन बिच बजत बधावन री ।
शुभ आषाढ मास भृगु वासर
असित त्रयोदशि नखत योगवर

जायो रमा सुवन अति सुन्दर सुख उपजावन री।
आंगनमें शुभ चौक पुराये
द्वारन बन्दनवार बँधाये
सकल सुमंगल साज सजाये चित्त लुभावन री।
हर्ष विवश सब ग्राम वधूजन
साजि सुमंगल साज सुहावन
द्विज गृह आय सोहिलो सुन्दर लागी गावन री।
सुनि शिशु जन्म प्रीति अति बाढी
ढाढ़न युत चलि आयो ढ़ाढ़ी
गान करन लाग्यो सप्रेम कल कीरति पावन री ॥ ५१ ॥

श्रीयुत रामलाल द्विज भौन बाजत अति आनन्द बधाई।
शुभ आषाढ़ मास सुख सार कृष्णा त्रयोदशी भृगुवार
जायो सुत श्रीरमा उदार त्रिभुवन आनँद मंगल दायी।
आँगन भीतर चौक पुराये द्वारन बन्दनवार बँधाये
मंगल कलश अनूप धराये वरणि न जाय परम रुचिराई।
हिल मिल ग्राम बधूजन आई लखि लखि शिशुकी परम लुनाई
गावन लागी जन्म बधाई अपने जीवनको फल पाई।
ढ़ाढी जन वंशावलि गावैं द्विज वर हर्षित द्रव्य लुटावैं
पुनि भंडार भरेही पावैं नव निधि मनो प्रेम घर आई ॥५२॥

जयति श्रीरामलाल द्विजराज।
जयति जयति श्रीरमा सँवारनि सकल जगत्के काज।
सुयश तुम्हार उदार विप्र वर वरण सकत है कौन

पर उपकार निरत तुम जैसो है नहिं भयो न होन ।
लखि कलिकाल विकल शुभ जीवन अति कृपाल रघुराज
अपनो अंश रूप सुत दीन्हो जगत् समुद्र जहाज ।
सुनि दादी के वचन हर्षि हिय द्विज वर करि सत्कार
प्रेम युक्त दिये वसन विभूषण धन अरु अन्न अपार ॥ ५३ ॥

गजल :—

सखी पुत्र जाया है देवी रमाने
सुकृत–शालिनी रामद्विज वर प्रियाने ।
वहुत जल्द तय्यार हो जावो सजकर
चलेंगी वहाँ सोहिला श्रेष्ठ गाने ।
ये सुन कर के पुलकित हुईं नारियाँ सब
लगी हर्षका जल दृगोंसे वहाने ।
वडी शीघ्रतासे रुचिर साज सजकर
हुईं विप्र वरके भवनको रवाने ।
वहाँ जाके सबने किये वेष नाना
लगी फिर विविध शुद्ध लीला दिखाने ।
वहुत सी तरहके लगी नृत्य करने
लगी प्रेमयुत वाद्य सुन्दर वजाने ।
मधुर गान करने लगी जिसको सुनकर
लगे कोकिलाओंके कुल भी लजाने ।
भरी देखकर गोद देवी रमा की
सफल अपने जीवन हुए प्रेम माने ॥५४॥

हो रामलालजी तुम धन्य धन तुम्हारी प्रिया
तुम्हारे सम न किसीने परोपकार किया।
प्रसन्न रामको अत्यन्त तपसे तुमने किया
अनन्य भक्त हो सुत वर फकत थे माँग लिया।
न ब्रह्मलोक न धन धाम राज पाट लिया
परोपकार निभाया स्व सुखको त्याग दिया।
परोपकार-निरतता निहार करके महा
कृपालु रामका अतिशय हुआ प्रसन्न हिया।
अनेक जीव समूहोंको तारने के लिये
स्व अंश रूप तनय आपको उन्होंने दिया।
नयन पुटोंसे रुचिर दिव्य पुत्र रूप अमृत
तुम्हारे पुण्यसे हम ग्रामियोंने प्रेम पिया ॥५५॥

लिटाये गोदमें देवी रमा सुतको खिलाती है
वदन को करके अवलोकन परम आनन्द पाती है।
कनकमय दारुमय अरु मृत्तिकामय रत्नमय सुन्दर
खिलोने हाथमें ले ले के बालक को दिखाती है।
कभी घुँघरू बजाती है विविध करती है चेष्टायें
बनावट की हँसीसे आप हँस हँस कर हँसाती है।
कभी अशरण शरण श्रीरामके शुभ बाल चरितोंको
महा हर्षित हृदय हो हो के गा गा कर सुनाती है।
उन्हे सुन कर के शिशु हँसता है जब किलकारियां दे कर
प्रफुल्लित प्रेम माता होके छातीसे लगाती है ॥५६॥

पाये हैं तुमने हे द्विज अलौकिक सुवन
इनके दर्शनसे पावन हुये मम नयन।
शरीर गौर है राका शशी सा है आनन
अरुण सरोज मृदुल हैं चरण युगल शोभन।
विशाल और मनोहर हैं कंज से लोचन
कृपा व शान्ति भरी है परम ललित चितवन।
हैं लाल करतल उँगली मनोहर
नासा श्रवण भौंह सुन्दर हैं सब
इनके दर्शनसे होता है चितमें हुलास
धारण करता है थिरताको चंचल ये मन॥
सुलक्षणोंसे विदित है ये नाम पायेंगे
श्रीराम भक्ति अखिल विश्वमें बढ़ायेंगे।
अनेक जीव समूहोंको निज दयासे यह
परम अगाध जगत् सिन्धुसे तरायेंगे।
सुन कर गणककी वाणी किसीने
गंभीर ध्वनिसे कहा सत्य है
साथ ही साथ जय ध्वनि यकायक हुई
प्रेम जिससे उठा गूंज सारा गगन॥ ५७॥

हियेधरि गुरु चरणनको ध्यान
श्रीमत्सद्गुरु परम्पराको सादर करूं बखान।
निज भक्तन पर धारि दया चित रघुनन्दन स्वच्छन्द
प्रकट भये तनु धरि जग जाहिर श्रीयुत रामानन्द।

तिनके शिष्य भये गुण सागर श्रीयुत योगानन्द
तिनके परम कृपालु शिष्य भे मयानन्द सुखकन्द ।
श्रीयुत तुलसीदास भागवति तिनके भये उदार
श्रीयुत नयनराम तिनके भे शिष्य विदित संसार ।
भये खामचौगानी पुनि ऊधो मैदानी नाम
पुनि श्रीखेमदास तिनके श्रीरामदास सुखधाम ।
तिनके लक्ष्मणदास भये पुनि तिनके देवादास
तिनके श्रीभगवानदास जिन आरा कीन्ह निवास ।
बालकृष्णदासजू भये पुनि बेणीदास उदार
रामश्रवणदासजू भये पुनि तिनके ज्ञानागार ।
तिनके भये शिष्य गुण मन्दिर परा भक्ति भंडार
रामबचनदासजू महात्मा करण अधम उद्धार ।
तिनके शिष्य अहहिं मम सद्गुरु जन मन पूरण काम
जिनको श्रीयुत रामवल्लभाशरण सुहावन नाम ।
पंडितवर गुणगणमंडित सियरघुवरभक्तिनिवास
अवध पुरी जानकीघाटमें सन्तत करहिं निवास ।
सकल साधु मंडल बिच बिलसहिं श्रीगुरु पूरणकाज
नक्षत्रनके बीच लसहिं जिमि राकारजनीराज ।
है यह श्रीगुरु परम्परा शुभ सकल सुखनकी मूल
जे नित्य प्राति गावहिं तिनके मिटहिं महा भव शूल ।
भुक्ति मुक्ति दायिनि श्रीसद्गुरु परम्परा करि नेम
जे पढिहैं तिनके हिय उपजहिं सियाराम पद प्रेम ॥५८॥

वन्दौं श्रीसद्गुरु चरण युगल मल अरुण कमल छवि हारी
अतिविमलमृदुलतर दलनसकलदुखदल अविचल सुखकारी ।
जिनको अति विमल प्रकाशराग जब हिय अकाश बिच भासै
विज्ञान ज्ञान कर चरण युगल अनुराग दिनेश प्रकासै
जाके प्रभावतैं मोह जनित अज्ञान गहन तम नासै
चिरकाल विमुद्रित जीव हृदय कंजहिं वह भानु विकासै।
नव श्याम गौर सुख राशी संतत साकेत विलासी
शत कोटि काम रति मोहन दरसैं रघुवर जनक दुलारी। वन्दौं ०-
जिन करुणामय की कृपादृष्टितैं विषम द्वन्द दुख भागै
ना ना शुभ सुन्दर कर्म धर्म बिच सन्तत जन मन लागै
भव ममता रूपी महा घोर निद्रा तजि के जिय जागै
सब जगत् विलक्षण अतिशय निर्मल निज स्वरूप अनुरागै।
अविचल अनुपम सुख पावै जग जन्म मरण छुटि जावै
ऐसे श्रीगुरु तिनको चरित्र कछु भाखौं मति अनुसारी। वन्दौं ०-
राजत चूड़ामणि रूप सकल अचला रूपी युवती को
सुन्दर जन पद ब्रह्मांड विदित बुन्देलखंड अति नीको
तहँ पन्ना नामक राज्य मनोरम जाहिर सब जगती को
ता मध्य रगोह ग्राम अहहिं शुभ हरण हार जन ही को ।
अति पावन वह थल राजै जिहि लखत सकल अघ भाजै
निज धर्म परायण शुद्ध तहां के शीलवन्त नरनारी। वन्दौं ०-
तहँ बसहिं त्रिपाठी रामलाल द्विज कान्यकुब्ज बड़भागी
श्रीमान ज्ञान गुण धाम निरन्तर स्मरण पठन अनुरागी
जिनकी मति आठोंयाम रहहिं हरि पद सरोज बिच लागी

जिमि रहत कमल दल बिलग सलिलतैं त्यों जग सुखके त्यागी
तिनकी रुख जोवन हारी दृढ धर्म पतिव्रत वारी
श्रीरमाभिधाना धर्मपत्नि तिन द्विजवरकी अतिप्यारी। वंदों०-
उपकार निरत तिन दोउनके हिय उपजी यह अभिलाषा
सुत होय हमारे प्रकट अखिल जग पूज्य राम सिय दासा
याके हित दोउन अमित काल कीन्हे जप तप उपवासा
तब अतिशय भये प्रसन्न नियम लखि रघुवर पूरण आसा।
निज शुद्ध जीव बहुतेरे कलि काल बिकल प्रभु हेरे
निज अंश रूप शिशु रमा गर्भगत कीन्ह कृपाल खरारी। वंदों०-
उगनो चाहैं दिननाथ लसै तिहि समय पूर्व दिग् जैसी
भीतर आये तैं चन्द्र सुशोभित शरद घटा हो जैसी
कृष्णा रजनीमें दीपयुक्त हो शोभित भिल मिल जैसी
श्रीरमा गर्भ प्रभु अंश रूप लहि भई सुशोभित तैसी।
उन्नीसौ और अठारा सम्बत सुनखत भृगुवारा
आषाढ कृष्ण तेरस महँ प्रकटे सुजनसरोज तमारी। वन्दों०-
जिहिं समय प्रकट भये दीन वन्धु करुणामय जन सुखदाई
वनकी बेलिन अरु तरु समूह पै परम हरितता आई।
सब दिशा और अम्बरमंडल पै शोभा अति अधिकाई।
जलतैं पूरित व्है गये सकल सरिता अरु सर समुदाई
अति प्रमुदित मन सब केरो संतन हिय हर्ष घनेरो
शीतल सुगन्धयुत मन्द मन्द शुभ लागी बहन बयारी। व०-
सुत बदन निरखि हिय हरषि दुहुन अगणित विप्रन कहँ बोले
नाना वस्तुनसों भरे भये भंडार अनेकन खोले

करि लौकिक वैदिक रीति दिये बहु भूषण वसन अमोले
याचक गण आये दौरि दौरि प्रमुदित विरुदावलि बोले।
तिन सादर सब सम्माने बहु दान दिये मन माने
पुनि हर्षित कीन्हे भवन गवन तिन चढ़ि नाना असवारी। ब०-
सुनि रामलाल शिशु जन्म ग्राम नर नारि महा हरषाई
बहु वाद्य बजावत नाचत आये गावत जन्म बधाई
करि शिशु को दर्शन मग्न भये लोचन फल अनुपम पाई
द्विज सबको करि सम्मान विदा करि दीन्ह वसन पहिराई।
गृह रुचिर चौक पुरवाये वर बन्दनवार बँधाये
अत्यन्त हर्षके वश घर घर प्रति कराहिं जागरण नारी। ब०-
कबहू शय्या बिच पौढि मातु सादर पय पान करावै
कबहू मंगल मय शिशुहिं गोद लहि मोद सहित हुलरावै
पलना भीतर पौढ़ाय झुलावै ख्याल अनेक दिखावै
इमि लालनतैं सम भाव रहहिं शिशु नाहिं कछु हर्ष जनावै।
जब रघुपति कीरति गावै सादर निज शिशुहिं सुनावै
तब करि निज कर पद तरल देत आनंद सहित किलकारी। ब०-
पुनि भये जबहिं कछु बडे अजिर में चलन गुठरुवन लागे
आननतैं कलबल बचन मनोरम जबसों निकसन लागे
तब ही तैं सीताराम नाम निशि बासर सुमिरन लागे
ध्यानावस्थित चित होय रहहिं प्रभु पद सरोज अनुरागे।
तिय राम भजन जो गावैं तिहिं निकट दौरि चलि जावैं
सो अति प्रिय लागति तिनहिं आपनी यथा रमा महतारी। ब०-
श्रीमहाराजजू शिशु पन ही तैं तजि निज ग्राम सिधाये

अपने पितुकी सँग सरित नर्मदा तीर गाँवमें आये
इक बेर तहांतैं पिता संग ये अन्यग्रामके माहीं
गवने तिहि अवसर साधु मिले इक इनहिं मार्गके माहीं
निज गोद इनहिं तिन लीन्हो कछु कर्ण मांहिं कहि दीन्हो
पुनि चले गये ते साधु गोद अपनी तैं इनहिं उतारी। वन्दों०-
अपने पितुकी संग ग्राम जायके श्रीगुरु दीनदयाला
नर्मदा तीरके ग्राम मांहिं आ बसे सुखेन कृपाला
जा दिनतैं दर्शन दियो महात्मा इनहिं मार्गके माहीं
ता दिनतैं इनकी भई दशा जो जाय कही सो नाहीं।
उन हीं को हिय बिच ध्याना राखैं यह परम सुजाना
तिनके मिलबे की चाह रही अरु बिसर गये सुधि सारी। वन्दों०
पुनि वाही ग्राम मँझार पितासँग दूजीबार सिधारे
तहं मिले आय ते साधु और इनतैं यों बचन उचारे
हेवत्स हृदय निज धीरज राखहु विलग न मोह कहँ जानो
जब तुम व्है हो कछु बडे मिलहिं हम सत्य बचन यह मानो।
इमि धीरज तिनहिं बँधाई अन्तर्हित भये गुशाईं
करि दर्शन अरु सुनि वचन भयो सुख महाराज कहँ भारी। व०
पुनि आय गये नर्मदा तीरके ग्राम माहिं मम नाथा
कछु दिन पीछे पैंडी ग्रामहिं ते जाय बसे पितु साथा
तिहि ग्राम माहिं श्रीसिय रघुवरको मन्दिर रह्यो सुहावन
प्रभु इच्छातें वह इनहिं मिल्यो यह लागे तिहि बिच निवसन।
तहँ वही साधु सुखदाई मिलि इनहिं स्वप्नके माहीं
प्रज्ञा वर्धन शुभ स्तोत्र सिद्धि विधि कही करी इन सारी। व०-

श्रीस्वामीरामानन्द भये जग रूप जलधि के बेरे
तिनके श्रीयोगानन्द शिष्य श्रीमयानन्द तिन केरे
श्रीतुलसीदास भागवति तिनके नयनरामजी तिनके
पुनि भये खामचौगानी ऊधौमैदानीजी तिनके।
श्रीखेमदास तिनकेरे श्रीरामदास तिनकेरे
श्रीलक्ष्मणदास भये पुनि देवादास भये अविकारी। वन्दों०-
तिनके श्रीयुत भगवानदास योगीश्वर भक्तिनिवासा
आरा नामक अति पुण्यस्थलमें कियो जाय जिन वासा
उनके गुणमन्दिर बालकृष्णदासजी शिष्य सुखसागर
उनके श्रीबेणीदास भये यश जिनको जगत् उजागर।
तिनके भये शिष्य उदासी श्रीरामश्रवण सुखराशी
तिनके सुशिष्य श्रीरामबचनदासजी भक्ति धुर धारी। वन्दों०-
तिन रामबचनजू आय वास इनके मन्दिरमें कीन्हो
इन हीतैं श्रीगुरु महाराजनें मन्त्रराज शुभ लीन्हो
धारण करके बैराग्य कियो तहँ अपने गुरुको सेवन
पुनि श्रीकाशी बिच आय कियो कछु दिन सियरघुबर सुमिरन।
शंकर आयसु अनुसारा पुनि अवध माहिं पग धारा
तहँ मनीराम छावनी मांहिं यह बसे दास हितकारी। वंदों०-
तहँ मिले तिनहिं वे साधु प्रथम जिन मगमें दीन्हो दर्शन
शुभ श्रीयुतबिद्यादास नाम इनकेरो परम सुहावन
इनके साधक बनि इष्ट देवको भजन कियो लय लाये
कछु दिनन माहिं साकेताधीश्वर रघुबर दर्शन पाये।
पुनि करि उपदेश सुहाये अति निर्मल जीव तराये

मलिन हु लीन्हे अपनाय विरुद प्रभु अधमउधार बिचारी। वं०
प्रभु गुरु प्रसादतैं बेद शास्त्र सब बसे आय जिह्वा पर
सद्ग्रन्थ सार प्रभु परा भक्ति बासि गई बिमल हिय भीतर
नित सद्ग्रन्थनकी कथा कहन लागे अत्यन्त मनोहर
सब साधु वृंद अरु बहु सुकृती हू सुनन लगे अति सादर
करि श्रवण सुधा रस पाना अति मलिन जीव हू नाना
छुटिगये बिषम भवरोग फंदतैं भये मोक्ष अधिकारी। वंदों०
जिमि उडुगण अवली मध्य पूर्ण राकारजनीकर राजैं
जिमि सकल गिरिनके मध्य सुहावन अद्रिराज वर राजैं
सब सुर वृंदनकी सभा मध्य जिहि भाँति पुरंदर राजैं
जिमि सकल ऋषिनके मध्य महर्षी अरुंधती पति राजैं
विद्ववृंदनमें जैसे सुरगुरु राजत है तैसे
श्रीसद्गुरु राजाहिं अवध मध्य सब साधु समूह मझारी। वंदों०
प्रति वासर पावन कथा कहहिं जग जीव उधारण कारण
जेते निस्तारे जीव लहै वाणी हू तिनको पार न
ऐसे श्रीसद्गुरु रामवल्लभाशरण तरण अरु तारण
जिय धरण हार निज दास तुच्छ गुण अवगुण कोटि बिसारण
है वर्ष गांठ तिन केरी चिंतामणि कासी ढेरी
गाइय तिनकी कल कीर्ति प्रेमयुत सियाराम रिझवारी। वंदों०

इति श्रीसीतारामप्रेमप्रवाह प्रथमतरंग समाप्त ॥

॥ श्रीः ॥

श्रीसद्गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

श्रीसीताराम प्रेमप्रवाह

द्वितीय तरंग

दोहा०—बालरूप श्रीरामको करि अपने हिय ध्यान
करूँ द्वितीय तरंगमें जन्मोत्सव-पद गान ॥

श्रीरामजन्मोत्सवपदः--

जग हितकारी जनमे राम
नूतन नील-नलिनदल-लोचन मरकत बरण कलेवर श्याम।
चारु चिबुक चन्द्रानन चितवत होत चकितचित अगणित काम
नृप रानी परिजन पुरजन सब आज भये परिपूरणकाम।
सुर समूह सब अभय भये अति मुनि योगिन पायो बिश्राम।
परम प्रसन्न प्रेमहू से जन सुलभ पतितपावन सुनि नाम॥१॥

आनन्द अवध पुर आज
प्रकट भये कोशलानन्द आनन्दकन्द कुल कुमुदचन्द
जग वन्द्य भक्त भय हरण काज आनंद अवधपुर आज।
नव ध्वजयुत सुंदर बजार सब बंदनवारन युक्त द्वार
सज्जित मंगल के सकल साज आनंद अवधपुर आज।
जय जय बोलत दास यूह विरुदावलि वरणत कबि समूह
उच्चरत वेद भूसुर समाज आनंद अवधपुर आज।
मग्न भये रनिवास राय अतिशय अभिमत सुत लाभ पाय

जिमि रंक होय राजाधिराज आनन्द अवधपुर आज ।
कीन्ह भूप कुल वेद रीति गोदान दिये विप्रन सप्रीति
बहु रत्न हेम शृङ्गार साज आनन्द अवधपुर आज ।
याचक जन गुण करत गान लहि लहि न्योछावर और दान
व्है गये दूसरे राजराज आनन्द अवधपुर आज ।
पुरवासी परिजन समस्त व्है गये सकल आनन्द मस्त
जिमि वारिधि बूडत लहिं जहाज आनन्द अवधपुर आज।
पुर नारिन मिलि सुरी आन नृपमंदिर प्रविशहिं करत गान
निज सफल विलोचन करन काज आनन्द अवधपुर आज।
पुर वासिन मिलि देव बृन्द इमि प्रेम अशीसत भरि अनन्द
अति होउ ललन ऊमर दराज आनन्द अवधपुर आज॥ २ ॥

भुवन विच अनँद छायोरी जायो श्री कौशिल्या सुवन ।
चैत मास सुखदायी पावन नौमी तिथि उजियारी
वार योग ग्रह नखत सुहावन जग-मुद-मंगलकारी । भुवन-
पुर बाजार वीथियन भीतर सरस सुगंध सिंचाई
मुक्ता बंदनवार मनोहर घर घर बजत बधाई ।भुवन०-
रत्न चौक सब अजिरन सोहहि मोहहि जोहनहारे
सफल सुमंगल वृत्त कलश भल विलसत हैं प्रति द्वारे। भु०-
मंगल थार लिये बहु भामिनि कोकिल से स्वरवारी
रुचिर बधाये गावत प्रविशत राजद्वार मँझारी । भुवन०-
लोक वेद विधि करत महीपति देत द्विजन कहँ दाना
याचक वृंदन देय निछावर करत कुवेर समाना।भुवन०-

चढे विमानन तिय श्रुत सुर वर कौतुक लखत अपारा
दुन्दुभि हनत सुमन वहु वर्षत उचरत जय जय कारा। भु०-
हर्षित द्विज सुर साधु अशीसत सुखी रहहु नृप रानी
चिरजीवहु यह सुवन प्रेम शुभ छवि-मुद-मंगलखानी। भु०-।३।

प्रभु जन्म वधाई बाज रही है
राम जन्मदिन आनँद भीनी प्रजा सुमंगल साज रही है।
मुक्ता बन्दनवार द्वार पर लखि उडु अवली लाज रही है।
सिंचे सुगन्ध बजार वीथिका नव ध्वज राजी राज रही है।
सदन सदन बिच पुरजन अवली शुभ संगीतक साजरही है।
गावत नाचत लोग मुदित मन दुन्दुभि घन इव गाज रही है।
पुर अरु व्योम मँझार प्रेम जय जय की गूँज अवाज रहीहै॥ ४॥

कौशल्या सुत जायोरी सजनी आज
पुर बिच मंगल आज महा है
घर घर बजत अनंद बधायो री सजनी आज।
सुर नर नाग सिद्ध योगी जन
भयो सबन केरो मनभायो री सजनी आज।
रानी राय सकल पुरबासिन
सुकृतनको अनुपम फल पायो री सजनी आज।
श्री दशरथ नृप अरु रानीन को
सुयश धवल तिहुँ लोकन छायो री सजनी आज।
द्विभुज किशोर ईश ईशनको
भक्त हेतु शिशु तनु धरि आयो री सजनी आज।

अखिल विश्व यह जासु खिलौना
कौशल्या तिहिं गोद खिलायो री सजनी आज ।
जासु रोम ब्रह्मांड कोटि तिहिं
रानी निज पटछोर छिपायो री सजनी आज ।
जो ब्रह्मादि जनक जग कारण
सो श्रीदशरथ पुत्र कहायो री सजनी आज ।
भक्त विवशता को उदाहरण
प्रकट प्रेम स्वामी दरसायो री सजनी आज ॥ ५ ॥

धन्य धन्य री कौशल्या रानी भाग्य तुम्हारो
नारद सनकादिक शिव मुनि अज
चाहत जाके चरणनकी रज
सो प्रभु प्रेम विवश शिशु तनु धरि
तुम्हरे भवन पधारो । धन्य धन्य री०-
जो सब विश्वहिं पालत लालत
मायहिं भ्रुकुटि विलास नचावत
तिहिं पय पान कराय पोषि तुम
नीकी भाँति दुलारो । धन्य धन्य री०-
जो योगिन ध्यानहु वश आव न
परम स्वतंत्र अनन्त निरंजन
कर गहि ताहि स्वबस बरबश करि
अंजन सारि सँवारो । धन्य धन्य री०-
जपि जिहिं नाम लहत साधक सिधि

अलख अगोचर सकलकलानिधि
तुम्हरे पुण्यप्रभाव प्रेमयुत
भरि भरि नयन निहारो। धन्य धन्य री०-॥ ६॥

राघव प्यारेकी शुभ जन्मबधाई आवो आली गावो।
सुन्दर नृत्य करो बहु भाव दिखावो बाजन विविध बजावो।
तन मन धन अपने न्योछावर करि करि प्यारी पियहिं रिझावो।
जीवन लाभ लहोरी सजनी अविचल प्रेम भक्ति बर पावो॥ ७

आज अति छवि सरसाई री
यदपि अवध सब धामनतें सर्वदा सुहाई री। आज०-
जिमि तारुण्य पाय मृगनयनी ऋतु वसन्त कानन तरुश्रेणी
निशा पूर्णिमा शरद पाय अतिशय सुखदाई री। आज०-
पुरबासिन मणिचौक पुराये द्वारन मंगल कलश धराये
वीथी विविध सुगन्ध अरगजा अतर सिंचाई री। आज०-
बर्षगाँठ उत्सव महान सुनि सब ब्रह्मांडन की नभ सुरधुनि
आई देखन हेतु किधों सित ध्वज फहराई री। आज०-
मंगल तरु द्वारन पर राजै मुक्ताबन्दनवार बिराजै
पुरशोभा लखि उडुगण अवली मनहुँ लुभाई री। आज०-
कल धुनि गान करत अबला जन हर्ष विवश भूली सुधि तनमन
घर घर बाजत प्रेम परम आनंद बधाई री। आज०-॥ ८॥

लोचनके तारे अनियारे नयना वारे प्यारे
राघोजी की जन्मवधाई जी आज।
चैत्र मास पावन परम शुक्ल पक्ष सुख सार

नवमी तिथि जगबंदिता योग लग्न शुभ वार
महा सुखदाईजी आज । लोचनके०-
विश्व वन्दिता यह पुरी धामनकी शिरताज
यदपि छवि मई एकरस रहत सदा तउ आज
अधिक छवि छाईजी आज । लोचनके०-
राजत तोरण मणि जटित ध्वजराजी फहराय
अति सुन्दर बाजारकी मुखसों कही न जाय
मनोहरताईजी आज । लोचनके०-
द्वार द्वार मंगलकलश मुक्ता बन्दनवार
मणिमय चौक सुहावने घर घर मंगलचार
परम रुचिराईजी आज । लोचनके०-
द्वार द्वारतें उठत है दुन्दुभि ध्वनि गम्भीर
डफ मृदंग ढोलक बजत भेरी अरु मंजीर
झाँझ सहनाईजी आज । लोचनके०-
वर्षगाँठ आनन्द मद पुरजन करि करि पान
भये सकल उन्मत्त से नाचत करि करि गान
सुरत विसराईजी आज । लोचनके०-
जो जाके ढिंग जायके माँगत प्रेम समेत
न्योछावरमें लोग सब सोइ सोइ ताकहँ देत
हृदय हरषाईजी आज । लोचनके०-
पुरबासी समरथ सकल तिनसों दोउ कर जोरि
प्रेम भक्ति बर माँगि हों पुनि पुनि सबहिं निहोर
आजबन आईजी आज । लोचनके०- ॥ ६ ॥

गौर साँवरी मन हरणी प्यारी लागै सिया राघोजीकी
जोरी हेमाय ।
गुरु जन लाज दुरावती तदपि उमंग दुरै न
प्रकट जनावत दुहुनके छविके लोभी नैन
करत वरजोरी हेमाय ।
रूप छके यौवन छके सजि नखशिख शृङ्गार
इक आसन आसीन दोउ जीवन प्राण हमार
किये गठजोरी हेमाय ।
घर्ष पुजावत हर्ष युत मुनिवर परम प्रवीण
कर राखे लोचन युगल छवि सरिताके मीन
प्रीति नहि थोरी हेमाय ।
वेदध्वनि भूसुर करहिं वन्दी विरुद उच्चार
सकल कहहिं चिरजीवहू कोशलराजकुमार
विदेहकिशोरी हेमाय ।
वरसगांठको हेसखी आनँद उदधि अपार
शीकर हू नहिं कहि सकहिं जाके वदन हजार
प्रेम मति थोरी हेमाय ॥ १० ॥

है शुभ जन्म वधाई आज सुहाई राजकुँवर रघुवरकी
सुन्दर ध्वजा पताका राजैं भव्य कलश शिखरन पर भ्राजैं
मणि मय बन्दनवार विराजैं शोभा कहि न जाय घरघरकी ।
सोहत रुचिर वृक्ष द्वारन पर सज्जित मंगल कलश मनोहर
बीथी और बजारन भीतर सरस सिंचाई विविध अतरकी ।

कंचन थार सुमंगल पूरित करमें लिये बधाई गावत
सुन्दर नृपमन्दिरमें पैठत हिल मिल ललना अवध शहर की ।
है नृपमन्दिरकी शोभा जस तिहिं बरणौं जगमें को कवि अस
निरखत ही मति मोहत बरवश शारद वेद सहसफनधरकी।
पूजत वर्ष सिया रघुनन्दन करि गठजोरी बैठि बरासन
हर्षि पुजावत मुनि भूसुर गण उच्चरत मंत्रावलि श्रुतिवरकी।
विरुद वदत सब याचक वृन्द वर्षहिं सुर प्रसून सानन्द
हनिहनिदुन्दुभि बोलतजयहो रविकुलकमलविपिनदिनकरकी ।
लखि आनन्द मगन भये सारे प्रेम सहित इमि बचन उचारे
उमर दराज होहु दृग तारे प्यारे दम्पति छवि सागर की ॥११॥

आज दरबार छवि देखरी भरि नयन ।
चारु मंडप सकल भाँतितैं सज रह्यो
मनहुं राजत सकल विश्व शोभा सदन ।
विविध मणि खंभ वर लसत झालर रुचिर
जगमगत मोतियन जाल अरु बहु रतन ।
जनमदिन परम आँनद लखन हेतु जनु
आय छाये सकल नखत गण तजि गगन ।
लसत तिहि मध्य शुभ मंच मणिगण खचित
तिमिरहर दिवसकर सरिस वर द्युतिधरन ।
तिहिं उपर सिया रघुकुल तिलक राजहीं
अमल दामिनि सजल नील जलधरवरण ।
देह अनुहरत शुभ रंग अंबर धरे

अंग अंगन सजे रुचिर मणि आभरण।
दुहुन के देहतैं झरत लावण्य जनु
निरखि शोभा लजत अमित रति अरु मदन।
भरत अरु लखण शत्रुघ्न सेवन कराहिं
करन लीन्हे रुचिर छत्र चामर व्यजन।
लसहि दुहुँ ओर सुग्रीव आदिक सखा
युगल कर जोरि सम्मुख प्रभंजन सुवन।
देवगन्धर्व अरु नाग कन्या नचाहिं
स्तुति पठन कराहिं चहुँ वेद अरु सिद्धजन।
विप्रवर वृन्द प्रमुदित अशीशहिं सकल
बदत विरुदावली विदुष अरु बन्दि जन।
राम के जन्म दिन की सभा पेखि शुभ
हर्ष बश पौरजन अति भये मग्न मन।
दुन्दुभी हानि जयति जयति भनि प्रेमयुत
अमर बरषहि अमित कल्प तरुके सुमन॥ १२॥

ग़ज़ल —

सुखोंका मूल ये श्रीराम-जन्म-बासर है
निवास हर्षका सब मंगलोंका आकर है।
समस्त लोक महानन्द हैं जलाशय से
उछाह आजका अत्यन्त मिष्ट सागर है।
अनन्य भक्त कुमुदबन चकोरवृन्दोंको
शरदकी पूर्ण निशाका रुचिर निशाकर है।

प्रविष्ट चाहे जो होना वो हो, महोत्सव यह
श्रीराम भक्ति भवनका खुला हुआ दर है।
वो जन समूह परम धन्य प्रेम जगमें है
जो सब तरहसे महोत्सवमें आज तत्पर है ॥ १२ ॥

है आज जन्म दिवस राम श्याम सुन्दर का
रसिक समाज पपीहों के स्वाति जलधरका।
सुजन समूह चकोरक शरद् सुधाकरका
समस्त साधु सरोरुहाविपिन विभाकर का।
नगर के चारु बजारोंमे और गलियोंमें
मचाहै पंक सा मृगमद मलय व केशरका।
नव ध्वजायें सुसज्जित हैं उच्चतर कैसी
किया ये चाहती मानों है स्पर्श अम्बरका।
सफल सुवृक्ष व मंगलके चारु कलशोंसे
सुरत्न दामसे भूषित है द्वार घर घरका।
भवन भवनमें रचा पुरजनोंने संगीतक
पिकावलीको लजाता है रव सरस स्वरका।
सहज सुहावने सबने सदन सँवारे हैं
विभव विलोकके चित है चकित पुरन्दरका
न अपने देहकी सुधि है न गेहकी सुधि है
यही है हर्ष विवश हाल राजकुल भरका।
सभावितान निहारो तो है सजा कैसा
मनो निवाससदन हो अशेष छवि वर का।

सुमध्य भागमें सज्जित है रत्न सिंहासन
प्रकाश मंद है इसके निकट विभाकरका।
बिराज करके यहाँ छवि निवास बर दम्पति
सुनैंगे गान सरस अन्तरंग परिकरका।
परम मनोज्ञ सरस हाव भाव युत होगा
बचन विलास अलौकिक यहाँ परस्परका।
रसिक जनों ने बनाये हैं मीन मन जिसमें
वढाव होगा परम उस सिंगार सागरका।
निहार करके सफल प्रेम नेत्र तू करना
प्रहर्ष केलिका कौतुक सिया व रघुवरका॥ १४॥

अहा हिल मिलके हम सब आज जायेंगी बधाईमें।
जनम का लोचनोंका लाभ पायेंगी बधाई में।
करैंगी नृत्य मनभाया अनोखे भाव दरसाकर
बहुतसी रागिनी और राग गायेंगी बधाईमें।
पखावज बेणु बीणा और मंजीरादि सारंगी
विविध बाजे सरस गति से बजायेंगी बधाईमें।
हमारी प्राणप्यारी प्राणप्यारे सीय राघव पर
निछावर करके तन मन धन लुटायेंगी बधाईमें।
हमारे हीय नयनों में निरन्तर धाम कर लीजे
रिझाकर उनसे ये बर माँग लायेंगी बधाईमें।
तेरी भी कामना पूरी करैंगी प्रेम श्रीसियजू
युगल पद पद्मका सेवक बनायेंगी बधाईमें॥ १५॥

अहा महोत्सव है आज आली हमारे प्यारेके जन्म दिनका
जो लोग चातक हैं राम घनके समझलो सर्वस्व आज तिनका।
लगी हैं पत्रावली सुमंगलके वृक्ष रम्भादि बहु सजे हैं
हुआ है मोजूद आके मानो समाज अनुपम विबुधविपिनका।
कुसुम नहीं हैं नखोंकी द्युतिसे परास्त होकर समस्त तारे
चरण शरणमें हैं आ रहे वो किये हुए हैं बहाना इनका।
समस्त ब्रह्मांड देव नदियाँ हैं जन्मदिनकी खुशीमें आई
सित ध्वजायें नहीं लगी हैं ये जमघटा हो रहा है तिनका।
सहेलियाँ गान कर रही हैं व नचरही हैं तडिल्लतासी
युगलको आनन्द दे रही हैं है इनके सम और भाग्य किनका।
खुशीका दरबार हो रहा है हैं मंच पै स्थित प्रिया व प्रियतम
वही निछावरमें दे रहे हैं हृदय मनोरथ है जैसा जिनका।
बिभूषणोंसे बिभूषिता है प्रिया ये महिमा है मोद ही की
कदापि भी तो सहन न होता खयाल होता तो बोझ इनका।
तू जाके चरणोंमें शिर झुकादे वे पूछैं क्यों तब येबात कहना
बनालो अनुचर, कहैं वो कैसा, तो प्रेम कहियो कि मोल बिनका
॥ १६ ॥

है जन्मदिन श्रीरामका प्यारे मनोभिरामका।
सुन्दर द्विभुज किशोर वर शारंग तूण बाण धर
मरकत तमाल श्यामका है जन्मदिन श्रीरामका।
विकसित नवल कमल नयन अनुपम मनोज्ञ छवि अयन
कारुण्य प्रेमधामका है जन्म दिन श्रीरामका।
गो बुद्धि तर्क ज्ञान पर व्यापक अलख अजर अमर

ईशेश पूर्णकाम का है जन्मदिन श्रीरामका।
सुमिरन सप्रेम जो करे दुस्तर जगत जलधि तरे
यह फल है जिनके नामका है जन्मदिन श्रीरामका।
उत्सव रचो सप्रेम अब कीजे सहर्ष गान सब
उनके गुणोंके ग्रामका है जन्मदिन श्रीरामका।
शुभ व्रत करो व जागरण जिसके प्रभावसे दहन
होगा दुरित तमाम का है जन्मदिन श्रीरामका।
दशरथसुवन विदेहजा तुम पर करैंगे अति कृपा
मानैंगे अपने कामका है जन्मदिन श्रीरामका।
देंगे स्वभक्ति वे अचल पावोगे जिससे प्रेम फल
मानुष्य तन ललाम का है जन्मदिन श्रीरामका ॥१७॥

शुभ जन्ममहोत्सव है पावन आनन्दकन्द रघुनन्दनका
दारिद्र्य दोष दुख भंजनका निज भक्त जनोंके जीवनका।
नव ध्वजा पताका लगी हुई वन्दनवारें हैं बँधी हुई
छिड़काव हुआ है सभी जगह अरगजा इत्र अरु चंदनका।
घरघरमें आज महोत्सव है शोभन संगीतकका रवहै
दुन्दुभीध्वान मद हरता है सावनके घनकी गरजनका।
भवनोंके अजिरोंके अन्दर मणि चौक रचे हैं अति सुन्दर
द्वारोंके मंगलतरु करते मन हरण कल्पतरु शोभनका।
मंगल प्रदीप हैं सजे हुए हैं कलश मनोहर धरे हुए
कर सकता साहस आज नहीं अहिराज नगर छवि वर्णनका।
भूसुर वेदध्वनि करते हैं याचक जन बिरुद उचरतेहैं

जय जय करते बरसाते हैं सुर सुमन पुंज नन्दनवनका।
पुरजन देते हैं दान अमित अभिमत न्योछावर मान सहित
होता है धनेश महान चकित अवलोक के वैभव पुरजनका।
नर नारि महा सुख मग्न हैं सब परमोत्सवमें संलग्न हैं सब
हे प्रेम बधावा तू भी गा अखिलेश्वर त्रिभुवन पावनका॥१८॥

शुभ सालगिरह प्यारे रघुनाथ कुँवरकी है
अत्यन्त खुशी सबके चहरों पै झलकती है।
सज्जित है सकल नगरी रंगीन ध्वजाओंसे
रत्नोंकी ललित माला दर दर पै दमकती है।
कर्पूर अगुरु की यह छाई है धुँवा घन ज्यों
शिखरों की ध्वजा उसमें बिजली सी चमकती है।
मंगलके कलश शोभन द्वारों पै सजे सबने
सहकार व रंभादिक वृत्तोंकी सु अवली है।
प्रभु जन्मवधाईकी है धूम मची घर घर
आनन्द पयोनिधिमें उठती ये लहरसी है।
आनन्द अवधपुरका क्या प्रेम कोई बरणे
शारद व सहसफनकी वर बुद्धि हिचकती है॥१९॥

शुभ बर्षगाँठ आज है सुख धाम रामकी
करुणा कृपा निधानकी शरणाभिरामकी।
इत्रोंसे हैं सिंचे हुए बाजार बीथियाँ
और है लगी कतार पताका ललाम की।
मंगल कलश व वृत्त लगे द्वार द्वार पर

शोभा है तोरणों पै त्रिविध रत्न दामकी ।
नच नच के गान करते हैं पुरजन खुशीमें सब
घर घर बधाइयाँ हैं बडे धूमधामकी ।
आनन्दमें निमग्न है अति ही विदेहजा
विसरी हुई सी आज है सुध देह धामकी ।
जिन जिन ने स्वामिनीको है जाकर किया प्रणाम
हृदयाभिलाष पूर्ण हुई उन तमामकी ।
चल प्रेम भक्ति तू भी निछावरमें माँग ले
योंहीं बनैगी बात अरे तुम्फ निकामकी ॥ २० ॥

मिथिलेश लली रघुवर करते हैं बरस पूजन
सानन्द पुजाते हैं गुरु बिप्र सकल मुनिजन ।
दोनोंके रुचिर तन पर पोशाक गुलाबी है
अंगोमें जगह पा कर भूषित हैं सकल भूषण
सारी व दुपट्टेकी गठजोरी किये दोनों
आसन पै विराजे हैं रतिकाम हृदय मोहन ।
दोनों ही कनखियोंसें आपसमें निरखते हैं
हरती है हृदय सबका दोनोंकी ललित चितवन
आनन्द सुधा मदमें है मग्न सकल परिकर
यह धन्य है इसका ही है प्रेम सफल जीवन ॥ २१ ॥

चलो गावो सहेली वधाई री ।
बाजारमें ध्वजा व पताका हैं लग रहे
हर एक घरमें आज बधाये हैं बज रहे ।

ललना समूह गान हैं करते जहाँ तहाँ
मंगलके साज बाज हैं सब लोग सज रहे ।
आज रामनवमी अति सुन्दर है त्रिभुवन सुखदाई री ॥
शृङ्गार अपने तन पै मनोहर सँवार लो
गायन के साज बाज मिला लो सुधार लो ।
दरबारका समय है न अब देर तुम करो
चल कर के जल्द राम सियाको निहार लो ।
बहुत दिननतें बाट तकत शुभ घरी आज है आई री ॥
मिल कर के खूब नृत्य करो री उमंगसे
गावो बधाइयाँ भी अनोखे ही ढंगसे ।
प्रियतम प्रियाको आज करो री प्रसन्न तुम
अपने सप्रेम तान की अनुपम तरंगसे ।
न्योछावरमें माँग लेहु सखि प्रेम भक्ति मन भाईरी ॥ २२ ॥

आली बर्षगाँठ है आज सुहाई सुख सागर रघुनन्दनकी ।
भवन भवनमें सरस बजरहे बधाये हैं
हरेकने चौक अजिरमें रुचिर पुराये हैं ।
अनूप द्वारों पै मंगल कलश धराये हैं
मनोज्ञ वृक्ष बहुत भाँति के लगाये हैं ।
वर वन्दनवार बँधाई घर घर मणि मुक्ता अरु हीरनकी ॥
बना के झुंड सुललनायें गीत गाती हैं
पिकावली को मधुर नादसे लजाती हैं ।
परम उछाह के अन्दर हैं मग्न सब ऐसी

न थे भी सुध है कि गाती किधर को जाती हैं ।
है सबके मनमें लगी लालसा पिय प्यारीके देखनकी ॥
सभामें जाके बधाई रुचिर ये गायेंगी
करैंगी नृत्य सिया रामको रिझायेंगी ।
है जैसी जैसी री जिन जिनके मनमें अभिलाषा
वही सहर्ष निछावरमें आज पायेंगी ।
हम हूं अब शोभा जाय निहारैं राजसभा बिच दोउनकी ॥
वहाँ पै पहुँचके दोनोंको सर झुकायेंगे
सिया पदोंको स्वनयनोंसे हम लगायेंगे ।
अनन्य भक्ति निछावरमें उनसे माँगैंगे
खुशी में आज सियाजीसे प्रेम पायेंगे ।
है उनके मनमें करुणा अतिही बहुत सुनत है दीननकी २३

आली नीको जनमदिवस श्रीरामको
सरस बधाई गायस्याँ ।
हरी हरी बाँदरवाल बंधायस्याँ
हाँये हीरा मोत्याँ चौक पुरायस्याँ ।
मंगलका सब साज सजायस्याँ
हाँये म्हेतो राज भवनमें जायस्याँ
बरस पूजता राम सियाका
हाँये म्हेतो दृग भरि दर्शन पायस्याँ ।
दोन्याकी शोभाके ऊपर
हाँये आली बलिहारी म्हे जायस्याँ

विनती करस्याँ प्रेम रिझायस्याँ
हाँये वाँसै भक्ति निछावर पायस्याँ ॥ २४ ॥

सहेली मिलि सोहिलो गावत हैं ।
करहिं श्रीरामललाजूकी छठी जागरण हिय हरपावत हैं ।
नचत केउ नाना वेष वनाय सरस धुनि वाद्य वजावत हैं ।
सकल दिशि उमँग रह्यो आनन्द भुवन विच नाहिन मावतहैं ।
शिशुहिं मणिपलनामें पौढाय जननि मन मुदितझुलावत हैं ।
लखत शिशु सुषमा परम अनूप दृगन पर पलक न लावत हैं ।
हर्ष वश फूलि मातु वलि जात तनक जव शिशु मुसकावत हैं ।
सकल लहि लोचनलाभ अघात सुकृत फल पूरण पावत हैं ।
ललनके लोहित लोहित चरण प्रेम मनमें अति भावत हैं २५

ललन लोने झूलैंरी पालनमें ।
झुलावै देखो श्रीकौशल्या मात
भई है अति भोरी री आनँदमें ।
सजल घन अरु मरकत विच नाहिं
झलक जैसी सोहै री शिशु तनमें ।
अरुण अति कर पल्लव अरु अधर
महा छवि छाईरी आननमें ।
हरत हिय करि करि कर पद तरल
ठगोरी नहिं थोरी री किलकनमें ।
अलौकिक शिशु शोभा यह प्रेम
रखैंगी हम आलीरी पलकनमें ॥ २६ ॥

हाँ ये देखो झूलै सुन्दर पालणै
कौशल्याजीका लाल हे।
माता बैठी मुदित झुलावै
हाँ ये चोखा ल्यार दिखावै छै ख्याल हे।
चुटकी वजावै वलिवलि जावै
हाँ ये निरखै वालविनोद रसाल हे।
रतन जड्यो सुवरणको पलणो
हाँ ये ईमें मोत्याँ का छै जाल हे।
मरकत श्याम शरीर झलक अति
हाँ ये देख्याँ झपकै चख तत्काल हे।
अरुण अरुण नख अद्भुत सोहै
ज्याँकै आगै लाल नहीं कुछ माल हे।
जंघा उरु कटि परम मनोहर
हाँ ये दोन्यूँ भुज अर हियो छै विशाल हे।
बिजुरी बरणों झीनो झँगल्यो
हाँ ये गलमें कठलो मुक्ता माल हे।
नील कँवलसा नैण अनोखा
हाँ ये दोन्यू होठ घणा छै लाल हे।
चिवुक नासिका श्रवण मनोहर
हाँ ये आधा चाँद सरीखो भाल हे।
रुचिर दिठोणा की छव नीकी
हाँ ये काला घूँघरवाला बाल हे।
कर कर चंचल कर पद किलकै

हाँ ये निरख्याँ कुण नहिं होय निहाल हे ।
प्रेम चिरंजीवो ये जगमें
हाँ थे ये छे दीनाका रखवाल हे ॥ २७ ॥

श्रीजानकी जन्मोत्सव पद.

जनकनृपराजभवनके माँहीं बधाई शुभ बाज रही हे जी हाँ ।
सजे सब मंगल कलश सुहाये महा छवि छाज रही हे जी हाँ ।
उठत ध्वनि दुन्दुभिकी गंभीरा घटासी गाज रही हे जी हाँ ।
श्रवण करि गीत सखिनके नीके पिकावलि लाज रही हे जीहाँ ।
प्रकट भई लली परम सुख दैनीसुमंगल मोद मही हे जी हाँ ।
लजावै तन द्युति दामिनि द्युति हू को न सुषमा जाय कही हे जीहाँ
मगन मन श्रीमिथिलेश सुनयना महानँद अवधि लही हे जी हाँ
प्रेम सुख बिच जन सब सुधि भूले भई सब हीय चही हे जी हाँ
॥ १ ॥

जनक भवन में आनँद भारी ।
अति पावन वैशाख मास शुभ सोहत नवमी तिथि उजियारी ।
प्रकट भई सब सृष्टि वन्दिता सियजू भक्त जनन रखवारी ।
सुता गोद लीन्हे मुख निरखत इकटक बड भागिनि महतारी ।
देखि अलौकिक छबि पुलकित है वारहिं बार होत बलिहारी ।
ऋधि सिधि शक्ति त्रिदेव वन्दिता आई भवन सुता तनु धारी
यह विचारि श्रीजनक महीपति हर्ष विवश तनुदशा बिसारी ।
पुनि बरबश विवेक धरि राजा द्विज याचक जन लिये हँकारी।
दान दीन्ह अभिमत हर्षित हिय भूषण धन मणि बसन सँवारी ।

नारदादि मुनि सुर प्रधान सब आये भूपति भवन मँझारी।
दर्शन पाय नाय सादर शिर सफल जन्म गनि भये सुखारी।
परमानंद सुधारस छाके नृत्य करहिं सब पुरनर नारी।
प्रेम प्रसून अमरगण वर्षत दुन्दुभि हनि जय गिरा उचारी
॥ २९ ॥

प्रकट भई श्रीजनक नृपति घर श्रीसियजू जग मंगल करणी।
परम अलौकिक रूपवती शुभ लक्षणवती तडित द्युति वरणी।
भये प्रसन्न देव नर मुनिवर मिटी सवनके जियकी जरणी।
प्रजा परम आनँद रस साभी नृप रानी सुख जाय न वरणी।
घर घर बजत बधावन गावत याचक जन कीरति अघ हरणी
जय जय कहि प्रसून सुर वर्षत हनि दुन्दुभि घनरव अनुसरणी
दान मान सन्तुष्ट विप्र सब देत अशीश प्रेम मुद भरणी।
यह कन्या अनुरूप पाय वर करो सुयशतें धवलित धरणी
॥ ३० ॥

सुनयना धन धन भाग तुम्हार।
अखिल भुवन पति प्राण बल्लभा लियो आय अवतार।
ऋधि सिधि शक्ति त्रिदेव चहत हैं जाके पदकी धूरि।
तिहिं तुम गोद खिलाय रही हो प्रेम पुलकि तनु पूरि।
ध्यावहिं जाके चरण कमलको ऋषि मुनि योगी राज।
सो उत्सुक है तोर पयोधर पान करनके काज।
जाकी महिमा बेद शारदा शेष कहत सकुचाय।
सुख उपजाय रही हो तिहि तुम प्रीति सहित हुलराय।
ऋषि पत्नी अरु सुर नारिनके सुनि २ वचन उदार।

प्रेम लिया जननी सखियन युत आनँद लहत अपार ॥३१॥

सरस सीय बरस गाँठ परम पावनी हो ।
दरस हरष विवश सकल पुरुष भामिनी हो ।
माधव मास सुख निवास जनक हियँ हुलास है
आनँद भूमि नवमि सजनि रजनि चाँदिनी हो ।
भवन भवन वरण वरण रतन चौक चारु हैं
द्वार द्वार बन्दनवार अति सुहावनी हो ।
कोकिल वैनि हरिण नयनि शरद चन्द्र आननी
नाचहिं तान लहि सुगान करहिं रागिनी हो ।
सजनि अहहि परम धन्य प्रेम दिवस आजको
प्रकटी विश्व सुखद राघवाभिरामिनी हो ॥ ३२ ॥

धन्य श्रीविदेह भूप धन्य श्रीसुनयना
श्रीसियजू प्रकट भई जिनके शुभ अयना ।
ध्यान माहिं योगी जन कोउ जाहि पावै
दम्पति लहि गोद ताहि सन्तत हुलरावै ।
ऋद्धि सिद्धि शक्ति जासु आयसु प्रति पालैं
दम्पति तिहि सकल भाँति पालैं अरु लालैं ।
अपने सब भाँति सफल जन्म प्रेम लेखै
शिव अज मन अगम मूर्ति भरि भरि दृग देखै ॥३३॥

आज उछाह अपार है श्रीअवध मँझार ।
मास रुचिर बैशाख है तिथि नवमी शुक्ल

श्रीसियजूको जन्मदिन सब उत्सव सार।
द्वार द्वार तोरण कलश मणि बन्दनवार
ध्वज पताक भूषित सकल अति चारु बजार।
जहँ तहँ मंगल गावहीं कल कोकिल बैनि
सरस वधाई बज रही अति मंगलचार।
जयति जयति सिय स्वामिनी अस भाखहिं लोग
प्रमुदित मन फूले फिरहिं नहिं देह सँभार।
उत्सव भूपति भवनको वरण्यो नहिं जाय
शेष गिराकी गम नहीं मैं तुच्छ विचार।
धन्य दिवस यह प्रेम है अति मंगल मूल
प्रकटित स्वामिनिजू भई करणी निस्तार ॥ ३४ ॥

जन्मदिन सियजू प्यारीको
रिधि सिधि शक्ति त्रिदेव वन्दिता जग उजियारीको।
यावकयुतइनविनहीयावक अरुणान्रिकचसरासिजद्युतिनिन्दक
दुस्तर जगत जलधि निस्तारक चरणन वारीको।
अंजन युक्त हरिण मद मोचन समता लहै न सफरी खंजन
आयत नील सरोज लजावन लोचन वारीको।
अपनी करुणामय चितवनितैं भूरि कृपा अघ गण मोचनितैं
आस त्रास तापत्रय भव भय भंजन वारीको।
कामबाम शतकोटि लजावन तडित हेम चम्पक सकुचावन
चन्द लजावन रूप देह द्युति आननवारी को।
घरघर प्रति उत्साह महा है आँनदसों जग पूर रहा है

बरणि सकत नहिं शेष दर्प का जीभ हमारी को।
आज सरिस उत्सव नहिं दूसर कल्पवृक्ष यह दिनहै भूपर
गान करो कल सुयश प्रेम राघव रिझवारी को ॥ ३५ ॥

श्रीरघुनन्दन जीवन जरीकी नीकी
वर्षगांठ सुख दैनी जी आज।
सिंचे सुगन्धनसों सकल बीथी और वजार
ध्वजापताका लगरहे निरखत हीयमँझार
होत हुलसैनी जी आज।
आँगनमें मणि चौक हैं सजे सुभग सब द्वार
मुक्ता वन्दनवार बर शोभा जासु निहार
लजत उडु श्रेणी जी आज।
झुंड झुंड मिलके चली मंगल सजे महान
राजभवन पैठत सकल सरस वधाये गान
करत पिकबैनी जी आज।
कनकभवन शोभा लखहु चकित न होउ निहार
सिया जन्मदिन हर्षको होय रह्यो दरबार
नचत मृगनयनी जी आज।
मणि सिंहासन पर लसहि श्रीरघुनन्दन सीय
अनुपम शोभा निरखके मन्मथ रातिके हीय
होत सकुचैनी जी आज।
मन्द हासकी फासमें फसै न सुरझै सांय
बंक विलोकनिके लगे घाव करेजे होय

अहाहिं दृग पैनी जी आज ।
सुनहु प्रेम चातक करहु अँखियाँ युगल निहार
सजल जलद दामिनि वरणि जोरी रुचिर निहार
मोद उपजैनी जी आज ॥ ३६ ॥

सुन्दर सालगिरह है आज सुहाई श्रीस्वामिनी सियाकी ।
शुभ वैशाख मास सुखकारी पावन नौमी तिथि उजियारी
हिय आनन्द बढावन हारी सफल करणि जन अभिलाषाकी ।
पुर बिच मंगल सजे महान घर घर होत बधाये गान
शोभा मुखसों करै बखान ऐसी नाहिन बुद्धि गिराकी ।
राजभवनमें हर्ष अपार सजि सुन्दर नखशिख शृङ्गार
बैठे हैं दरबार मँझार श्रीसियराम सींव शोभाकी ।
सोहैं अंग गौर अरु श्याम मोहैं निरखि विपुल रति काम
चितवत मोल लेत बिन दाम बलिहारी या सुन्दरताकी ।
सुस्वर करत सखीजन गान बिच बिच भरहिं मनोहर तान
नाचत सहित ताल वन्धान निंदरहि चंचलता चपलाकी ।
धरि धरि भेट अनेक प्रकार नृपगण पुरजन करहिं जुहार
सुरगण सुमनावली अपार बरसहिं पारिजात लतिकाकी ।
भूसुर वर याचक समुदाय अभिमत दान निछावर पाय
उचरत जय हो सिय रघुराय प्रेमी कमल प्रभा सविताकी ।
दम्पति प्रेम भक्ति वरदान यदि चाहत है मंगलखान
कर तू प्रेम बधाई गान श्रीरघुनन्दन प्राणप्रियाकी ॥३७॥

साल गिरह श्रीजनकललीकी सरस बधाई आज

अनुपम रंगरली ।
बरष पूजि पुनि नजर सबनकी लई आम दरबारमें
दान निछावर देय किये द्विज याचक पूरणकाम । अनु०
रैन भई तब केलिकुंज बिच गवने आनँदकंद ये
अगवानी करि सखी लै गई पगपाँवडे बिछाय । अनु०
केलिभवन सज रह्यो विविध मणि भाड और फानूसतें
रत्न दीप झलमलहिं फैल रहि आभा रंगबिरंग । अनु०
विलसत रत्न वितान मनोहर मुक्ता झालर झूलहीं
तिहिं के मध्य रत्न सिंहासन मनहुँ अपर दिननाथ । अनु०
श्रीसियराम बिराजे तापर रति रतिनाथ लुभावने
ठाढी सखियां चहुँदिशि चामर छत्र व्यजन लहि हाथ । अनु०
गौरश्याम तन अति ललाम लोकाभिराम छविधाम हैं
झीन बसन वर नख शिख भूषण भूषित युगल शरीर । अनु०
बडभागिनि दम्पति अनुरागिनि उमँगभरी सब सहचरी
छबिगुण आगरि करन लगी सब सरस बधाये गान । अनु०
साज बजावहिं केउ सखि नाचहिं भाव दिखाय रिझावहीं
राग और लय ताल अनुहरत उघटत तान तरंग । अनु०
प्रेम सम्मिलित गीत श्रवण करि करहिं प्रशंसा दम्पती
सादर सबहिं मनोवांछित भर पूर निछावर देहिं । अनु०
मधुर मधुर हँसि बात करत दोउ करत सुछबि रस पान हैं
भये मत्त अलसाने पैंने युगल कटीले नैन । अनु०
अटकि अटकि उचरत कल बैना उठि आई रोमावली
रोकि हर्ष जल छवि निहारि सब सखिजन भयउ निहाल । अ०

चन्द्रकला तब कहेउ मधुर हँसि गई याम युग यामिनी
शयन करहु सुकुमार मनोहर रसिकन जीवन प्राण। अनु०
हंस द्विरद् गति गामी दोऊ सुनत बचन मन भावने
धरि भुज अंस सप्रेम सिधारे शयनभवनके माहिं ॥ १८ ॥

आज वर्षगांठ तोरी प्राणवल्लभाकी है।
देखिये कुँवर रघुनाथ यह सर्व प्रजा
कैसी परमानँदके रस माहिं छाकी है।
सब ही के आँगनमें पूरे हैं रुचिर चौक
शिखरन पर शोभा कलश ध्वजाकी है।
मंगल कलश द्वार सोहत बन्दनवार
देखे छवि थिथकत मति शारदाकी है।
नाचत गावत लोग मोदभरे जहाँ तहाँ
सुरति न गेहकी न देहकी दशाकी है।
सोही सोही देत हैं निछावरमें लोग सब
याचक करत अभिलाषा हिय जाकी है।
रावरे हू गूढ हर्ष जानैं सो ही जाकी मति
नेह सुधा छाकी लोक सुखतैं बिबाकी है।
आजकी खुशीके माहिं याचत हूँ नाथसों मैं
रावरी प्रशंसा अति दान वीरताकी है।
लीजे अपनाय मोहि कीजिये सनाथ बेग
दीजे निज प्रेम भक्ति सीमा जो कृपाकी है
॥ १९ ॥

गजलैं ।

अली कनक कंजकी कली सी लली सुनयनाने आज पाई
गली गली हर बजार भवनस्थलीमें है बज रही बधाई ।
सुवृत्त मंगल कलश व पत्रावलीसे हैं सर्व द्वार भूषित
विविध ध्वजा और केतुओंसे अनूप नगरी सकल है छाई ।
विमान अपने बना बना कर गगन में ब्रह्मादि देव आ कर
हैं कर रहे पुष्प वृष्टि जय जय बजा रहे दुन्दुभी सुहाई ।
खुशीके अन्दर बसन कनक मणि दिये हैं नरपतिने याचकोंको
धनद से बन कर वे घर हैं जाते नृपतिकी करते हुए बड़ाई ।
नगर निवासी हैं नृत्य करते सप्रेम गाते हुए विचरते
हैं छक रहे सुख सुधाके मदसे हुई है सब ही के मनकी भाई
॥ ४० ॥

सुनयनाजी लिये अपनी सुताको गोदके अन्दर
यही हैं चिन्तवन करती परम आनन्दमें भर कर ।
अलौकिक कान्ति इस कन्याकी है अनुपम है सुन्दरता
अनोखे हैं सभी अवयव परम माधुर्य है तन पर ।
सुनी देखी न ऐसी बालिका अद्भुत किसीने भी
है इसके रूपकी चर्चा अखिल संसारके भीतर ।
महा मुनि जन भी दर्शन करके इसको सर भुकाते हैं
चरण छूकर मुदित कहते हैं जय जय हो के गद्गद स्वर ।
भरा रहता है आँगन दर्शनागत साधु पुर जनसे
विमानोंके वरूथोंसे ढका रहता है सब अम्बर ।
ये कौतुक देखनेसे साफ ही अनुमान होता है

है जन आह्लादिनी सर्वेश्वरी यह भक्त हित तत्पर।
ये है मम भाग्यकी महिमा नहीं इसकी कृपाकी है
जो बेटी बन के लेटी है अहो यों गोदके अन्दर।
समझ कर मात मनकी गति ललीने मुसकरा कर कुछ
दिखाई बाल चेष्टा करके चंचल लघु ललित पद कर।
जिसे अवलोकते ही दब गया ऐश्वर्य रस फौरन
उमँग उट्ठा सुनयना चित्त में वात्सल्य रसका सर।
उठा कर प्रेम जननीने त्वरित चूमा लली मुखको
किया मुसकान पर तन मन व धन सर्वस्व न्योछावर ४१

सखीरी आजका वासर परम आनन्ददाई है
अवधपुरमें खुशीकी बज रही घर घर बधाई है।
सकल द्वारों पै बन्दनवार शोभित मोतियोंकी है
सकल नगरी ध्वजाओं और पताकाओंसे छाई है।
अजिरमें सबने पूरे चौक हैं मुक्ता व मणियोंके
धरे मंगल कलश अवली सुवृक्षोंकी लगाई है।
नगरवासी सकल नर नारि परमानन्दके वश हैं
सुरत निज देहकी और गेहकी सबने भुलाई है।
ये शोभा देखनेसे साफ हमको ज्ञात होता है
खुशी श्रीरामके शुभ जन्मदिनसे भी सवाई है।
न हो क्यों प्रेम है शुभ जन्मदिन यह उन सियाजीका
जिन्हें श्रीरामकी प्राणेश्वरी वेदोंने गाई है ॥ ४२ ॥

शुभ सालगिरह है प्यारीकी सियजू मिथिलेश दुलारी की

रघुपति मुख चन्द्र चकोरी की जन ताप नशावन हारी की।
गज मुक्ता वन्दनवार भली झलकैं ज्यों तारोंकी अवली
हैं चौक अजिरमें द्वारों पर शोभा है मंगल भारी की।
सब जगह खुशी अति छाई है बजती हर द्वार बधाई है।
गाते हैं मिलकर लोग सकल कल कीर्ति जगत् उजियारी की।
चातक उड उड कर जाते हैं केकी भी पंख फुलाते हैं
नभमें घन माला ज्यों छाई यह धूप धूमकी तारीकी।
दरबार खुशीका शोभन तर होता है महलोंके अन्दर
छबि देखो मणि सिंहासन पर रघुनन्दन सिय सुकुमारी की।
घनश्याम मनोहर रघुनन्दन। सियजू बहु दामिनि द्युति निदरन
इनके आगे क्या मनसिज है क्या गति है रति बेचारी की।
आपसमें गलबैयां देकर हैं पान खिलाते सिय रघुबर
मनुहार परस्पर करते हैं बलिहारी इस मनुहारीकी।
ललना बहु वाद्य बजाती हैं नचती हैं भाव बताती हैं
गाती हैं और दिखाती हैं मृदु आलापोंमें वारी की।
यह धन्य सखी सब सेवक जन है दम्पति सेवामें जो मगन
है प्रेम दयाकी जिन पै नजर श्रीसियजू जन रखवारी की ४२

महफिल का क्या सजाव है कैसा सहन बनाव है।
मरकत कनकका है भवन नाना सुरत्नमय सहन
आँगनमें मणिजड़ाव है महफिलका क्या सजाव है।
शीतल मलय सलिल वहल एला मिलित गुलाब जल
इसका हुआ सिंचाव है महफ़िलका क्या सजाव है।

मखमलका फर्श है बिछा घमले लगे हैं जा बजा
गुलदस्तोंका जमाव है महफिलका क्या सजाव है।
फानूसोंकी क़तारमें रत्नोंके दिव्य दीप हैं
इनका सु झलमलाव है महफिलका क्या सजाव है।
इनकी बहुत से रंगकी फैली हुई है रोशनी
तमका निपट अभाव है महफिलका क्या सजाव है।
सजकर सिंगार सहचरी बाँधे क़तार है खड़ी
गानेका सबको चाव है महफिलका क्या सजाव है।
ज्यों हो चमकती चंचला क्रमसे त्यों एक एक का
नचनेमें आवजाव है महफिलका क्या सजाव है।
करती है गान तान ले हर एक आनबानसे
कैसा दिखाना भाव है महफिलका क्या सजाव है।
सारंगियोंका नाद है तबले की बर अवाज है
नूपुरका झुंझुनाव है महफिलका क्या सजाव है।
जैसे हो भानु ही उगा ऐसा महार्घ मंचका
देखोरी जगमगाव है महफिलका क्या सजाव है।
बैठे हैं इस पै पिय प्रिया आली हर एककी दृष्टिका
इनकी तरफ झुकाव है महफिलका क्या सजाव है।
लज्जित हो इनकी कान्तिसे मरकत छुपा है खानमें
खाता सुवर्ण ताव है महफिलका क्या सजाव है।
नखसे शिखा तलक अहा दोनोंके देह पर हुआ
शोभाका क्या निभाव है महफिलका क्या सजाव है।
दोनोंके अंग अंगसे आभा सरित्‌का देखिये

जारी विमल बहाव है महफिलका क्या सजाव है।
देखे जो इनको एक छिन हों वो इन्हींका मोल बिन
छविका भी क्या प्रभाव है महफिलका क्या सजाव है।
छिन छिनमें इनके नैनका आपसमें हो रहा अहा
कैसा सखी खिंचाव है महफिलका क्या सजाव है।
जीमें है देखने की पर देखें नहीं ये दृष्टि भर
लज्जाका ये दबाव है महफिलका क्या सजाव है।
हँसते हुए हर एकसे करते हैं बात चीत ये
कैसा सरस स्वभाव है महफिलका क्या सजाव है।
जीवनका फल मिला उन्हें इनके चरण सरोजमें
जिनका हुआ लगाव है महफिलका क्या सजाव है।
प्यारी की बर्षगाँठकी प्यारेके दिलमें है खुशी
सुखका नहीं समाव है महफिलका क्या सजाव है।
ऐसी खुशीमें माँग कर ले ले तू इनसे भक्ति वर
तेरा भी प्रेम दाव है महफिलका क्या सजाव है ॥४४॥

माधुर्य दम्पतीका दृगोंसे निहारिये
तस्वीर इनकी अपने हृदय पर उतारिये।
बैठे हैं किस अदासे विमल रत्न मंच पर
रति काम कोटि इनकी रुचिरता पै वारिये।
यह दृग कहाँ सरोज कहाँ मुख कहाँ शशी
क्या साम्य इनका उनका हृदयमें बिचारिये।
दोनों हैं मत्त रूप सुधारसके पानसे

चल करके इन के वस्त्र विभूषण सँवारिये ।
दरवारका समा ये प्रिया वर्षगाँठका
रखिये हृदयमें प्रेम न हरगिज विसारिये ॥४५॥

सियाजीका जनमादिन आपको रघुबर मुबारक हो
खुशी सब उत्सवोंसे आज है बढ कर मुबारक हो ।
सुमंगल साज सब साजे हुए हैं श्रीअवध बासी
बधाये बज रहे हैं सोहने घर घर मुबारक हो ।
युगल छबि मद छकी सब सहचरी कल गान करती हैं
परम आनन्दके दरबारका अवसर मुबारक हो ।
बिना याचे हुए ही मिल रही है जो परम अभिमत
चतुर याचक समूहोंको ये न्योछावर मुबारक हो ।
रसिक केकी कुलोंको प्रेम ये घन दामिनी बरणी
हृदय अभिरामिनी जोडी परम सुन्दर मुबारक हो ४६

पलना लालिहि झुलावत रानी
दृग भरि शोभा लखहु सयानी ।
हेम बरण तनु सुन्दर सोहै
अनुपम छबि लखि त्रिभुवन मोहै ।
झीन वसन तन वाल विभूषण
भाल दिठोना लसत अदूषण ।
नासा श्रवण कपोल सुहावन
आनन शरद मयंक लजावन ।
चिकुराली कारी घुघरारी

लगत ललाट छुटी अति प्यारी ।
अरुण अधर भृकुटी अति सोहनि
नयन विशाल कृपा मय जोहनि ।
लघु लघु लोहित पद अरविन्दा
भ्रमत प्रेम चित लुब्ध मिलिन्दा ॥ ४७ ॥

देखो ४ पलना बिच सिय सोहत है मन मोहत है
सानन्द सुनयना जोहत है निज कृत फल पावत है ।
बिलोकनेको ललीरूप दृग लपकती हैं
शरीर कान्तिसे लेकिन त्वरित झपकती हैं ।
निहारिये तो सखी मूर्ति क्या अलौकिक है
हरेक अंगसे शोभा महा टपकती है । देखो ४—।
ये वस्तु वो है जिसे अज महेश ध्याते हैं
पुराण वेद भी जिसका न भेद पाते हैं ।
महान धन्य जनक और श्रीसुनयना हैं
सप्रेम इन को लडाते हैं और झुलाते हैं ।
देखो ४ पलना बिच सिय सोहत है ॥ ४८ ॥

नैणा माँय बसी री हे अलबेली या छवि परम अनूप ।
साल गिरहकी आज खुशीको होय रह्यो दरबार
रतन सिंहासण ऊपर बैठ्या नवल युगल सरकार ।
सुबरण बरणी सियजू प्यारी रघुवर मरकत श्याम
शोभा याँकी देखर मोहे कोटि कोटि रति काम ।
अखियाँ छै वडरी कजरारी मुखड़ो चन्द समान

जुलफ्या नागिन सी गजबीली भृकुटी मदन कमान।
दम्पति रूप समान प्रिया कै लाज मनोज समानं
लाज मनोज भरी मन मोहै चितवन मृदु मुसकान।
भाग सुहाग भरी सब सखियाँ तन मन रही लुभाय
मगन हुई अति ही मन बांछित प्रेम निछावर पाय॥४६॥

श्रीचन्द्रकला जन्मोत्सव पदः—

भवन भवनमें परम सुहाई बजत बधाई आज
अति प्रसन्न मन सकल नारि नर सजत सुमंगल साज।
अति पावन वैशाख मास सित चतुर्दशी शुभ बार
जन्म दिवस श्रीचन्द्रकलाजूको सब सुखको सार।
आँगन आँगन चौक मणिनके द्वारन बन्दनवार
अनुपम मंगलकलश लसत हैं वृक्ष अनेक प्रकार।
लगी बजारन ध्वजा पताका गलिन सुगन्ध सिंचाव
अति मंगलमय पुरको मुखसों कह्यो न जाय बनाव।
बाजन विविध बजावहिं नाचहिं नगर नारि नर वृन्द
गान करहिं लय ताल स्वरन युत पूरि रह्यो आनन्द।
लोग कहत हैं धन्य अहहिं श्रीचन्द्रभानु महाराज
धनि श्रीचन्द्रप्रभाजू रानी सुकृतिनकी शिरताज।
इन दोउन सो बडभागी कोउ अहहिं जगत् बिच नाहिं
चन्द्रकला सिय राम वल्लभा प्रकटी जिन गृह माहिं।
परिकर सहित राम सिय हिय नहिं आनँद आज समाय
विथकत शारद शेष बखानत प्रेम कहै किमि गाय॥५०॥

आज परम आनन्द वधाई राजभवनमें बाजत है
कल रव बजत झाँझ सहनाई दुन्दुभि घन इव गाजत है।
मुक्ता वन्दनवार द्वार पर अनुपम मंगल कलश धरे
सफल सपुष्प वृक्ष मंगलमय सोहत हैं अति हरेभरे।
मणिमय चौक अजिर बिच जिनकी शोभा नाहिन जात कही
ध्वजा पताका प्रासादनके शिखरन पै फहराय रही।
अति आनन्द राम सिय हियमें सजि शृंङ्गार मनोहारी
बैठे मणिमय सिंहासन पर घन दामिनि द्युति पिय प्यारी।
खंजननयनी कोकिलवैनी विपुल सहचरी गावत हैं
नृत्य करत हैं भाव दिखावत बाजन विविध बजावत हैं।
यूथ ईश्वरी चन्द्रकलाकी सरस वधाई गान करैं
अतिशय उज्ज्वल यशको सादर प्रीति समेत बखान करैं।
तिनके पितु श्रीचन्द्र भानु महाराज धर्म्म धुर धारीकी
कीर्ति बखानत अरु सब कोऊ चन्द्रप्रभा महतारी की।
जनक नन्दिनी श्रीरघुनन्दन सुनि सुनि तिनहिं सराहत हैं
अभिमत देहिं निछावर लहि लहि सुख सागर अवगाहत हैं
यूथ ईश्वरी जन्म दिवसको शुभ दरवार निहारत हैं
हर्ष विवश व्है परिकर अपने सहज अपान विसारत हैं।
कहहिं प्रेम युत चतुर्दशी सित धन्य मास वैशाख भला
जा बिच प्रकटी युगल वल्लभा वड भागिनि श्रीचन्द्रकला ५१

खुशी चहुँ ओर छाई है, बजत घर घर वधाई है
रुचिर है मास यह पावन, सुखद वैशाख मनभावन।

चतुर्दशि शुक्ल मन हरणी, सुतिथि है भक्त हित करणी।
अहहिं यह धन्य दिवस भला, लियो अवतार चन्द्रकला।
सुमंगल लोग सब साजैं, नगरकी छवि महा छाजैं।
विविध मणि रत्न मय रूरे, अजिरमें चौक हैं पूरे।
सफल भल वृक्ष सोहत हैं, कलश शुभ चित्त मोहत हैं।
सुवन्दनवार द्वारन पै, लसत तोरण सुढारन पै।
ध्वजा फहरैं बजारन पै, धवल ऊँचे अगारन पै।
सरस स्वर लोग गावत हैं, विविध बाजे बजावत हैं।
नचत जय जय उचारत हैं, हरषि तन सुधि बिसारत हैं।
कहहिं सब लोग अस बानी, जयति चन्द्रप्रभा रानी।
जयति श्रीचन्द्रभानू जू, नहीं कोउ इन समानू जू।
अहो अस पुण्य अधिकाई, सुता यूथेश्वरी पाई।
निछावर माँहिं नर नारी, लुटावहिं सम्पदा भारी।
कही मुखसों न वह जावै, धनद हू देखि सकुचावै।
विबुध कौतुक निहारत हैं, चकित चित व्है सराहत हैं।
करत जयनाद सुखकारी, निरखि छवि प्रेम बलिहारी॥५२॥

श्रीचारुशीला जन्मोत्सव पदः—

भवन भवन माहिं बाजत बधाई है।
पावन वैशाख मास पूरण करण आस
वार ह रुचिर तिथि पूर्णिमा सुहाई है।
चारुशीलाजीको नीको जनमादिवस यह
युगल उपासिनको अति सुखदाई है।

हरी हरी सोहत वन्दनवार द्वार द्वार
मंगल कलश तरु शोभा सरसाई है।
आँगन आँगन रूरे रतनके चौक पूरे
गलिन बजारन सुगन्धकी सिंचाई है।
ठाँव ठाँव ध्वजा औ पताका फहरात नई
बरणि न जात आज नगर निकाई है।
बाजन बजावत सरस स्वर गावत हैं
नाचत मुदित नर नारि समुदाई है।
लोग कहैं शत्रुजीत राजा चन्द्रकीर्ति रानी
धन्य हैं कही न जात भाग्य की बड़ाई है।
इनके सदन माहिं सीताराम प्रीतिमूर्ति
चारुशीला देवी कन्या रूप धरि आई है।
आँनद मगन नर नारिन निछावरमें
धन मणि बसनकी झरी सी लगाई है।
याचक निकाय पाय आशिष अघाय देत
जै जै कहैं प्रेमयुत भई मनभाई है॥ ५२॥

अलि आनन्द आज अपार
जन्मदिन श्रीचारुशीलाको अहहिं सुखसार।
मास यह वैशाख पावन अभिलषित दातार
तिथि सुहावनि पूर्णिमा शुभ लग्न सुन्दर वार।
द्वार द्वारन पर दिपत है रत्न वन्दनवार
नवल केतु पताक भूषित लसहिं ललित बज़ार।

बजत है घर घर बधाई परम मंगलचार
हर्ष वश नर नारि नाचत करत जय जय कार।
मोद अति श्रीराम सिय हिय साजि शुभ दरबार
याचकन अभिमत निछावर देहिं विविध प्रकार।
कहहिं अस सब चन्द्रकीर्ति रु शत्रुजीत उदार
धन्य जिन गृह चारुशीलाजू लियो अवतार।
उमँग दशदिशितें रह्यो है हर्ष पारावार
प्रेम बर्णन करत विथकत गिरा बदन हज़ार॥ ५४॥

बधाई सोहनी बाजे, घटा ज्यों दुन्दुभी गाजे।
अहाहिं वैशाख सुखकारी, रुचिर तिथि पूर्णिमा प्यारी।
जनमदिन चारुशीलाको, दिखावत प्रेम लीलाको।
सुमंगल सब सजावत हैं, विविध बाजे बजावत हैं।
करत कल गान पिकबैनी, नचत सानन्द मृगनयनी।
बधाई लोग मिलि गावें, न फूले देहमें मावें।
मुदित जय शब्द बोलत हैं, बिपुल भंडार खोलत हैं।
बुलावत याचकन टेरी, करैं मनुहार तिन केरी।
निछावर देत मनभाई, हृदय बिच हर्ष अधिकाई।
अयाचक होय याचक जन, शुभाषित देत प्रमुदित मन।
परम आनन्दको सागर, रह्यो है पूरि जग भीतर।
न ताको पार कोउ पावै, अबुध यह प्रेम किमि गावै॥५५॥

श्री सरयू जन्मोत्सव पदः—

आज मनोहर बजत बधाई

ज्येष्ठ मास तिथि रुचिर पूर्णिमा बार योग सब अति सुखदाई।
जगपावनि सरयू सरिताकी बरस गाँठ है आज सुहाई।
अति प्रसन्न मन सकल नारि नर मुनि वर वृन्द साधु समुदाई।
हिलमिल गावत हैं कल कीरति नाचत हैं बहु वाद्य बजाई।
प्रेम समेत कहहिं श्रीसरयू जयति जयति श्रीसियरघुराई ५६

बधाई बाजत है नीकी
साल गिरह है आज सुहावनि श्रीसरयूजीकी।
ज्येष्ठ मास पूर्णिमा मनोहर परम धन्य है यह शुभ वासर
आई दिव्य धार भूतल पर पावन तटिनीकी।
भवन भवन प्रति होत शुभोत्सव श्रवणामृत है संगीतक रव
शोभा मुखसों कहि न जाय श्रीरघुबर नगरीकी।
सब नर नारि महा सुख फूले देह गेहकी सुधबुध भूले
अर्चा करत भावयुत श्रीसियराम-भावतीकी।
गावत हैं कल कीर्ति मनोहर महिमा वर्णत है गद्गद स्वर
प्रेम सहित उचरहिं जय सरयू जय सिय सियपीकी ॥५७॥

अवधमें है आनन्द अपार
जनमदिवस श्रीसरयूजीको सकल मंगलागार।
ज्येष्ठ मास पूर्णिमा धन्य है जा बिच सबसुखसार
पातक गंजनि मानसनान्दिनि जू लीन्हों अवतार।
द्वार द्वार मंगल तरु राजहि बिलसहिं बन्दनवार
अजिरन चौक पताक ध्वजातैं भूषित हैं बाजार।
उत्सव करहिं सहर्ष लोग सब साजि मंगलाचार

नाचहिं गावहिं सरस बजावहिं बाजन विविध प्रकार।
अर्चत हैं वशिष्ठ नन्दिनिको वर्णत कीर्त्ति उदार
अति आनन्दित होय प्रेमयुत उचरहि जयजयकार ५८

मंगल कोशल पुरी मँझार घर घर परमानन्द बधाई।
ज्येष्ठ मास है परम सुहावन तिथि पूर्णिमा सुजन मनभावन
ऋषि बशिष्ठ तपतें जगपावनि श्रीसरयू भूतलमें आई।
मंगल तरु वर बन्दनवार भूषित है शोभन पुर द्वार
सिंचे सुगन्धनसों बाजार आँगनमें मणि चौक पुराई।
कोकिलबैनी करहिं सुगान बाजन बाजहिं विविध बिधान
पुरजन करहिं खुशीमें दान धन मणि वसन अन्न हुलसाई।
सकल कहहिं हे मानसनंदिनि राम नयनजे हे अघ गंजनि
जय हो प्रेम अखिल जग वंदिनि तव महिमा वरणी नहिं जाई
॥ ५९ ॥

॥ गज़ल ॥

सुहावन जन्मबासर आज मानसनन्दिनीका है
परम सुखसे हृदय पंकज प्रफुल्लित सब किसीका है।
ध्वजायें लग रही हैं द्वार बन्दनवार भूषित हैं
हुआ शृङ्गार मंगल वस्तुओंसे सब पुरीका है।
शुभोत्सव आज है घर घर में श्रीसरयू जयन्तीका
गगनमें गूँजता गंभीर रव वर दुन्दुभीका है।
नगरजन साधु सब आकर के बाशिष्ठीके वर तट पर
सरस संगीत करते हैं समा अनुपम खुशीका है।

सविधि करते हैं अर्चन अति मुदित सब लोग सरयूका
अहा क्या दृश्य शोभन इस समयकी आरतीका है।
परम है धन्य पावन ज्येष्ठकी तिथि पूर्णमासी यह
हुआ अवतार जिसमें प्रेम अघ गण गंजनीका है ६०

साकेत विहारिणि श्रीसरयू सरिता जय सदा तुम्हारी हो।
अघ भंजनि मानसनन्दिनिजू तुम ही गति एक हमारी हो
उत्पत्ति तुम्हारी है अम्बे करुणामय राघव लोचनसे
जीवों पर पूर्ण दया करके भूतल पर आप पधारी हो।
ऋषि वर बशिष्ठकी कन्या हो सुख दायिनि त्रिभुवन धन्या हो
अखिलेश परात्पर विश्वम्भर श्रीसिय रघुवरकी प्यारी हो।
आये जो तुम्हारी जीव शरण उसके करती हो ताप शमन
सब पाप समूहोंको हरती करती सब विधि रखवारी हो।
जो जीव याचने आते हैं तुमसे वे अभिमत पाते हैं
कृतकृत्य महा होजाते हैं करती तुम उन्हे सुखारी हो।
जन दोष बिसारिणि दोष क्षमो अभिमत बर दायिनि यह वरदो
मन दम्पति भक्ति विभूषित हो तनु यह तव तीर बिहारी हो।
इस वक्तमें दूर रखो तो रखो पर अन्त समयमें बिछोह न हो
राखियो निज गोदमें प्रेम सहित मैं बालक तुम महतारी हो
॥ ६१ ॥

श्रीगोस्वामी तुलसीदास जन्मोत्सव पद:—

परम यह धन्य वासर है, सकल सज्जन सुखाकर है।
भलो है मास यह सावन, सुतिथि सित सप्तमी शोभन।

प्रकट यहि दिन भये नामी, श्रीतुलसीदास गोस्वामी।
सुयश जिन रामको गायो, अमृत जग माहिं बरसायो।
रच्यो रघुपति चरित मानस, जगत हित सन्त जन सरबस।
करत ही जासु शुभ दर्शन, त्वरित ही होत प्रमुदित मन।
कियेतैं जासु अवगाहन, छुटत तत्काल कलि मल घन।
प्रबल भ्रम शोक दुखकारी, मिटै संसार श्रम भारी।
पिवत जल हर्ष हिय छावै, त्वरित तिहुँ ताप मिट जावै।
स्व अरु पर रूप शुभ दरसै, सिया बर भक्ति हिय सरसै।
करै नर याहि सेवन जो, सहज फल चार पावै सो।
रच्यो जिन अस श्रीरामायन, जयति ते कवि जगत् पावन।
वनाई जग जलधि पुल सी, धरा पर धन्य सो तुलसी।
जन्यो जिन पुत्र तुलसी सो, अहहिं अति धन्य हुलसी सो।
न कबि महिमा कही जावै, बखानत बुद्धि सकुचावै।
सकल गुण खानि तुलसीको, जनम दिन आज है नीको।
सुमंगल साज सब सजिये, बधाई गान शुभ करिये।
बखानहु कीर्ति तिनकी कल, लहहु भल प्रेम नर तन फल
॥ ६२ ॥

जयति कवि गोस्वामी श्रीतुलसीदास उदार।
कवि कुल कुमुद चकोर सुधाकर
सिय रघुनन्दन परा भक्ति भंडार।
कलि जीवन निस्तारण कारण
लियो आय कवि वालमीकि अवतार।
प्रचलित बहु पाषंड प्रबल दलि

किये जगत्में रघुवर भक्ति प्रचार ।
विरच्यो रामचरितमानस शुभ
वेद शास्त्र अरु सद्ग्रन्थनको सार ।
कियो परम उपकार जगत्को
कहि नहिं आवत महिमा अपरंपार ।
श्रावण शुक्ला धन्य सप्तमी
आज जनमदिन है तिन कर सुख सार ।
उत्सव करहु कीर्ति कल गावहु
प्रेम मुदित मन उचरहु जयजयकार ॥ ६३ ॥

जयति गोस्वामी तुलसी दास ।
कविकुल कुमुद निशाकर जगहित श्रीसिय रघुवर भक्ति निवास।
भाषा रामचरित रच करके जिनने किया सुभक्ति विकास ।
साधु जनोंके स्वच्छ हृदयमें पैदा किया परम उल्लास ।
परम धार्मिकी बुद्धि जगादी दूर भगा दी यमकी त्रास ।
धन्य धन्य तिथि शुक्ल सप्तमी धन्य धन्य है श्रावण मास।
जिसमें तुलसी बनकर जगहित वालमीकि प्रकटे हैं ख़ास
॥ ६४ ॥

जय जय भक्ति प्रचारक अधम उधारक तुलसीदास गोस्वामी।
कलिमें लखि बहु जीव विहाल हिय धरि करुणा परम कृपाल
भंजन हेतु सकल जंजाल प्रकटित भये आदि कवि नामी।
विरच्यो रामचरित मानस सर सुजन सुखप्रद परम मनोहर
मज्जत जिहि बिच अति मलिनहु नर सत्वर होत भक्ति पथगामी।

कलियुग ग्रीष्म ताप कहँ पाई भक्ति लता मानहुँ कुम्हिलाई
रघुपति चरितामृत वर्षातैं पुनि सब जीवनके हिय जामी।
तुमरी महिमा प्रेम अपार वरणी जाय न वदन हजार
परहित निरत कृपा आगार तुमको बारम्बार नमामी ॥६५॥

जयति जयति तुलसी गोस्वामी
श्रीसिय राम भक्त कवि नामी।
वालमीकि अवतार विश्वहित
लोकप्रसिद्ध जयति जगवन्दित ।
कलि जीवन निस्तारण कारण
जिन विरच्यो भाषा रामायण।
श्रुति पुराण सब सद्ग्रन्थनको
सार रूप, सरवस सन्तनको।
श्रीसियराम भक्ति सस्यनको
सावन घन दायक जीवनको।
सज्जन कुमुद चकोर निशाकर
जिन विरच्यो अस रामचरित वर।
कलि की प्रवल कुचाल भगाई
मनुजन हिय हरिभक्ति जगाई ।
कीन्ह जगत् कर अति उपकारा
विश्व विदित यश जासु अपारा।
महिमा मुखतैं कहि नहिं आवत
हिय बिच अधिक अधिक अधिकावत।

मनन करनतें जिनकी कृतिको
पावत प्रेम सिया रघुपतिको ॥ ६६ ॥

श्रीहनुमज्जन्मोत्सव पदः—

दिवस यह सजनी परम अनूप
सुन्दर सुवन अंजनी जायो आनँद मंगल रूप।
पावन कार्तिक मास मनोहर असित लसत वर पाष
चतुर्दशी तिथि वार लग्न भल पूरक मनोभिलाष।
सोहत विमल सलिल सर सरिता अति निर्म्मल आकास
मानहुँ त्रिभुवनमें विचरत है तनु धरि परम हुलास।
श्रीसिय राम भक्त जन हियमें भयो परम आनन्द
तिनकी रक्षा हेतु प्रकट भये हरण सकल दुख द्वन्द।
बाल दिवाकर वरण अरुण मुख तनु द्युति हाटक रंग
चितवत ही हर लेत हृदय हाठि सकल सुलक्षण अंग।
दर्शन करत केसरी सुत के सुर मुनि सिद्ध प्रधान
नयन सफल करि कहत प्रेम भरि जयति जयति हनुमान
॥ ६७ ॥

अंजनी जायो है सुत सकल सुमंगल मूल।
कातिक मास चतुर्दशि कृष्णा
वार योग ग्रह सकल अहहि अनुकूल।
हर्ष भयो सुर सन्तन के हिय
दुर्जन निशिचर निकर हिये भय शूल।
कनक वरण तनु पिंग नयन मुख

अरुण, वाल रवि हू नहिं जिहिं समतूल ।
जय जय करत सप्रेम देव सब
हनत दुन्दुभी हर्षित वर्षत फूल ॥६८॥

सुयश जग छायोरी अंजनि तोर ।
जायो सुवन भुवन भूषण तैं खलगण कुमुद विभाकर भोर ।
पिंग नयन युग अरुण चरण मुख दामिनि द्युतितनु कुलिश कठोर
सन्तन सुखद अखिल भय भंजन दलन सगर्व निशाचर घोर
सब प्रकार रघुनन्दन जन हित रच्छा तत्पर ठौर कुठौर ।
इनके ही वल प्रेम उपासक निर्भय विचरहिं चारौं ओर ६६

जनमदिन आज है नीको, सुजन हित मारुतीजीको ।
सुमंगल साज साजि आवो, बधाई सोहिलो गावो ।
हरषि हिय नृत्य मिलि कीजे, जनमको फल परम लीजे ।
शुभोत्सव माहिं तुम पागी, बनो अति पुण्यके भागी ।
कृपा श्रीराम सिय करिहैं, तुमहिं निज दास शुचि गनिहैं ।
सुहावनि भक्ति निज देहैं, कबहु नहिं प्रेम बिलगैहैं ॥ ७० ॥

जग जीवो री अंजनि तेरो लला ।
जबलों धारण किये रहै निज मस्तक पै अहिपति अचला ।
कल्पलता तव कूँष धन्य है जा बिच ऐसो सुफल फला ।
तनु अनुपम बाढो प्रतिदिन जिमि, शुक्लपच्छकी चन्द्रकला
रघुबर भक्त शालि वृन्दन हित प्रेम अहहिं यह मेघ भला ॥७१॥

अलि आवो वधैया गावोरी ।

वर्ष गाँठ है पवन सुवनकी हिय विच हर्ष बढावो री।
नृत्य करो कल गान सुनावो बाजन विविध बजावो री।
कनक वरणि मन हरणी मूरति अपने हिये बसावो री।
इनकी कृपा कटाच्छ तनक लहि जीवन सफल बनावो री।
अनायास लहि प्रेम भक्तिवर पिय प्यारी मन भावोरी ॥७२॥

आवो आवोरी सहेली गावैं जन्मवधाई।
कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी है वर्ष गाँठ अंजनी सुवनकी
रामउपासक जीवन धन है यह तिथि परम सुहाई।
प्राण प्रिय साँचे सेवककी वर्षगाँठ के सुखसों फूले
भूले हैं तनकी सुधि बुधि सी श्रीसियजू रघुराई।
अंजनि नन्दन जन्मवधाई गाय नाँचि दम्पति के सम्मुख
आज रिझाय माँग लीजे शुभ प्रेम भक्ति मनभाई ॥७३॥

अवध आनन्द

मास कातिक कृष्णा पच्छ चतुर्दशी तिथि अति सुहावनि
वर्ष गाँठ समीर सुतकी हरणि सब दुख द्वन्द।
ध्वज पताक बजार विलसत जिनहिं चितवत हीय हुलसत
द्वार द्वारन रत्न वन्दनवार लसत अमंद।
मुदित मन श्रीजानकीजू प्राण प्रियतम प्राणकी अति
मुदित दशरथनन्द शोभा वृन्द आनँद कन्द।
निरखि शोभा नयन भरि भरि जन्म अपने सफल करि करि
कहत जय जय प्रेमयुत वर्षत सुमन सुरवृन्द ॥७४॥

आज अवध आनन्द अपार।

कातिक मास चतुर्दशि कृष्णा योग लग्न शुभ मंगलवार
वर्षगाँठ अंजनी सुवनकी राम उपासिनको सुखसार ।
सिंची सुगंधनसों सब बीथी द्वारन मुक्ता बन्दनवार ।
तोरण केतु पताक रुचिर तैं भूषित हैं अति चारु बजार ।
गावत गीत कोकिलाबैंनी घर घर प्रति अति मंगलचार
मंगल तरु वर कनक कलशतैं शोभित है अति राज द्वार।
अभ्यन्तरकी सुषमा जैसी तस कहि सकत न शेष हजार।
कनक भवन सुख भवन मनोहर मध्य खुशी को है दरबार।
राजत सिंहासन पर राघव सिया युगल छबि पारावार ।
हर्ष विवश अलि नाचत गावत नाहिन नेकहु देह सँभार।
याचक जन सब आज लहत हैं अभिमत न्योछावर उपहार।
अविरल प्रेम भक्ति यहिं अवसर चलि माँगहु जानि चूकहु वार।
॥७५॥

हनुमत जन्मवधाई आज सुहाई घर घर बजत भली है ।
सोहत ध्वजन युक्त बाजार, द्वारन पै मणि बन्दनवार
घर घर होत मंगलाचार, नाना इत्रन सिंची गली है ।
पुर नर नारि महा प्रमुदित मन, करत निछावर भूषण मणि गण
गावत नचत ललित ललना गण, विकसी हृदय सरोज कली है
नाशनि भ्रम युत विषम विटपना, प्रकटनि प्रेमामृतकी तृष्णा
कातिक चतुर्दशी यह कृष्णा, भक्तनको विश्रामथली है ।
अति गद्गद स्वर तैं मृगनयनी, कहत परस्पर कोकिलबैनी
दम्पति भक्तन कहँ यह रजनी कामद लतिका प्रेम फली है ७६

गजल

मनोहर जन्मवासर आज है श्रीवायुनन्दनका ।
रसिक जन प्राण संजीवन अखिल दुख पुंज भंजन का ।
असित है पक्ष यह आनन्द दायक आज तिथि चौदस
परम पावन है कातिक मास पूरक काम जन मनका ।
सुमंगलसाज सज लीजै सकल अति मोदमें भर कर
सुयश कल गान करिये सर्व सज्जन चित्त रंजनका ।
ये उत्सव प्रेम वर्धक है परम आनन्द वर्षक है
सकल अघ पुंज धर्षक है प्रभंजक विश्व बन्धनका ।
महोत्सव आज करने से दया से आर्द्र मन होगा
सियाजी के सहित श्रीराम पंकज दल विलोचनका ।
चरण कमलोंकी देंगे भक्ति दम्पति तुझको खुश होकर
अलौकिक प्रेम फल इससे मिलेगा दिव्य नर तनका ७७
पवनसुवन अंजनीके नन्दनका आज शोभन है जन्मवासर
त्रिलोक रंजन विपत् विभंजन व भक्त जीवन सकल सुखाकर
महान आनन्द है नगरमें लगी ध्वजायें डगर डगरमें
बजार है सब सुगन्ध सिंचित लगे हैं मंगलके चारु तरुवर ।
बधाई घर घरमें बज रही है सुगान ललनायें कर रही हैं
जहाँ तहाँ नच रहे हैं नागर प्रहर्षवश देह सुधि बिसरकर ।
जगह जगह लोग कह रहे हैं सदा हो जय केशरी सुवनकी
न इनसा कोई है बुद्धि विद्या व बल क्षमादिक गुणोंका सागर ।
ये वायुनन्दन प्रखर हुताशन असाधु दानव गहन दहन हैं

इन्हींका बल पाके हैं निडर मुनि व भक्त सज्जन सकल धरा पर।
श्रीरामका प्रेमपात्र इनसा हुआ न कोई न है न होगा
कहाँ तलक हम करें बडाई ऋणी हैं इनके सिया व रघुवर।
जनमदिवसकी खुशी मनावो समाज सजकर सुकीर्ति गावो
प्रसन्न होंगे श्रीराम देंगे तुम्हें वो निज प्रेम भक्तिका वर ७८

हनुमान सुजान सुनो तुमसो कोउ है बल बुद्धि निधान नहीं
तव तेज प्रतापको हे रणधीर सकै विधिहू तो बखान नहीं।
तुम बाल समय यह खेल कियो, फल जानके भानुहिं ग्रास कियो
सब देवन यों भय मानि कह्यो, इनसो कोउ विक्रमवान नहीं।
पढिवे कह भानुसों आप गये, नभ मारग में तिन संग रहे
उलटे पदकी गतिके आगे, निकस्यो दिननायक यान नहीं।
सुग्रीवको संकट दूर कियो, तिहि वानरराज दिवाय दियो
शत योजन सागरको समझे, तुम गोखुर चिन्ह समान नहीं।
अति दुर्गम लंक प्रवेश कियो, सिय को लखि धीरज ताहि दियो
वह बाग अशोक उजार कियो, चितयो जिहि देवप्रधान नहीं।
हति राक्षस लंक जराय दई, अपनी तहँ धाक जमाय दई
सुनि हाँक भये रजनीचर यों, तनु माहिं रहे जनु प्राण नहीं।
तुम रामहिं सीय सँदेश कह्यो तिन डूबत मानहुँ थाह लह्यो।
भये राम कृतज्ञ स्वयं ऋणिया, अस पायो कोउ सम्मान नहीं
जब लक्ष्मणके हिय शक्ति लगी, तब द्रोण उखारिके लाये तुम्हीं
तुम्हरे बल और पराक्रमको, अहिराज सकै करि गान नहीं।
रघुनाथ सिया घन दामिनिके, तुम चातक हो सुत अंजनिके

तुम्हरी सम दम्पति नाम सुधा, कियो काहु त्रिलोकमें पान नहीं
रुज आधि पिशाच पिशाचिनिके, तुम काल हो शाकिनि डाकिनिके
तब ही लगि संकट है जब लों, कोउ लै तुम्हरो अभिधान नहीं।
तुम प्राण हो राम उपासिनके, तुम ही जननी पितु हो तिनके
गुरु रक्षक बन्धु सखा तुम हो, तुम सो हितकारक आन नहीं।
तुम जैसे समर्थ सुरक्षकको, अपने हियसों बिसराय दियो
तिहि कारण हों तिहुँ ताप तयो, कोउ मोसम मन्द अयान नहीं
अपराध निरन्तर मोतैं बने, धरिये हियमें जनि ते अपने
गुणगाहक हो जन दोषनको, तुम्हरे मन भीतर स्थान नहीं।
करुणा कर कष्ट समस्त हरो, सिय राम समेत हिये विहरो
जन प्रेमकी आसहिं पूर्ण करो, तुम सो कोउ दानी महान नहीं७९

श्रीरामानन्द जन्मोत्सव पद:—

पुण्यसदन द्विजराज भवन बिच बाजत सरस बधाई जी
सुन्दर सुवन सुशीला जायो त्रिभुवन आनँददाई जी।
माघ मास शुभ असित सप्तमी तिथि है परम सुहाई जी
योग लग्न ग्रह बार नखत शुभ ऋतु भल वरणि न जाई जी।
मंगल कलश द्वार पर राजत बन्दनवार बँधाई जी
चारु अजिर बिच चौक भवनकी सुषमा कही न जाई जी
नाचत गावत लोग बजावत डफ ढोलक सहनाई जी
हर्ष विवश व्है मगन सबन निज तनु सुधबुध बिसराई जी।
भानु उदय जिमि कमलनकी तिमि सन्तन दशा लखाई जी
जय जय कार करत सब जहँ तहँ भई प्रेम मन भाई जी॥ ८०॥

दिवस आजको मंगल कारी ।
माघ मास तिथि असित सप्तमी
सब विधि सुख उपजावनहारी ।
प्रकटे हरि आचार्यशिरोमणि
श्रियुत रामानँद बपु धारी ।
खंडन करि पाषंड अनेकन
रघुपति भक्ति भुवन विस्तारी ।
खल मुख मलिन किये अरु हरि पद
नलिन अलिन दीन्हो सुख भारी ।
कीन्ह अविद्या दूर सकल तिन
दूर करत जिमि तिमिर तमारी ।
सुखी किये सब साधु करत जिमि
विकसित कुमुद शिशिरकरधारी ।
जन्ममहोत्सव तिनको रचिये
गाइय कीर्ति जगत उजियारी ।
प्रेम कृपा यातें अति करि हैं
श्रीरघुनन्दन जनकदुलारी ॥ ८१ ॥

प्रकटे श्रीरामानन्द आज़, संसार जलधि तारक जहाज
धनि असित सप्तमी माघ मास, जामें प्रकटे हरि सुख निवास।
जिन सकल जगत उपकार कीन्ह, श्रीरामभक्ति पथ शोध दीन्ह
कलि ग्राह ग्रासित बहु जीव वृन्द, लीन्हो बचायजिमिहरि गयन्द
तिनको जन्मोत्सव सुख निधान, मंगल साजिये नाना विधान

चरितामृत है पावन महान, निज श्रुतिपुट भरि भरि करहु पान।
अघ भंजन तिनको सुखद नाम, सानन्द जपहु विश्राम धाम
हरि भक्ति वढावनि करनि क्षेम, गाइय तिनकी कल कीर्ति प्रेम
॥ ८२ ॥

प्रकट भये स्वामी श्रीरामानन्द
माघ मास तिथि असित सप्तमी सब ग्रह सुखद अमंद।
जीवन पर करि दया मही पर आये हरि स्वच्छन्द।
मुदित जीव चर अचर दशहुँ दिशि पूरि रह्यो आनन्द।
भक्त चकोर वृन्द हितकारी उदित भयो है चन्द।
पति युत धन्य सुशीला जाके तनय भये सुख कन्द।
सादर दर्शन पाय धन्य भये पुरजन परिजन वृन्द।
वर्षहिं सुमन देव द्विज उचरैं ऊमर होहु वलन्द।
पूरि रह्यो सुख प्रेम धरणि विच दूर भये दुख द्वन्द ॥ ८३॥

इति श्रीसीतारामप्रेमप्रवाह द्वितीयतरंग समाप्त।

॥ श्रीः ॥

श्रीसद्गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

श्रीसीतारामप्रेमप्रवाह

❀ तृतीय तरंग ❀

दो०—ग्रीष्मोत्सवके पद ललित नौका पद अभिराम ।
लिखत तृतीय तरंगमें करि दम्पतिहिं प्रणाम ॥

पुष्पशृङ्गारके पद०—

अलि अवलोक ग्रीष्मविहार ।
रुचिर खसबँगला बन्यो छिरकत निरन्तर मलय-योषित्
सुरभि सलिल गुलाब केतक गहे करन फँवार ।
मृदु सुगन्धित सुमन—विरचित सुभग शय्या मध्य सोहत
जानकी रघुवंश—भूषण सुछवि—पारावार ।
नवल रसिक उमंग भरि भरि रूपजल झष चखनि करि करि
हीय हरि हरि दोउ परस्पर करत सुमन सिंगार ।
रचि सुमन सित कंचुकी धारण करावत रहि गये कर
बिसर गये अपान पिय लखि छवि उरोज अपार ।
लसत हैं घनसार मिश्रित चारु चन्दन लिप्त तनुयुग
अमिय सिंचित पीत नील सरोजकी अनुहार ।
लखत दम्पति छवि सखीजन लहत लोचन फल अनूपम
प्रेम अतिशय मुदित मन बलिहार बारम्बार ॥१॥

राजत करि सुमनश्रृङ्गार
श्रीजनकनृपनन्दिनी श्रीअवध राजकुमार ।
सुमनबँगला रुचिर सोहत लखत चितवनहार मोहत
चलत शिशिर गुलाबजलके रुचिर अमित फँवार ।
सखी चन्द्रकलादि ठाढ़ी सुमन विरचित व्यजन लीन्हे
लखत दम्पति छवि अलौकिक मुदित करत बयार ।
पिवत हैं दम्पति परस्पर छवि सुधा दृग पुटन भरि भरि
प्रेम धरि अति धैर्य यह शोभा अनूप निहार ॥२॥

आज छबि हेसखी निरख री नयन भरि
सुमनबँगला बन्यो सुमनशय्या रुचिर
लसत सिय राम दोउ सुमन श्रृङ्गार करि ।
परम आनँद भरी सहचरी हैं खरी
सुमन चामर व्यजन छत्र निज करनि धरि ।
नवल यौवन सुछवि मद छके दम्पती
करत बतियाँ धरे बाहु अंसन उपरि ।
निरखि शोभा महा दुहुनकी प्रेम यह
हीयमें उठत है परम आनँद लहरि ॥३॥

विराजत दम्पति आनँदकंद
रसिक जनन प्राणनके प्यारे जनकलली रघुनन्द ।
विविध वरण सुमननको बँगलो बन्यो परम रमणीय
तेहि बिच मृदु सुमननकी शय्या निरखत कर्षत हीय ।
धरि अंसन भुज युगल परस्पर किये सुमनश्रृङ्गार

बैठे सुन्दर सुमन सेज पर लखि लाजत रति मार।
मन्द मन्द मुसकान मनोहर नवल कमल दल नैन
वंक भौंह अनुपम चितवनि लखि को बिनु मोल बिके न।
इन कर वदन सुधाकर निर्म्मल प्रभा चन्द्रिका चारु
लोचन युगल चकोर प्रेम करि अनिमिष इनहिं निहारु ॥४॥

बैठे खसबँगले बिच सुमन सेज पर जनक लली रघुनन्दन।
चहुँदिशि मणिमय लगे फँवार, सौरभ युक्त शिशिर जलधार
बहु वर्णनकी छुटत अपार, जातें बँगला सिंचत सुहावन।
दम्पति कबहू हँसि बतरावैं, कबहू पान खवाय जम्हावैं
पुलकित तनु व्है इत्र लगावैं, निरखैं शोभा होय मगन मन।
केउ सखि प्रमुदित चँवर ढुलावैं, केउ करि व्यजन महा सुख पावैं
केउ सखि नृत्य करें केउ गावैं, लय स्वर सहित बजावहिं बाजन।
सजनी परम धन्य यह परिजन, इनके सम जगमें कोउ नाहिन
दम्पति प्रेम केलि चित मोहन, जे अवलोकहिं भरि भरि नयनन
॥ ५ ॥

खसके बँगले बिच प्यारे रामसियाजी सोहैं।
फूलनकी सेज बिछाये, चन्दन तन पर लपटाये
साजे फूलनके आभूषण, परम सुहावन मति गति मोहैं।
चहुँ दिशि हैं लगे फँवारा, वर्षत शीतल जलधारा
चलत यन्त्र बल वायु सुशीतल, भयो ग्रीष्म भल शरद समोहैं।
रसिकन प्राणनके प्यारे, दोउ गरबैयाँ डारे
छकि छबि मद वर, परम मनोहर, रूप परस्पर, सादर जोहैं
मुखकी छवि कही न जावै, उपमा खोजी नहिं पावै

आवत हैं मन बड़े विलोचन पैनी चितवन तीखी भौंहें।
कारी घुँघरारी अलकैं, सुन्दर गालन पै झलकैं
छवि सुखकारी प्रेम निहारी, बलिहारी रतिपति रति सोहैं ६

सुमन सिंगार किये दोउ राजत, श्रीरघुवर मिथिलेशलली
सुछवि सुधा रस दृग पुट भरि भरि पान करहु सानन्द अली।
विविध वर्ण सुमननको वँगला जाल अनेकन भाँति बने
सुमनमयी महराव सुमनमय स्तंभ न मुखसों जात भने।
पारिजात दल युत सुमननके लटकन विविध मनोहारी
सकल अलौकिक रचना चितवत विधिहिं होत अचरज भारी।
वँगला बिच सुमननकी शय्या तापर पिय प्यारी राजैं
अंग अंग पर इन दोउनके असाधारण छवि छाजैं।
शय्याके उत्तर अरु दक्षिण लगी फँवारनकी अवली
विविध सुगन्धन मिश्रित तिनतैं छुटत शिशिर जलधार भली।
याम्य फँवारनतैं जलधारा चलि उत्तर दिशि जाय परै
उत्तरतैं दक्षिण दिशि जावैं शय्याको नाहिं स्पर्श करैं।
उभय दिशाकी मिलि जलधारा हे सजनी छवि देत घनी
बँगलेके बिच मानहुँ मुक्ता मालनकी महराव बनी।
शोभा देत प्रिया अरु प्रियतम विविध सुमन शृङ्गार धरे
उड्डगण भूषित घन अरु दामिनि मानहु वैठे मोद भरे।
वीरी देहिं परस्पर दोऊ चितवनमें चित विवश करैं
वतियाँ करहिं मधुर हँसि हँसि दोउ मानहुँ मुखतैं फूल झरैं।
कबहु परस्पर इत्र लगावैं चन्दन चरचैं सुखकारी

ग्रीष्मकेलि अवलोकि सुहावन प्रेम जात है बलिहारी ॥७॥

पुष्पबँगला बन्यो है सुखकारी ।
सुमन सेज सोहत अति सुन्दर राजत तापर पिय प्यारी ।
दोउन के चन्दन चर्चित वपु सुमन सिंगार मनोहारी ।
शोभित चहुँ दिशि रुचिर फँवारे छुटत सुगन्ध मिलित वारी ।
प्रियतम प्रिया करत दोउ बातियाँ अंसन ऊपर भुज डारी ।
अनुपम दोउनकी शोभा लखि प्रेम जात है बलिहारी ॥८॥

पुष्पबँगला बन्यो है सुहावनो
याको देखे उठे जीमें आनँद तरंग ।
रसिकनके प्यारे अँखियनके तारे
बैठे हैं दोऊ सुमनसेज पर
भुजा अंसन पै दोऊ परस्पर धरे
पुष्प शृङ्गार करि चित चुरावनो ।
चितवन छवीली भौंहैं कटीली
अत्यन्त अँखियाँ रसीली हैं प्रेम
रूप लावण्य सुषमा बखाने न जाहिं
मन्द मुसकान त्रिभुवन लुभावनो ॥९॥

दम्पतिकी शोभा अनिमिष लोचन करि आज निहारो री ।
विरच्यो है सियजू प्रियतमको सुन्दर सुमनसिंगार
प्यारीके तन पर रघुनन्दन सुमनसिंगार सिंगारो री ।
बँगला है कैसो सुन्दर सुमननको जाको देखि
मोहित भो मन्मथ रचना लखि विधि हू हियमें हारो री ।

मृदु सुमन सेज पै बैठे हैं प्यारे प्यारी दोउ
इनके आगे का गिनती रतिकी को मदन विचारो री।
चित्रित सो परिजन ठाढो है तनकी सुधबुध भूलि
अपनी छबितें इन मानो है सब पर टोना डारो री।
यह शोभा रखिये सन्तत मन मंदिर भीतर प्रेम
तन मन धन अपनो इन पै सब न्योछावर करि डारो री १०

सुमनसिंगार करत पिय प्यारी, श्रीरघुवर मिथिलेश दुलारी
सुमननके बँगला बिच राजें, छवि लखि बहु मनसिज रति लाजें
सुमननको पीताम्बर सुन्दर, साजत सिया पियाके तन पर
प्रियतम शुभ बहु धारीवारी, सियहिं उढावहिं सुन्दर सारी
सुमन चन्द्रिका पिया सजावत, सुमन किरीट प्रिया पहिरावत
रचि रचि रुचिर सुमन आभूषण, पहिरावत हैं दोउ पुलकित तन
सजि सिंगार गरबैयाँ डारे, रूप लखहिं दोउ छवि मतवारे
सखिजन दम्पति केलि निहारें, प्रेम पुलकि तन मन धन वारें ११

शृंगार सजे दोउ फूलनके।
रुचिर सुमन बँगला बिच बैठे हरवैया चित शूलनके।
सुमन वितान सुमन मय झालर परदे सुमन दुकूलनके।
भुजा धरे हैं युगल परस्पर ऊपर वर भुज मूलनके।
हँसि बतरावहिं सुख उपजावहिं उज्ज्वल रस अनुकूलनके।
परिकर सुछवि निहारि लहहिं फल अपने पुण्य अतूलन के॥१२॥

अलि दम्पतिने मन मोह लियो, जनु टोनो मोपर डार दियो
सुमन मंच पर बैठि परस्पर सुमननको शृंगार कियो।

करि शृंगार भुजा धरि अंसन रूप परस्पर दुहुन पियो ।
तिनके हाव भावको वर्णन होय सकत नाहिं जानै हियो ।
युगल स्वरूप बसो हिय भीतर यह चाहत है प्रेम जियो ॥१३॥

॥ गजलैं ॥

बँगलेमें पुष्पशय्या सुन्दर सजायँगी हम
प्रियतमाप्रियाको उस पर सादर बिठायँगी हम ।
शीतल महान सुखकर चन्दन कपूर मिश्रित
इनके उरस्थलों पर प्रमुदित लगायँगी हम ।
पुष्पोंके वस्त्र भूषण चातुर्यसे विरच कर
घन दामिनी प्रभा हर तन पर सजायँगी हम ।
पुष्पोंके पंचरंगी गजरे बना बना कर
स्वामी व स्वामिनीको धारण करायँगी हम ।
भूषण सँवारनेके मिषसे सुनो हे सजनी
तन बार बार छूकर आनन्द पायँगी हम ।
छवि प्रेम अति मनोहर लीला ललित सरस तर
अवलोक कर नयन भर तन मन लुभायँगी हम १४

सखी आज क्या ही बहार है, सुखसार ग्रीष्म विहार है
बँगला है खसका बना हुआ, है सुमनकी सेज मनोहरा
हैं विराजे इस पै पिया प्रिया, सुमनोंका तन पै सिंगार है।
जलयन्त्र धारका जाल है, कि गुथी ये मौक्तिक माल है
हैं सुमन ये लाल कि लाल हैं, कदली कि खंभ सुढ़ार है।
शुभ श्याम गौर युगल वरण, वर मेघ दामिनि द्युति हरण

जिसे देखते ही हो मग्न मन, सुषमा का वार न पार है।
दृग् कंज खंजन दर्प हर, चितवन है मानो मनोज शर
मृदु हास्य युक्त मुखेन्दु पर, निशिनाथ कोटि निसार है।
ये रसिक जनोंके हैं प्राण धन, है इन्हीसे जिनकी लगी लगन
वे ही प्रेम जगमें हैं धन्य जन, जिन्हैं एक इनका आधार है
॥ १५ ॥

ये पुष्प शृङ्गार करके दोनों विराजते हैं सुमन शयन पर
अपार छाई हुई है शोभा ललित नवल दम्पतीके तन पर
अहा निहारो तो पुष्पबँगला बना है क्या ही सुहावना यह
निरखि के इसकी विचित्र रचना महा हो अचरज विरंचिमन पर
मृदु स्वरोंसे हैं गान करती व नच रही है अनेक सखियाँ
सुराङ्गनायें भी देखकर गुण चकित सी हैं हो रही गगन पर
प्रियाके चम्पक वसन विभूषण अलक्ष हैं दिव्य देह द्युतिसे
वो श्याम तन पर हैं छवि यों पाते मनो विपुल दामिनी हों घन पर
कमल बिचारा तो चीज़ क्या है सुधांशुमें भी नहीं है छबि वह
दरस रही है जो दम्पतीके युगल नवल छवि सदन बदन पर
भवैं हैं तीखी बड़ी हैं आखियाँ रसीली चितवन हैं प्रेम इन की
है कौन ऐसा जगत में प्राणी न मुग्ध हो जाय इस फबन पर
॥ १६ ॥

सिंगार फूलोंका प्रियतम प्रिया बनाये हुए
बिराजते हैं सुमन मय शयन बिछाये हुए।
कपूर पांसु मिलित स्निग्ध पंक चन्दनका
शरीर अपने मनोहर पै हैं लगाये हुए।

प्रिया के तनमें जो भूषित हैं हार चम्पकके
वो देह कान्तिसे निज कान्ति हैं गँवाये हुए।
कनक लतामें फणी शंखसे लटकके अहो
अरुण सरोजसे है बिल्वको छिपाये हुए।
लगे हुए हैं पियाके नयन प्रिया मुख पर
पियाके मुख पै हैं प्यारीनयन लुभाये हुए।
उदार किस तरह कहते हैं प्रेम सब इनको
सखी जनोंके हैं ये तो हृदय चुराये हुए॥ १७॥

विराजे हैं सिया रघुवर किये श्रृङ्गार फूलोंके
सुमन तकिया सुमन गद्दी सकल व्यवहार फूलोंके।
सुमन बँगला मनोहर है बनी महराब फूलोंकी
सुमन मय स्तंभ है सुन्दर दरो दीवार फूलोंके।
गुलाब और केवडा जलके कई चलते हैं फव्वारे
जिधर देखो उधर हैं हो रहे उपहार फूलोंके।
वो वडभागी हैं जिनने रामसिय क्रीडार्थ अति सुन्दर
किये हैं साजो सामाँ ये सकल तय्यार फूलोंके।
निहारो तो प्रियाकी देह द्युति कैसी अलौकिक है
नज़र आते हैं मुरझाये से पीले हार फूलोंके।
हमारे नेत्र इन दोनोंके अंगों पर लुभायें यों
भ्रमर होते हैं जैसे लुब्ध खुशबूदार फूलोंके।
किये श्रृङ्गार सुमनों से इन्होंने बात ये झूटी
कहो यों बन रहे हैं प्रेम ये श्रृङ्गार फूलोंके॥ १८॥

सुमनोंके ये सिंगार परस्पर सजा रहे
लीला ललितसे सबके हृदय हैं लुभा रहे ।
प्यारीने श्याम तन पै सजा पुष्प पीत पट
चुनरी सुमनकी कंत उन्हें हैं उढ़ा रहे ।
पुष्पोंका ताज रचके प्रियाने उढा दिया
फूलोंकी चन्द्रिका हैं वे धारण करा रेह ।
फूलोंकी कन्त उनको पिन्हा करके कंचुकी
कंपित करोंसे उसपे किनारी बनारहे ।
करते हुए सिंगार सुमन मय पिया प्रिया
दोनों सप्रेम चित्त परस्पर चुरा रहे ॥ १६ ॥

सुन्दर सुमनोंके बँगले में श्रृंगार सुमन मय किये हुए
शुभ सुमन सेज पर बैठे हैं गलबैयाँ दोनों दिये हुए ।
फूलोंके भूषण और बसन तकिये भी फूलोंके शोभन
फूलोंकी तुराईको देखे विधि शारद विस्मित हिये हुए ।
चँदवा फूलोंका परम ललित चित्रित परदे हैं सुमनग्रथित
बूटे व बेल हैं कैसे अहा ज्यों हों रेशमके सिये हुए ।
दोनोंका यौवन है नूतन लावण्य युगलका हृदय हरन
दोनों ये मनो झूमते हैं छवि सुधा परस्पर पिये हुए ।
छवि छकी सकल गुण आगरियाँ अति भाग्य भूषिता सह चरियाँ
सेवन करती हैं सुमनोंके चामर व्यजनादिक लिये हुए ।
यह गौर श्याम नित नवल युगल जिनके मन मीनोंका है जल
रहते हैं जो प्रेम निमग्न सदा वेही हैं जगमें जिये हुए ॥२०॥

श्री जनकनन्दिनी रघुवर प्यारे
सुमन सेज रचि राजत हैं।
सुहावने हैं परम इनके गौर श्यामल तन
किये हुए हैं ये उसपर मलयका अनुलेपन।
दरस रही है छटा ज्यों नीहारने आकर
किया हो हेम व मरकत शिखरका आच्छादन।
दोउ उमँग भरे सुखधाम परस्पर
सुमन विभूषण साजत हैं।
सुमन सिंगार सजाया पियाने प्यारीका
किया सिंगार प्रियाने अवधविहारीका।
हरेक अंग विभूषणमें देखिये कैसा
हुआ ये काम है फूलोंकी चित्रकारीका।
देखो दम्पति तन पर ललित बसन हू
विविध सुमनमय भ्राजत हैं।
सखी री रूप है दोनोंका अति असाधारण
नवीन उसमें है यौवन ये विश्व मन मोहन।
सिंगार चारु परस्पर किया है फूलोंका
है प्रेम कौन जो शोभाका कर सके वर्णन।
लखि परम अलौकिक इनकी
शोभा बहु रति मन्मथ लाजत हैं॥ २१॥

वन विहारके पद०—

निहारो आलि सघन निकुंजन माँहि
करत सिय प्रियतम संग बिहार।

नूतन यौवन री अरी हेरी आली
चम्पक कमल सिरस सुमनहु तैं सहस गुनी सुकुमार।
रूप सुहावन री अरी हेरी आली
रति है विचारी कौन निरखि मोहै लक्ष्मी इनहिं हज़ार।
कटि अति छीनी री अरी हेरी आली
सहि न सकत मणिकिंकिणि भर हू लचकत बारम्बार।
अति ही कारे री अरी हेरी आली
सघन जंघ अवलम्बि स्निग्ध अति है घुँघरारे बार।
छबिमय भौंहैं री अरी हेरी आली
पीनस्तन दृढ मतवारे दृग प्रियतम प्राणाधार।
चन्द्र कलङ्की री अरी हेरी आली
ते अति ही मतिमन्द कहैं तेहि या मुख की अनुहार।
मुक्ति हु दासी री अरी हेरी आली
लोटत है वह प्रेम सहित पद पद्म पराग मँझार ॥२२॥

लता लवली सुलवंग रु चम्पक और कदम्ब रसाल तमाल
गुथे इक एकसों ये तरु यों प्रविशै न दिवाकर दीधिति जाल
सुहावन श्री सरयू तट पै लहि संग सखी रु सखा बहु बाल
रमैं रघुबीर सिया लखि प्रेम अनेकन ह्वैं रति मार विहाल ॥२३॥

भुज अंसन पै धरि के दोऊ प्रेम परस्पर आनंदसों विहरैं
तजि कंज भ्रमैं मुख पै अलि माल निवारत हू वह नाहिं टरैं
मुसकावत हैं बतरावत हैं अलि देखहु री जनु फूल झरैं
अवलोकनिमें अलसावनिमें दोउ प्रेम परस्पर हीय हरैं ॥ २४॥

मणि नूपुर किंकिणिकी सुनके ध्वनि हंस अचानक धावत हैं
लखि दम्पति आनन चन्द्र चकोरकिशोर लगे संग आवत हैं
बतियाँ गनि बीणानिनाद कुरंग बिमोहित व्है सुख पावत हैं
अलि बात कहा तुमरी हमरी पशु पक्षि हु प्रेम लुभावत हैं२५

नील हैं री केकी कंठ नील हैं तमाल तरु
नील हैं ये इन्दीवर बिकच सरनमें ।
नील हैं री मरकत नील है ये दूर्वा सखी
देखे हैं सुने हैं नील वारिद गगनमें ।
त्यों ही पीत चम्पक की वीथिका विलोकियत
दामिनी हू पीत नीके देखी है सुघनमें ।
पै ये पीत नीलताई और ही है प्रेम सुनु
झलक रही है जो श्रीसीताराम तनमें ॥ २६ ॥

जलजात्रा जलक्रीडाके पद०—

जलजात्रा छवि देख अली री
एला ललित लवङ्ग कल्पतरु कदली आम्र निकुंज भली री ।
लगी चहूँ दिशि नाना मणि मय कनक फँवार न की अवली री।
शिशिर गुलाब केबडा जलकी दिशि २ तैं बहुधार चली री ।
राजत हैं दोउ सुमन मंच पर श्रीरघुबर मिथिलेशलली री ।
भीजत झीने पट दोउनके गिरत कचनतैं कुसुम कली री।
लखहु परस्पर गरबैयाँ दै करत सुहावन रंगरली री ।
अवलोकत दम्पति छबि अनुपम मन मतिकी गति जात छली री
प्रेम मनोहर केलि दुहुनकी रसिकनकी विश्राम थली री २७

प्यारी पिया जल केलि करैं री।
विमल सलिल सरयू बिच सानँद
सखि जन संग लिये बिहरैं री।
डुबकी मारि कबहु रघुनन्दन
दूर जाय जल बिच निकरैं री।
दृष्टि बचाय आय पुनि प्यारिहिं
रसिक शिरोमणि अंक भरैं री।
सँग सँग लेहिं कबहु चुभकी दोउ
बहुत समय नहिं दृष्टि परैं री।
निकसहिं विकच कमल बन भीतर
सब सुमननकी छवि निदरैं री।
सखि जन सहित कबहु अलबेले
चित व्है कर फैलाय तरैं री।
जनु शशि बिल्व कमल कदली बिस
तरत एक सँग नाहिं बिछुरैं री।
करि जल केलि राजि तट ऊपर
रुचिर सुमन शृङ्गार धरैं री।
हास विलास परस्पर करि दोउ
बरवश हृदय सप्रेम हरैं री॥ २८॥

बिहरत सरित् सरयू तीर।
ललित देह लगाय चन्दन करि सुमन शृंगार धारण
धरि परस्पर बाहु अंसन श्रीसिया-रघुबीर।

अन्तरंग अनन्त अनुचर संग सोहहिं रंगभीने
किये सुमनासिंगार सब मलयानुलिप्त शरीर।
रत्न घाटनमें लसहिं प्रतिबिम्ब मानहु युगल छवि लखि
मोहि सँग सँग फिरति है जल देवतनकी भीर।
लखत दम्पति सरित् शोभा केलि कल जल विहंग कुलकी
करत जल क्रीडा कतहुँ लखि सलिल स्वच्छ गभीर।
तरत तरत लगाय गोता दूर निकसत जाय दोऊ
पान अधरामृत करनको होय निपट अधीर।
निज मनोरथ पूर्ण करि करि हिय लगावहिं अंक भरि भरि
निरखु शोभा अति अलौकिक प्रेम बनि अति धीर २६

॥ गज़ल ॥

छके है यौवन व रूप मद्से मद्न उमंगोंमें भर रहे हैं
लिये सखीवृन्द संग अपनी युगल सलिल केलि कर रहे हैं।
कनक कमलिनी व नील पंकजकी छविको धारण किये हुए ये
जलजमुखी गणके मध्यमें मन मधुप हमारा ये हर रहे हैं।
सलिल कहीं हो रहा है धवलित उरोज विगलित बहल मलयसे
कहीं पै केशरसे होके रंजित तरंग पिंजर उछल रहे हैं।
कहीं हो यावकके रससे रागी सलिल सबोंको जता रहा है
वो पूर्णरागी हृद्य हैं जिनमें प्रिया व प्रियतम रमँड रहे हैं।
सरोज कद्ली ललित कनकके सुकूप घट युग मृणाल किसलय
मकर निशाकर व बिम्ब मिलकर अनेक सरयू में तर रहे हैं।
धरी हो दर्पण तले मनोहर कनक व मरकतकी पुत्रिका दो

लगाके गोता सलिलके अन्दर गये हुए यों दमक रहे हैं।
निकलके तट पर खडे हुओंके कचोंसे यों जल टपक रहा है
इकट्ठे होकर असंख्य अहि ही अमोल मणि मणा उगल रहे हैं।
ये करके चन्दनका प्रेम लेपन कलायें नाना करैं मदनकी
सराहो उनकी अकल जो इनको अकल व निर्लेप कह रहे हैं
॥ ३० ॥

नौका विहार के पद०—

नौका विहरण छवि लखि लीजे, लोचन युगल सफल निज कीजे
विमल सलिल श्रीसरयू सुन्दर, सोहत मणि मय घाट मनोहर
सरि बिच पैरत मणि मय तरणी, शोभा जाकी जाय न बरणी
रचना सकल अलौकिक सोहैं, छवि जोहत बरवश मन मोहैं
इमि छवि पावत नाव सलिल पर, गगन मध्य सोहत जनु दिनकर
मनहुँ श्वेत मणि आजिर मझारा, शोभित होत विविध मणि थारा
नौका मध्य लसत सिंहासन, पारिजात किसलय मृदुलासन
तापर राजहिं सिय रघुनन्दन, रति मन्मथ छवि गर्व निकन्दन
दिये अंस भुज सहित हुलासा, अवलोकहिं जल बीचि बिलासा
दम्पति के आननकी झाँही, झलकत विमल तरंगन माही
बहु हाटक सरसिज इन्दीवर, गानि मिलिन्द भूमाहिं तिन ऊपर
कराहिं मन्दहँसि हँसि दोउ बतियाँ, ललकि अंक भरिलावहिंछतियाँ
सुमन बिभूषण कबहु सँवारैं, कबहु परस्पर रूप निहारैं
ललित कपोलन इत्र लगावैं, कबहु परस्पर पान खवावैं
सखि जन अनुपम केलि निहारहिं, प्रेम मग्न होइ तन मन वारहिं
॥३१॥

बिहरत सरयू सरित मझार बैठे नौका बिच पिय प्यारी।
श्यामल गौर सुहावन रंग, मन्मथ रति मद हरण सुअंग
नूतन यौवन नवल उमंग, अद्भुत हाव भाव छवि न्यारी।
अति गंभीर विमल सरि वारि, सोहत अम्बर की अनुहारि
तिहिं बिच मणिमय नाव सुढार, विलसत मानहुँ तरुण तमारी।
अन्तरंग परिकर सब संग, उघटत कल संगीत प्रसंग
छाय रह्यो है अनुपम रंग, करत प्रशंसा जन हितकारी।
सब कोउ दम्पति रूप निहारि, आनन्दित तन मन धन वारि
ठाढ़े तन सुधि निपट बिसारि, शोभा निरखि प्रेम बलिहारी ३२

सुन्दर सरयू सरित मँझारी बैठे नौका बिच
प्रियतम प्यारी हे माय।
वर सरिता के सोहहीं सुन्दर मणिमय घाट
धार बहत उथलत मनहुँ चांदी के से पाट
मधुर रव कारी हे माय।
सरित सलिल गंभीर बिच मणिमय नाव सुढार
अस छवि पावत दिपत जिमि दिनकर गगन मँझार
अमित द्युति धारी हे माय।
गौर श्याम तन दुहुनके नख शिख सजे सिंगार
अंग अंग लावण्य अति छलकत सुछवि अपार
युगल हिय हारी हे माय।
सरिता की शोभा लखहिं दिये भुजा भुजमूल
हँसि हँसि दोउ बतियाँ करहिं प्रेम झरहिं जनु फूल

जाउँ मैं वारी हे माय ॥३३॥

॥ गजल ॥

सरयू सरित् की आज सखी छबि अपार है
प्रियतम प्रियाका हो रहा नौका विहार है
नौका अनेक रत्नमयी हैं सुहावनी
जिसकी प्रभा दिनेश दमक सम उदार है।
बैठे हुए हैं चित्तहरन राम और सिया
फूलोंका अंग अंगमें सुन्दर सिंगार है।
यौवन अनूप मदसे हैं दोनों छके हुए
अद्भुत हरेक अंग है छवि बेशुमार है।
शोभाप्रियाकी देखके रति है लजी हुई
प्रियतमकी छविके सामने छवि हीन मार है
राघव सियाके देखके नौका विहारको
परिकरके तन पै प्रेम पुलक बार बार है॥ ३४॥

सिया रघुनाथ दोनों नावमें बैठे बिचरते हैं
परम सुखदायिनी सरयू सरित् की सैर करते हैं।
विविध मणि गण खचित अति ही प्रकाशित है ललित तरणी
इसे अवलोक कर नभके तरणि विस्मयमें भरते हैं।
प्रिया प्रियतम निरखते हैं सरस छवि वीचि पुंजों की
जो उज्ज्वलता से मुक्ता मालिकाओंको निदरते हैं।
युगल हैं देखते क्रीड़ा विविध इन जल विहंगोंकी

जो ग़ोता मारते हैं बोलते हैं और तरते हैं।
कभी करते हुये आपसमें बतियाँ रसभरी दोनों
परस्पर रूप मद्से मत्त होकर अंक भरते हैं।
मनोहर केलि दम्पतिकी ये सम्पत् है असाधारण
रसिक जन प्रेमयुत इसको हृदय मंदिरमें भरते हैं ॥३५॥

इति श्रीसीतारामप्रेमप्रवाह तृतीय तरंग समाप्त।

॥ श्री ॥

श्रीसद्गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

श्रीसीतारामप्रेमप्रवाह

चतुर्थ तरंग

दो०—पावस झूलन पद ललित रचि निज मति अनुसारि
लिखत चतुर्थ तरंगमें युगल चरण हिय धारि ॥

पावसके पद०—

अली पावस ऋतु आय गई
बेदरदी प्रियतमने मेरी अजहूँ सुधि न लई ।
चलत पवन शीतल पुरवाई नभ घन घटा चहूँ दिशि छाई
दामिनि दमक निहारत सजनी उपजत व्यथा नई ।
गरजितरजि बादर बरसत जल तनु जवास जिमि सूखत पल पल
सूनी सेज परत नाहिन कल प्रियतम बिरह हई ।
पपिहा पिउ पिउ शब्द उचारैं कुहू कुहू कोकिला पुकारैं
बोलत मोर झिल्लिं झंकारैं श्रवणन शूलमयी ।
बेग मिलहु प्रियतम मम जीवन आनँद घन मन्मथ मद गंजन
प्रेम जिया तरफत है तुम बिन युग सम निशा भई ॥ १ ॥

सघन घन घटा गगन उँमगी
मूर्छित परी वियोग विकल तिय सुनि घन गरज जगी।
दामिनि दमक निहारि डरी हिय जनु दश दिशा दगी

जुगनू चमकत निकट देखि उठि सहसा भभरि भगी।
पियहिं समुझि संयोग-भवन में गइ अनुराग रँगी
सूनी सेज निहारि हारि हिय अतिशय शोच पगी।
लेत उसास सुरति करि करि तब ठग रतिनाथ ठगी
कहा कहिय आधार मिलन लहि नाहिन देह डगी।
घृत सम बुन्द प्रचंड पवन सम शीतल पवन लगी
प्रेम करिय चालि शमन श्याम घन विरहानल सुलगी॥ २॥

हे सखि उन बिन मन घबरावत, मेरो जियरा निकस्यो जावत।
घन गरजत चहुँ ओर घोररव घटा चढी ही आवत
काल कृपाण समान प्राणहर दामिनि भय उपजावत।
केकी बोलत कोकिल कूजत दादुर शोर मचावत
दुखवत जुगनूँ घातक चातक गहरे घाव लगावत।
बरसत नीर समीर बहत वह परसि शरीर सुखावत
प्राण बचैं तब जब वे दीखैं प्रेम सहित घर आवत॥३॥

॥ गजल ॥

घनघोर घटा छाई और मेह बरसता है
मिलनेके लिये उनसे जी मेरा तरसता है।
बिजली है व्यथा करती गरजन ये डराती है
चातककी रटन करती अधरों पै अरसता है।
त्यों त्यों ही वियोगानल जलता है अधिक दिलमें
ज्यों ज्यों ही बरसने से बढती ये सरसता है
होती है व्यथा भारी बहती है कटारी सी
वर्षा का पवन ज्यों ज्यों तन मेरा परसता है।

अब भी न मिले आकर वे प्रेम अगर मुझसे
जाँ तनसे जुदा होगी यह साफ़ दरसता है॥ ४॥

झूलोत्सव के पद०—

रामहिं सियजू सहित झुलाइय
सुरदुर्लभ पावन मानुषतनु पावन को फल पाइय।
बैठिय जाय इकन्त भवन बिच काहुहिं कछु न जनाइय
सब प्रकारतैं अन्त इन्द्रियन सहित मनहिं बश लाइय।
नाना मणिमय सोपानन युत उज्ज्वल घाटन वारी
सरयू सरित् बहाइय हिय बिच ताप बिमोचन वारी।
लोहित पीत श्याम सित सुरभी सुन्दर सुमनन वारे
सघन वृत्त अगणित अवलोकहु पावन सरित किनारे।
तिहिके मध्य प्रमोद बिपिन बहु कल्प वृत्त तिहि माहीं
औरहु वृत्त अनेक छाँह घन रविकर प्रविशत नाहीं।
परम दिव्य विद्रुमके धोरा रत्न मयी बहु क्यारी
चलत रहै शीतल सुगन्ध युत सुखदा मन्द बयारी।
ताके बिच हिंडोरशाल वर अवलोकहु हिय हारी
निरखि विश्वकर्म्मा विरंचि जेहि मानै अचरज भारी।
ताके बिच मणिमय हिंडोरा मोतिन झालर वारो
तिहिंमे मसनद लाल रेशमी गादी मृदुल निहारो।
सजल नील जलधर अरु अगणित बिजुरी कान्ति लजावन
प्यारी पियाहिं निहारिय झूलत बहु रतिकाम लुभावन।
दम्पतिकी सुषमा सरिता बिच मति दृग मीन बनाइय

नखशिख लौं अवलोकि माधुरी चरणन बिच चित लाइय ।
व्है समीप आनन्द सहित अति मृदु मृदु झोटा दीजे
तनमनधन अरु प्राण प्रेम निज सकल निछावर कीजे ५.

झूलन निकुञ्जमें पधारो सिया राज लली
उमड घुमड घटा छाई नभमंडलमें
मृदु मृदु घोरत है दामिनी दिपत भली ।
शोर करैं दादुर मयूर कीर कोकिलादि
परत फँवार सूच्छम त्रिविध बयारि चली ।
अरुण मृदुल पद कमल परस पाय
होइ हैं महान भूरिभागिनी हिंडोरथली ।
दैके गर बाँह संग रावरे झुलावनतैं
विकसैगी प्रेम पूर्ण पीय हीय कंज कली ॥ ६ ॥

सिय जू नवेली हे री अलबेली तीज है भली
कहिबो हमारो प्यारी चित्त धारो झूलन पधारो जनकलली ।
नाना धारी वारी झीनी हरी सारी ओढो जी सुरङ्ग
लहरिया वारो लँहगो प्यारी धारो घूमघूमारो जनकलली ।
रेशमकी अँगियाँ पहरो जी सुरँगिया तनियाँ कसो
सुमन सँवारो बाँधो घुँघरारो केशपुंज कारो जनकलली ।
मृदु रव कारी हंस हिय हारी भूषण सजो
पिय मन रंजन खंजन से नैनन अंजन हू सारो जनकलली ।
कारी घटा छाई दामिनी सुहाई दमक रही
बहै परवैया झूलन समैया बन्यो है निहारो जनक लली ।

हिंडोरेके माँहीं दीन्हे गर बाँहीं प्रियतम संग
झूलत निहारन कारण सखीजन उत्सुक है सारो जनकलली।
हिंडोरशालामें हे री बाला तेरी जोहैं पिय बाट
झूलो सँग माँहीं पूरो अभिलाषा लज्जाको निवारो जनकलली।
सखियाँ झुलैहैं झोटा मृदु दैहैं गैहैं जी मलार
बलि बलि जैहैं प्रेम सुख पैहैं सेवक तिहारो जनकलली ॥७॥

राजदुलारी हे पिय प्यारी सियजू प्रियतम संग, झूलो २जी।
छई सघन घन घटा गगनमें गरजत दमकत दामिनी
दादुर मोर शोर चारिहुँ दिशि कूजत विविध विहंग, झूलो०
पुलिन हरित छवि भरित सरित वर विलसत मानसनन्दिनी
कर्षत चित हर्षत हिय निरखत विलुलित ललित तरंग, झूलो०
यह शुभ समय सुहावन पावन अवलोकत सिय स्वामिनी
तुमहिं संग लहिके झूलनकी पिय हिय उठी उमंग, झूलो०
पायन परों करों विनती चढि झूलन मचकी दीजिये
सफलमनोरथ पियहिं करहु पागि दोल केलिके रंग, झूलो०
सजल जलदके बीच यथा छबि पावत दमकत दामिनी
यातें शतगुण तुम छवि पैहो लपटि लपटि पियअंग, झूलो०
झूलत तुमहिं निहारि पिया सँग चन्द्रवदनि मृगलोचनी
जीवन फल पाइ हैं प्रेम भल लोचन लाहु अभंग, झूलो२जी ८

झूलो झूलो सियाजी नवेलियाँ
छाई अम्बरमैं देखो सघन घनघटा।
महान सूक्ष्म फँवारैं सलिलकी गिरती हैं

सुगन्ध मिश्रिता लहरें हवाकी फिरती हैं ।
हवाके झोकोंसे शाखें तमाम हिलती हैं
लचकके भूमिसे ये बारबार मिलती हैं ।
मानो ये सारी उत्सुक हैं भारी
झूलनकी शोभावलोकनके हेतु ।
जिससे झूलो इशारोंसे कहती हैं सब
पडके पावोंमें काननकी बेलियाँ । झूलो०
पियाके साथमें झूले पै जब चढोगी तुम
पिया झुलायेंगे उसवक़्तमें डरोगी तुम ।
भुजोंके बीच यकायक उन्हें भरोगी तुम
निहाल आपभी होगी उन्हें करोगी तुम ।
हे प्रेम स्वामिनि घनमें ज्यों दामिनि
है ये दमकती त्यों दमकोगी तुम ।
करके लोचन सफल होंगी हर्षित सकल
ये मयूरी ज्यों सारी सहेलियाँ । झूलो० ॥ ६ ॥

हे आलि छबि अनूप निहार
सघन विपिन प्रमोद सरयू तीर सुन्दर परम पुष्पित
सकल द्रुम मकरन्द लहि अलिगण करत गुंजार ।
सीय झूला झूलहीं पिय मधुर झोटा देत रसवश
देन मचकी हेतु राघव करत अति मनुहार ।
चरण धरि मणिजटित पटरी पर उठी गहितनी स्वामिनि
चलत अति कृश लंक नहिं सहि सकत कच कुच भार

देत मचकी उडत पट नूपुर बजत जनु हंस बोलत
लगत अधिक सुहावनी कटि किंकिणी झंकार।
रुचिर मौक्तिक हार नवल उरोज पर अस लसत चंचल
कनक गिरिके शिखर पर जनु नखत करत विहार।
ललित भाल कपोल अस छबिदेत श्रमशीकर झरावत
अमृत विन्दुनको स्रवत है जनु मयंक उदार।
झूलि महि उतरी प्रिया प्रियतम भुजा धरि अंस पोंछत
वदन शोभा सदन सखिजन मुदित करत बयार।
आजकी यह निरखि शोभा प्रेम मानस अधिक लोभा
बसहु श्रीसियराम मेरे हीय नयन मझार॥ १०॥

झूला झूलत जनकनन्दिनी रघुवर राजिव नैन
रसिकनके जीवनधन दोऊ सुन्दर सुषमा ऐन।
चन्द्रकलादिक सकल सहचरी ठाढ़ी हैं चहुँ ओर
वदन इन्दु अवलोकहिं प्रमुदित लोचन चारु चकोर।
तिनके मध्य लसत अस दोऊ रसिकनके बिश्राम
चम्पकलता वृन्दमें मानहुँ तड़िल्लता घनश्याम।
लपटि गई सहसा डरि प्यारी प्यारे भये निहाल
ऐसी शोभा भई मिले जनु चम्पकलता तमाल।
ज्यों ज्यों झोटा वढ़त प्रिया त्यों अधिक अधिक लपटात
भये पिया उमंगवश पुलकित शिथिल सुकम्पित गात।
मन्द भयो झोटा अब नाहिन मचकी देत किशोर
चुभे जानियत हिय में उन्नत पीन उरोज कठोर।

धीरे धीरे झूला सजनी आप गयो ठहराय
प्रेम समेत लेत सब सखिजन लोचन लाभ अघाय ॥११॥

जनकदुलारी सियजू प्यारी प्रियतम संग
झूलत लसैं हैं आली मन मोहैं उपवन केरी कुंज मझार।
घनदल वारो सुमनन वारो तरु मन्दार
तामें झूला नीको पाटकी तनीको माणि पटरीको छविको सार।
प्रियतम प्यारी निज निज बारी मचकी देत
प्रीति मतवारी ठाढी सब नारी गाय रही है राग मलार।
भूषण बजैं हैं वसन उडै हैं छूटे केश
ललन ललीकी परम अनोखी शोभा अति नीकी प्रेम निहार
॥१२॥

झूलत अलबेले दोउ सोहत
सघन निकुंज सुखदायी मन भाई माई
शीतल चलत परवाई ये सुहाई तैसी
छाई घटा गगनमें समयकी रुचिराई
चितवत ही चित पोहत ।
नवल किशोरी गौरी दामिनी वरणि सिय
सजल सघन घनश्याम राम शोभाधाम
मचकी लगावत उडत पट दोउनके
लंक लचनि मन मोहत ।
सिय सुकुमारी प्यारी डरत बढ़त झोटा
बिनती करत लपटत पिय अंगसों री

अति ही अनूप यह दम्पतिकी शोभा
प्रेम बडभागी जन जोहत ॥ १३ ॥

झूलैं झूला नवेले पिय प्यारी
सरयू तीर प्रमोद विपिन में तरु मन्दार मनोहारी।
तनी बनी सोहनी पाटकी मृदु पचरंगी ज़रतारी।
पटरी हरी धरी तेहि ऊपर बहु मणि जटित प्रभा वारी।
मचकी देत चढ़े दोउ तापर अमित मदन रति छवि हारी।
भूषण बजत मधुर रव कारी फहरत पिय पट तिय सारी।
तरल भई हारावलि तियकी बिथुरी कवरी घुँघरारी।
चिकुरावलि मुख पर विलसत जनु शशि पै छई घटा कारी।
लचकी लंक मयंकमुखीकी अंक लगी डरि सुकुमारी।
तियहिं डरत लखि बैठ गये पिय ताहि गोदमें बैठारी।
झोटा देय झुलावन लागी गावत गीत सखी सारी।
प्रेम सुहावन यह झूलन लखि मग्न भई सखियाँ सारी १४

झूलैं राजलली कुंजनमें मन म्हाँको मोहैं ये।
कोमल पाट तनी रँग भीनी पटड़ी जड़ी जड़ाय
मचकी देताँ अलबेलीकी छीनी कटि बल खाय।
पौन लग्या झीनी जरतारी साड़ी उड उड जाय
चोटी अतर भरी नागण सी कमरयाँ पै बल खाय।
वदन चन्द्र पर केश लसै ज्यों भँवर रह्या मँडराय
शोभा निरखि अपार प्रेम मन अखियाँ रही लुभाय
॥ १५ ॥

उमड घुमड गरजि गगन सघन घटा छाई
सनन सनन पवन चलत शीतल परवाई ।
समय जानि स्वामिनि सिय सखियन सँग लाई
सरयू तट कुंजनमें झूलनको आई ॥
कल्प वृच्छ शाखा बिच झूला अति नीको
सोहत है मृदु विचित्र पाटकी तनीको ।
रत्न जटित लसत रुचिर पटरी द्युति वारी
तिहिं पर धरि चरण लगी झूलन सुकुमारी ।
मचत लचत छीन लंक झीने पट फहरैं
लुलित चिकुर तरल हार युग उरोज थहरैं ।
सखि समूह गान करहिं सरस स्वर मलारैं
प्रेम सहित सुषमा सब नयन भरि निहारैं ॥ १६ ॥

झूलत रघुबर जनक दुलारी, सरयू तट कुंज मझारी ।
झिर झिर झिर झिर मेहा बरसत घटा छाय रहि कारी
दमकत है दामिनी चहूँ दिशि लागत है अति प्यारी ।
सघन प्रफुल्लित पारिजात तरु जासु उच्च दृढ डारी
तापर झूला पाट तनीको पटरी रतन सँवारी ।
घन दामिनि द्युति हर दोउ तापर मचकत बारी बारी
लचकत लंक मयंकमुखीकी फहरत झीनी सारी
झूलन गावत हैं पिक बैनी अली मुदित मन सारी
अनुपम यह छवि निरखि प्रेमयुत बार बार बलिहारी १७

सजनी लागत यह छवि प्यारी ।

सुन्दर सरयू तीर सुहावन सघन सुछविमय यह प्रमोदवन
संयोगी जन मन अति भावन वर्षा ऋतु सुखकारी ।
छाये गगन मध्य श्यामल घन झिरमिर झिरमिर बरसत बूँदन
हिये मनोज उमंग बढावन शीतल चलत बयारी ।
गूँजत अलि कुसुमितवृक्षन पर कोकिलादि खग कूजत मृदुतर
नृत्य करत केकिनि केकी वर करत शब्द हियहारी ।
कुसुमित सघन कल्पतरु सोहत ता बिच झूला अति मन मोहत
तिहि पर उमँग भरे दोउ झूलत रघुवर जनक दुलारी ।
देत ओसरनतैं दोउ मचकी फहरानि लखहु दुहुन के पटकी
लचत प्रिया तन मानहु सजनी चम्पककी सी डारी ।
स्वेद जालिका मुख पर छाई लागत है यह अति हि सुहाई
अमृत विन्दु श्रेणी प्रकटी है जनु शशि विम्ब मझारी ।
सजल सघन घन दामिनि वरणी नयन चातकन आँनँद करणी
हृदय बसहु जोरी दिन रजनी प्रेम होउ जनि न्यारी १८

धीरे धीरे झूलो मेरी सारी खसि जै हैं जी
हारावलि तरल भुजासों लपटैं हैं जी ।
मचकी बढावो जनि हा हा प्यारे देखो मोरी
बेणीबद्ध भारी कचश्रेणी छुटि जैहैं जी ।
कम्पित उरोज गुरु भारतैं हमारी लंक
जो पै लचि जै हैं प्रेम सम्पट न ऐहैं जी ॥ १९ ॥

झूलत हैं निरखो श्रीसिय रघुनन्दन सघन निकुंजनसें ।
कुसुमित तरु मन्दार ताकी डार झूला डर्‌यो अनोखो

निरखत जिहि सजनी उपजत सुख मनमें ।
तनी रेशमी लाल परम रसाल पटरी मणिमय तिहि पै
सोहत हैं युगल छके छवि यौवनमें ।
मचत उडत पट झीन कटि अति क्षीण लचकत हार तरल हिय
विलुलित चिकुरावलि वदन मयंकनमें ।
झोटा बाढ्यो जानि हिय डर मानि सहसा लिपटि सियाजू
दामिनि ज्यों दमकत है पिय तन घनमें ।
शोभा प्रेम निहारि सुरति बिसारि सखियाँ मगन भई हैं
सुधि नहिं हम अहहिं भवनमें वा वनमें ॥ २० ॥

नवल युगल रमकि झमकि झूलत सोहैंरी कुंजनमें
दामिनि द्युति हर रघुबर अम्बर फहरत लहरत सिया लहरिया।
दम्पति मचत लचत कटि झोकन तरलित ललित हार कच शोभन
यह छवि रुचिर निहारत कहु सहचरि को नाहि मोहै ॥२१॥

झूलत हैं पिय प्यारी जू कुंज मझारी झूलत हैं पियप्यारी।
मेघ माल अम्बर सरसै नान्ही नान्ही बूँदन बरसैं
चहुँ ओर होत कल खग रव हिय हारी जू । कुंज मझारी
नव उमंग भीने मचकैं छीन लंक पुनि पुनि लचकैं
फहरात पीत पीतम पट तिय सारी जू। कुंज मझारी०
झलमलात आभा तनकी मोह लेत छवि गति मनकी
कल हंस नाद भूषण रव अनुहारी जू । कुंज मझारी०
लोल केश माला बेणी मुखनि स्वेद जल कण श्रेणी
अवलोकि प्रेम करि तन मन बलिहारी जू। कुंज मझारी॥२२॥

झूलत हिंडोरनामें प्यारे राम जानकी ।
सखिजन सरस हिंडोरा गावत धुनि सुनि कोकिल कंठ लजावत
हरषि हरषि दम्पतिहिं झुलावत सब के मन बिच मोद न मावत
प्रेम विवश सुधि बिसरी अपानकी । झूलत०
रत्न मयी झलमलत हिंडोरा मुक्ता दाम लसत चहुँ ओरा
तेहि बिच प्यारी पिया बिराजत गौर श्याम तन छवि अति छाजत
निदरहिं छवि बहु रति विषमबाणकी । झूलत०
धरि गर बाँह करत दोउ बतियाँ बरबश हरण करहिं चित गतियाँ
मन्द हास छवि कहि नाहिं आवत प्रेम सुचितवनि चित्त चुरावत
मनमें भावत छवि दोउ छविनिधानकी । झूलत० ॥ २३ ॥

निरखो छवि सैयो हिंडोरै श्रीसियराम बिराजैं ये
चातक दादुर मोर चारूं ओर बोलै बिजली चमकै
झिरमिर झिरमिर बरसै घन गाजैं ये ।
रतन हिंडोरा माहिं दे गल बाँहि प्यारा लगै झूलता
अँग अँग के माँय महा छवि छाजैं ये ।
निरख्याँ याँको रूप परम अनूप कुण नाहिं मोहै सजनी
अगणित रति मनसिज अगणित लाजैं ये ।
प्रेम समेत झुलावैं चँवर ढुलावैं गावैं गीत सहेल्याँ
धन छै निजकर परिचर्या साजैं ये ॥ २४ ॥

झूलत रामसिया कुंजनमें सरयू तीर प्रमोद विपिनमें ।
सखि सब ठाढ़ी मुदित झुलावैं गावैं गीत मुदित होय मनमें ।
रत्न हिंडोरे बिराजत दोऊ धरे परस्पर भुज अंसनमें ।

पिय तन लगी प्रिया इमि विलसत सोहत है जिमि दामिनि घनमें
निरखत बहु मन्मथ रति लाजत शोभा परम दुहुन के तनमें।
जेहि चितवैं विनु मोल बिकै सो टोना है इनकी चितवनमें।
आस असार जगतकी तजि सब प्रेम इनहिं रखु हिय नयननमें
॥ २५ ॥

झूलत प्यारे लागें दोउ सरयूतीर
रुचिरअति कल्पद्रुमनको बन्यो न काको मन मोहै यहकुंजकुटीर
कूजत खग गूँजत अलि मधुमत्त बहत सुखकारीरी त्रिविध समीर
सलिलकण झिरमिरझिरमिर परैं छई है नभ माहीं री घटा गभीर
लसत दोउ रत्न हिंडोरा मध्य तड़ित घन शोभा हर सिय रघुवीर
परस्पर रूपसुधा करि पान भये दोउ आली री निपट अधीर
दिये भुज अंसन पै बतरावैं मधुर हँसि मारैं री चितवन तीर
इनहिं हम रखहिं हगन बिच प्रेम कबहु नाहिं छाँडैं री हेरी वीर
॥ २६ ॥

हिंडोरे झूलत पिय प्यारी, झुलावत हैं सखियाँ सारी।
सघन अति प्रमोदवन नीको विभूषण मानो अवनीको
बनी सुन्दर हिंडोरशाला, खचित बहु रत्न चित्रमाला
मणि सुवर्ण मय सोहई परम दिव्य हिंडोर
कोमल लाल रेशमी गद्दी ज़रतारीकी कोर,
हरी मसनदकी छवि न्यारी। हिंडोरे०
विराजत दम्पति तेहि माहीं, दिये आपसमें गलबाँहीं
महा छवि अंग अंग छाजै, अमित रति मनसिज लखि लाजै
घन दामिनि छवि हर युगल श्यामल गौर किशोर

परम लुनाईकी अधिकाई नूतन यौवन ज़ोर,
जनावत आखियाँ अनियारी। हिंडोरे०
किंकिणी नूपुर बाजत हैं, हंस धुनि सुनि सुनि लाजत हैं
हार माला हिय लहरत हैं, वसन दम्पति के फहरत हैं
आनन चन्द्र विचारके चितवत मुदित चकोर
मुख सुवास वश भ्रमर भँवत हैं तकत गहनको मोर
केशलट गनि नागिनि कारी। हिंडोरे०
सखी सब सुछवि निहारत हैं, मुदित तन मन धन वारत हैं
मलौरें कलरव गावत हैं, युगलके हिय अति भावत हैं
धन्य धन्य परिकर सकल इन सम नहिं कोउ आन
दम्पति छविरस दृगपुट भरि भरि करत निरन्तर पान
प्रेम इनकी है बलिहारी, हिंडोरे झूलत पीय प्यारी ॥२७॥

राम सिया झूलत हिंडोरे री आली
बरवश चित रसिकनको चोरे री आली।
सप्रेम चन्द्रकलादिक अली झुलाती है
मधुर स्वरोंसे मनोहर मलार गाती हैं।
विलास हासकी बातें कई सुनाती हैं
भरी अनन्दमें फूली नहीं समाती हैं।
सुछवि सुधा पिवत मगन दृगन करि चकोरे री आली।
सुहावनी है ये प्राची समीर लहरें री
सखी तू देख तो दोनोंके वस्त्र फहरें री।
छुटी हुई हैं सितासित सुकान्ति नहरें री

कि जिनके सामने सहसा नज़र न ठहरें री ।
इनकी दिशि प्रेम लखत झपकत चख मोरे री आली२८

आलि झूलते हैं हिंडोरमें रघुवीर श्रीसिय स्वामिनी
हैं झुलारही अति हर्षसे वहु कामिनी गजगामिनी ।
नभमें घटा अति छा रही है फँवार सूक्ष्म गिरा रही
रव झिल्लियाँ हैं सुना रही है लुभा रही यह यामिनी ।
सरयू है ये कि अदृष्ट जो निशिनाथ है उसकी वधू
पतिके वियोग से कृश हुई है पड़ी मही पर चाँदनी ।
सितरत्नमय है हिंडोर वर, मणिमय रचित है विहग निकर
हैं लगी हुई मणिपुतलियाँ वहु जा नहीं सकती गिनी ।
गलबाँह दम्पति हैं दिये छवि दे रही हैं भुजायें यों
घन मध्य हो स्थित दामिनी स्थित दामिनीमें हो नागिनी
हर एक अंग अनूप है सब विश्व मोहन रूप है
छवि देखि लज्जित हों अमित मनसिज व उसकी सुभामिनी।
मणिमय हिंडोर की दण्डियाँ, लिये करमें झोटे हैं दे रही
जग जन्मका फल ले रही सब सहचरी बडभागिनी ।
कोई लेके चामर सुन्दरी हैं खड़ी हुई सुखमें भरी
कोई श्रेष्ठ वाद्य वजा रही कोई गा रही है सुरागिनी ।
सित कान्ति है हिंडोर की उस पर असित तनुकान्ति यों
छवि दे रही है ज्यों गंगमें यमुना मिली सुखदायिनी ।
सिय देह भा पति कान्ति युत छवि दे रही है अनूप यों
यमुना नदीके हो संगमें ज्यों सरस्वती शुभगामिनी ।

ये ही कान्ति दम्पतिकी सखी है झलक रही नभ काचमें
सोही स्पष्ट दृष्टिमें आ रही ये नहीं हैं री घन दामिनी।
ये ही कामना मम प्रेम है, कि न कामना मनमें रहै
रहै सर्वदा पतिके साहित सियजू हृदय अभिरामिनी २९

हिंडोरे में सिया रघुनाथको सखियाँ झुलाती हैं
युगल छवि मदसे छक कर झूमती खुद भी तो जाती हैं।
कोई झोटे लगाती हैं कोई चामर हिलाती हैं
कोई बाजे वजाती हैं कोई हिंडोल गाती हैं।
हिंडोरा हेमका है रत्न नाना हैं जड़े जिसमें
मयूखें इसकी दिनकर रश्मियोंको भी लजाती हैं।
दिये गलबाँह दोनों झूलते हैं रूप मतवारे
कनक मरकत प्रभायें तन प्रभासे शर्म खाती हैं।
मधुर मुसकान मृदु बतियाँ परस्परकी ललित चितवन
भवें तीखी वड़ी अखियाँ हमारा दिल चुराती हैं।
अजव ही लुत्फ़ देता है युगल तन पर नवल यौवन
चुराती हैं अदायें चित्तको सुधबुध भुलाती हैं।
नजर यदि स्वप्नमें भी प्रेम इनकी केलि आजाये
जगत्‌की कामनायें फिर कभी दिलमें न आती हैं॥३०॥

श्रीरामसियाजीको सब सखियाँ झुलाती हैं
अत्यन्त मृदु स्वरसे मल्हार ये गाती हैं।
देती हैं कोई झोटे झलती हैं कोई पंखा
करती हैं कोई चामर फूली न समाती हैं।

छवि रूप सुधा सरमें मन मग्न हुये सबके
ये ढूँढ रही हैं सब पर थाह न पाती हैं ।
क्या दिव्य परम सुन्दर ये रत्न हिंडोरा है
बहु वर्ण प्रभा इसकी नयनोंको झपाती हैं ।
हैं झूल रहे दोनों कन्धोंपै भुजा डाले
तन कान्ति कनक मरकत द्युतिको भी लजाती हैं ।
है रूप असाधारण तैसी ही अदायें हैं
सजनी ये निरखते ही तन मनको लुभाती हैं ।
हैं धन्य सकल सखियाँ सेवामें लगी हैं जो
निज पुण्य समूहोंके फल प्रेम ये पाती हैं ॥ ३१ ॥

लली लालन युगल झूलें हैं कमला तीर कुंजनमें ।
परस्पर रूप मद माँते युगल शरशार यौवनमें ।
तनी मखतूलकी कोमल लगी पटरी है हीरोंकी
मनो छवि देख शशि मुखकी गिरा है हारि पाँयनमें ।
फुहारैं पड रही हैं जिनसे पट भीगे हैं दोनोंके
दरसती है प्रभा तनकी अहा झीने दुकूलनमें ॥
बढ्यो झोठा प्रिया डर कर लगी प्रियतमके सीनेसों
भई शोभा अनोखी ज्यों लसै सौदामिनी घनमें ॥
मधुर धुनि गान करतीं हैं सखी बहु कोकिला बैनी
सुधा छवि पान करके होरही हैं सब मगन मनमें ॥
हमें झूलेकी न्योछावर प्रिया प्रियतम यही दीजे
बसो जोड़ी निरन्तर प्रेम मेरे हीय नयननमें ॥ ३२ ॥

निहारिये अपनी प्राणप्यारीको राम प्यारे झुला रहे हैं।
प्रियाके डरने के डरसे मचकी ये धीमी धीमी लगा रहे हैं।
अहा सघन इस प्रमोद वनके हैं वृक्ष कैसे फलित व पुष्पित
स्व संपदासे जो कल्प वृक्षोंकी राजियोंको लजारहे हैं।
निरखके दम्पतिकी छविको होकर प्रसन्न ज्यों गान कर रहे हैं
अनेक खग भूरुहोंकी शाखोंमें इस तरह चहचहा रहे हैं।
उमड घुमड कर गगनमें छाये हुए सुखप्रद रुचिर सघन घन।
समयकी सुषमा दुचन्द करनेको सूक्ष्म जल कण गिरा रहे हैं।
मधुर मधुर अब प्रिया भी प्रियतमके साथ देने लगी है मचकी
निरखके शोभा प्रियाकी प्यारे महान आनन्द पा रहे हैं।
तरल है दोनोंकी हार माला वसन हैं फ़र्रा रहे हवासे
चिकुर वदन शशिको स्पर्श करते हुए महा छवि दिखा रहे हैं।
चिकुर व श्रमकण मुखों पै दोनोंके इस तरह हो रहे हैं शोभित
निशेश मंडलमें सर्प मणियोंका जाल मानो बिछा रहे हैं।
समझके दोनोंको मेघ दामिनि मयूर इक टक निहारते हैं।
प्रसन्न होकर हैं नृत्य करते व शब्द मीठे सुना रहे हैं।
निहार करके छटा अनूपम सखी जनोंके जलज बिलोचन
महान आनन्द वश हो विकसित प्रहर्ष जल अति बहा रहे हैं।
उन्हींके हैं धन्य जन्म जगमें वही हैं अति प्रेम भाग्य शाली
कि जिनके मन रूप भृङ्ग इनके पदाम्बुजों पर लुभा रहे हैं
॥ ३३ ॥

श्रीस्वामिनी सियाजू कुंजोंमें झूलती है
सखि मंड़ली निरख कर बिन मोल ही बिकी है।

पचरंग पाटकी है तनियां मृदुल मनोहर
पटरी अमल कनककी बहु रत्नसे खची है।
ओढे हुए लहरिया शोभित है हो रही यों
रवि रश्मियोंसे मानों बिजली घिरी हुई है।
वैसा ही अति मनोहर है घेर दार लहँगा
कटि किंकिणी कलित है अनुरूप कंचुकी है।
झूलेके हैं निकट जो सुन्दर अशोक बीथी
पद नखकी कान्तिसे वो पल पलमें फूलती है।
अति दिव्य रत्न माला चंचल उरोज युग पर
आली जनोंके मनको तत्काल मोहती है।
देती मृदुल है मचकी बजते हैं चारु नूपुर
सुन कर मराल माला सानन्द कूजती है।
मुखचन्द्रकी प्रभाको पाकर चकोर श्रेणी
गिन कर शरद जुन्हाई अति मग्न हो गई है।
देखो ये भृङ्ग अवली मंदार पुष्प तज कर
मुख गंध बश प्रियाके नजदीक झूमती है।
काली विशाल कबरी झूले के वेग से ये
होकर कमर पै चंचल क्या छवि दिखा रही है।
यह स्वामिनीकी शोभा दिन रात हम निहारैं
दिलमें सप्रेम सबके बस लालसा यही है ॥ ३४ ॥

सरयूके तीर निकुंजोंमें सिय झूल रही हैं झूले पर
सखियाँ हैं झुलाती अति सुख पाती झूले गाती हैं सुन्दर।

पटरी पर खड़ी मचकती हैं बिजलीकी तरह दमकती हैं
हैं देहप्रभामें छुपी हुई मुश्किलसे आती है ये नजर।
कम्पित हैं पीन उरोजयुगल शोभित हैं माला हार तरल
लहँगा सारी फ़र्राते हैं है नूपुर रशनादाम मुखर।
स्तन युग नितम्बका भार महा जाता है देखो नहीं सहा
उससे चम्पककी डाली ज्यों लचती है बारम्बार कमर।
यह शोभाश्रीसियस्वामिनिकी सुखदायिनि दृग अभिरामिनिकी
रक्खा कर प्रेम सदा ही तू अपने मन नयनोंके अन्दर ३५

हे प्राणनाथ अवतो न मचकी लगाइये
लगता है डर मुझे जरा धीरे झुलाइये।
हो आप झूलनेमें चतुर भीरु मैं महा
धीरे झुलाके साथमें मुझको निभाइये।
सारी खसक गई है इसे मैं सँभाल लूँ
इतनी सी देरके तो लिये ठहर जाइये।
कम्पित उरोज होते हैं घबरा रहा है जी
हा हा शपथ है अब तो न झोटा वढाइये।
ये कहके वात कन्तके तनसे लिपट गई
कैसी हुई है शोभा री उपमा न पाइये।
अनुपम नवल किशोर किशोरीकी ये छटा
मानस भवनमें प्रेम निरन्तर वसाइये॥ ३६॥

झूलैं झूला मेरी सीय स्वामिनी
अलबेली छबीली नवेली बनी।

प्यारे झुलावें झोटा बढ़ावें
डरती है श्यामा सलोनी लली
लागी पिय हिय मझार छाई शोभा अपार
साँची उपमा भई मेघदामिनी ।
लागी बयारी खसकी वो सारी
फैली अनोखी प्रभा तनकी प्रेम
बेणी राजैं यों लोल तन पै करती कलोल
खेले चम्पकलतामें ज्यों नागिनी ॥ ३७ ॥

श्रीदशरथनन्दन जनकनन्दिनी झूलत सुन्दर झूलनमें
अति सुन्दर सरयू तीर सुहावन घन प्रमोद वन कुंजनमें ।
गगनके मध्य सघन घन घटा है घूम रही
सलिल के भारके मारे मही पै लूम रही
पिकावली है सुवृक्षोंके मध्य कूज रही
सुगन्धि पुष्पों पै मधुपावली है गूंज रही
अति झिरमिर झिरमिर परत फँवारैं सुख उपजावत लागि तनमें ।
रहा है फूल सखीरी ये कल्पपादप वर
है इसमें पाट का झूला डला महा सुन्दर
जड़ाऊ स्वर्ण की पटरी है लग रही उस पर
रहे हैं झूल लली लाल मोदमें भर कर
अलि मचकी देत ओसरनतैं दोउ करत निहाल विलोकन में ।
असित पयोद को विद्युल्लताकी आभाको
तमाल वृक्ष रुचिर हेम पुष्प मालाको

अनेक काम व रतिकी महान शोभाको
लजा रहे हैं दिखाकर स्वरूप सुषमाको
इनके सम दूसर है न भयो अरु होनहु ना तिहुं लोकनमें ।
वसन सुरंग मनोहर अवध विहारीका
फहर रहा है ये जरकश की चित्रकारीका
लहरिया रंग बिरंगी अनेक धारीका
हवा के झोकों से फ़र्रा रहा है प्यारीका
यह शोभा रुचिर प्रेम युत रखिये अपने मन अरु नयननमें।
॥ ३८ ॥

इति श्रीसीतारामप्रेमप्रवाह चतुर्थतरंग समाप्त ।

॥ श्री ॥

श्रीसद्गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

श्रीसीतारामप्रेमप्रवाह

❀ पञ्चम तरंग ❀
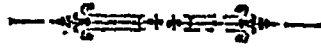
दोहा—प्रेम समेत प्रणाम करि जनकललिहि पिय संग
शरदोत्सव-पद-मय रचत पंचम ललित तरंग ।

शरदोत्सव पद०—

सोहत शरद सजनी आज
सकल निर्मल गगन विलसत निरखि शोभा हीय हुलसत
सब जलाशय कमल अरु कलहंस-संकुल भ्राज ।
नभवितान-सुरत्नजाल-समान उडुगण झलमलाहिं अति
प्राप्त करि षोडश कला निज उदित रजनीराज ।
अति प्रफुल्लित कुमुदिनी प्रमुदित चकोरकबृन्द हैं अति
छिटकि चन्द्रिनि अमिय सिंचित सरिस सब छिति छाज ।
हरित सरयूतीर तहँ सोहत फटिक मणि वेदिका भल
मध्य ताके स्वेत सिंहासन रुचिरतर राज ।
श्वेत भूषण वसन धारण करि बिराजहिं प्रिया प्रियतम
श्रीजनकनृपनन्दिनी रघुवर सकल शिरताज ।
तड़ित वारिद वरण तन मनहरण दंपति अंग अनुपम
निरखि शोभा कोटि रति अरु अमित मनसिज लाज ।

करि धवल श्रृङ्गार नखशिख व्यजन अरु चमरादि लीन्हे
करत सेवन मुदित तन मन नवल युगल समाज ।
निरखि यह छवि अति अलौकिक प्रेम युत सुर सुमन बर्षत
देत आशिष होउ अविचल राज उमर दराज ॥ १ ॥

आज सखि शरद्की रैन अति सोहनी
गगन तल विमल तारावली झलमलत
उदित निशिनाथ अति छिटक रहि चाँदिनी ।
अति रुचिर वेदिका फर्श पय फेन—सित
तिहिं उपरि मंचकी झलमलनि अति घनी ।
श्वेत भूषण वसन सजि मनोहर परम
अहहिं आसीन सिय राम त्रिभुवन धनी ।
अति मुदित सब सभा होय रहि दुहुन लखि
प्रेम यह सुछवि है रसिक जन जीवनी ॥ २ ॥

सुहावन आज शरदकी रैन
छिटक रही चहुँ ओर चाँदनी अति निर्मल सुखदैन ।
हीरनको सिंहासन सोहत उपमा कहत बनै न
राजत हैं पिय प्यारी ता पर लखि लाजत रति मैन ।
निदरत शरद शशिहिं मुख इनके कमल खंजनहिं नैन
अमृत फेन सम श्वेत वसन तन भूषण सब छबि ऐन ।
मन्द हँसनि अति ललित करत बश चित फसि पुनि सुरझै न
दम्पतिकी अवलोकि सुछबि यह प्रेम कौन मोहै न ॥ ३ ॥

निहारो आलि यह शोभा भरि नैन ।

निर्मल सकल गगनतल सोहत उदित चन्द्र सुखदैन
फैल रही चहुँ ओर जुन्हाई लखि उपजत चित चैन।
श्वेत रत्न मय लसत सिंहासन शोभा कहत बनै न
बैठे ता पर धरि अंसन भुज सियरघुवर छवि ऐन।
शशिशोभाहर बदन दुहुनके मद माते दृग पैन
झरत कुसुम से दम्पतिमुखतें कहत मधुर हँसि बैन।
लसहिं बसन अति धवल दुहुनके दुग्धफेन अस है न
असाधारण निरखि लुनाई को बिन मोल बिकै न।
अंग अंगकी निरखि माधुरी लजत अमित रति मैन
परि छवि जाल फसत चित बरबश बहुरि कबहु सुरझै न।
प्रेम शरद झाँकी मन हरणी उपमा दृष्टि परै न
हृदय कमलमें रखिये यहि सम नर तनु फल भल है न ४

सखी हों ऐसी शोभा पर वारी री।
सिंहासन श्वेत मणिनको लसत बिराजै तापै राघो सिय प्यारी री।
धवलतर प्रियतमकी पोशाक धवल त्यों हीं सियजू की सारी री।
विभूषण हीरनके छवि देत शिशिरकरसे है द्युतिकारी री।
सखी सब संगीतक रच रही प्रेम मद छाकी मतवारी री।
प्रेम नित मन मन्दिरमें बसो अनोखी यह जोरी हियहारी री५

देखो शरदनिशा सरसाय रही है।
विमल अकाश उदित पूरण शशि तारावली सुहाय रही है।
सज्जित दिव्य धवल सिंहासन लखि विधिमति सकुचाय रही है।
बैठे हैं श्रीसिय रघुनन्दन अगं अगं छवि छाय रही है।

गान करत मृदु स्वर अलि अवली कोकिलको मद नाय रही है।
नृत्य करहि दामिनि द्युति हरणी बाजन विविध बजाय रही है।
छवि-मद छकी युगल-लोचन-छवि खंजन कंज लजाय रही है।
बतियाँ करत दिये अंसन भुज आलि अवली हुलसाय रही है।
प्रेम धन्य ते जिनके हिय विच यह छवि ललित समाय रही है ६

विराजत हैं पिय प्यारी दोउ।
सजल जलद दामिनि द्युतिहर तनु रूप अनूप नयन भरि जोउ
धवल वसन सोहहिं दोउनके आभूषण सित मणि मय सोउ
साज बजावत गावत सखियाँ नाचत भाव दिखावत कोउ
दम्पति आनन रुचिर चंद्र पर चतुर चकोर प्रेम तू होउ ७

शरदकी रजनी उजियारी
हीरनके सिंहासन ऊपर राजत पिय प्यारी।
श्याम-गौर-तनु-वर्ण मनोहर वसन विभूषण लसहिं धवल तर
काम सबाम अंग अंगन पर जावत वलिहारी।
नयन लजावहिं कंजन खंजन, चन्द्र लुभावन सुन्दर आनन
देत महा छवि छुटी सुहावन अलकैं घुघरारी।
ललित अधर सुन्दर कपोल हैं मन्द हास्य युत मधुर बोल हैं
विकत सखी सब बिना मोल हैं छवि निरखन वारी।
प्रेम युक्त सेवत हैं सखिजन हर्षित मन अतिशय पुलकित तन
पान सुछविरस करि करि नयनन भई हैं मतवारी॥ ८॥

देख सखी भरि नयन सु छवि यह आजशरद दरबार
वैठे रत्नसिंहासन पर हैं नवल युगल सरकार।

गौर साँवरे तन पर सोहहिं वसन बिभूषण श्वेत
परिकर धवल सिंगार किये सब सेवहिं प्रेम समेत ।
श्वेत चमर अरु व्यजन श्वेत हैं सित सुमननके हार
सोहत श्वेत हि श्वेत वस्तु सब श्वेत द्वीप व्यवहार ।
दम्पति को लावण्य और मुख लखि छवि सुधा निकेत
लज्जित है रति मदन गगन पर भयो चन्द्र हू श्वेत ।
सबके हिय विच उठत निरन्तर परमानन्द हिलोर
लखहिं सप्रेम युगल आनन शशि कीन्हे नयन चकोर ६

आज मनोहर राज भवनमें सुखद शरद दरबार। शोभा अपरं पार
गगन विमल सर पुंडरीक सम शरद निशाकर सोहई
लसत स्वच्छ तारावलि मानहुँ फूले कुमुद अपार । शोभा०
दुग्ध फेन सित फर्श लसत है मंच विशद रमणीय है
तिहिं पर राजहिं सिय रघुनन्दन प्रेमिन प्राणाधार । शोभा०
अनुज सखा परिकर सेवत हैं चमर व्यजन छत्रादि लै
राज वर्ग पुरलोग विराजहिं दुहुँ दिशि रचे क़तार । शोभा०
सम्मुख श्रेणी बाँधि युवतिजन करत मनोहर गान है
भाव दिखावत नचत करत हिय अति सुख को संचार । शोभा०
वसन विभूषण श्वेत सबनके सोंज सकल अति शुभ्र है
स्वच्छ चान्द्रिका मध्य दुरत अरु प्रकटत बारम्बार । शोभा०
दम्पति आनन चन्द्र लखहिं सब दृग चकोर करि आपने
प्रेम सहित सब भरहिं सुछवि धन निज मन भवन मझार
शोभा अपरं पार ॥ १० ॥

गज़ल—

अहा मनोरम नवीन अनुपम हुआ शरदका शुभागमन है
अलग हुई है सकल कलुषता अमल अखिल हो रहा गगन है।
घमंड करके गरज रहे थे कड़क रहे थे वो चलदिये घन
जता गये सबको यह कि निश्चय घमंडका फल त्वरित पतन है।
जो घिर गये थे घनों से तारे शशी वो फिर लग गये चमकने
जो दुखमें रखते हैं धैर्य उनके दुखोंका होता सहज दमन है।
न चन्द्रिका है सफेद साड़ी शरद निशारूप नव वधू की
नहीं है उडु मणि विभूषणों के न चन्द्र उसका बिमल वदन है।
शिवार के छलसे है पुलकिता कुमुद कुसुम मिष से फुल्ल नेत्रा
शशीकरस्पर्शसे ये पैदा कुमुदनियों में हुआ मदन है।
निशामें है अति चकोर प्रमुदित मगर हैं कोकी व कोक दुःखित
जो एक को है सुखों का मंदिर वही अपर को विपत भवन है।
कहाँ तो रवि तीक्ष्ण रश्मि वाला कहाँ निशाकर स्वभाव शीतल
तथापि सब कोक कुल का होता उसीको देखेसे दुख शमनहै।
यथा चकोरों को चन्द्र प्यारा व कोककुल को है भानु प्यारा
उपासकों को उपास्य अपना तथा सुखाकर व प्राणधन है।
ये चन्द्रमा है कि श्वेत सरसिज अमल गगन कमलिनीमें फूला
चमक रहे हैं ये उडु मनोहर कि तर रहा शुक्ति शंख गणहै।
घटा दिये जल सरित् सरोंके अगस्त्य ने और उष्णकरने
ये सच है तेजस्वियों को उत्कर्ष कब अपरका हुआ सहन है।
सुहावना है समय शरदका न घाम ही है न धूप ज़्यादा
न शुष्क भू है न कीच ही है न है अमूँभा न खर पवन है।

समझ गये हम असल तो यह है कि आज राघव करेंगे जल्सा
शरद् का छल करके जिससे महफिल सजा रहा यह चतुर्वेदन।
बिछेगी चादर सफेद वो सब जो नीर रहता तो भीग जाती
इसीसे कर्दम विहीन भू युत बना दिया सब पुलिन व बनहै।
गगन नहीं यह विशाल उत्सव वितान शोभन तना हुआ है
नहीं है तारे ये रत्न उसके उन्हींकी सुन्दर ये जगमगन है
हैं वृक्ष से आ रहे नज़र जो ये ढेर पत्रावली के समझो
जो इत्र छिडके गये हैं उनकी महक है ये नहिं त्रिविध पवन है
धवल विछाई गई है चादर ये भूमि पर चन्द्रिकाके छल से
नहीं हैं पुष्पित ये गुल्म बल्ली सभाके घमलोंकी ये फबन है
न चन्द्रमा है विशाल बिजुलीके एक हंडेको तेज करके
लगादिया, उसकी रोशनीसे हुआ प्रकाशित अखिल भुवन है।
सजी हुई देख कर के महफिल त्रिलोकनायक कृपासदनकी
प्रसन्नमन है अखिल चराचर मही पे छाया हुआ अमन है।
है जिसकी महफिल सजानेवाला विरंचि ऐसे समर्थ प्रभुका
तू प्रेम बन जाय दास सच्चा तभी तो तेरा सयाना पन है १

देखो सखी शरद्का दरबार हो रहा है
आनन्दमें सखीजन शर शार हो रहा है।
चादर बिछी हुई है अत्यंत श्वेत कैसी
ज्यों चन्द्ररश्मियोंका अवतार हो रहा है।
दोनो विराजते हैं हीरों के मंच वर पर
सुमनों का सब तरफसे उपहार हो रहा है।

पहने हुए हैं दोनों पोशाक अति धवल तर
सितपुष्प श्वेतमणिमय शृङ्गार हो रहा है।
त्योंहीं सखी जनोंके भूषण वसन धवल हैं
सब श्वेतद्वीपका सा व्यवहार हो रहा है।
करती हैं नृत्य ललना उनकी मुखर हैं रशना
मंजीर नूपुरोंका झंकार हो रहा है।
सारंगियाँ व वीणा कल वेणु वजरहीं हैं
लय तालसे मुरजका धधकार हो रहा है।
जो गान कर रही हैं उनकी अवाज़के सँग
आनन्दका अधिकतर संचार हो रहा है।
प्यारीकी देखकर छवि लज्जित है रति विचारी
प्यारेकी छवि से लाज्जित अति मार हो रहा है।
ग्रीवामें है प्रियाके प्रियतमकी बाँह आली
धारण तमालदलका या हार हो रहा है
प्यारीके मुख पै प्रियतम निज दृष्टि हैं लगाये
प्यारे के मुख पै उनका दृगवार हो रहा है।
कुछ कह रहे हैं प्यारे देखो मगर उधर से
कुछ मन्द मन्द हँसकर इनकार हो रहा है।
जीमें जो आये समझो इस प्रेमका हृदय तो
शृङ्गार रसमें फसकर लाचार हो रहा है॥ १२॥

शरदकी देखिये शोभा अहा क्या ही मनोहर है
जलाशय हैं सकल निर्म्मल विमल अत्यन्त अम्बर है।

बिमल आकाशमें तारावली अति झलमलाती है
सकल अपनी कला लेकर उदित राका—निशाकर है।
विधाताने सुधालेपन से सब जग कर दिया धवलित
कि उज्ज्वल चन्द्रिका फैली हुई सारी मही पर है।
कनक मन्दिरका आयत छत है शोभित देखिये कैसा
गया जिसमें बिछाया फर्श कोमल अति धवल तर है।
सुसजित मध्यमें है चारुतर अति दिव्य सिंहासन
लगी गद्दी व मसनद शुभ्र पयफेनोंसे बढ़कर है।
किये शृङ्गार शुभ आसीन हैं अनुपम प्रिया प्रियतम
युगल तनु कान्तिसे लजित तड़ितयुत स्निग्ध जलधर है।
वसन हैं श्वेत भूषण भी सकल हैं श्वेत रत्नोंके
हृदय पर दम्पतीके श्वेत तर सुमनोंकी चोसर है।
धवल क्षीराब्धि फेनों सम किये भूषण वसन धारण
प्रिया प्रियतमकी सेवामें उपस्थित सर्व परिकर है।
निशाकर—दर्पहारी छत्र हैं लेकर खडे कोई
किसीके है व्यजन करमें किसीके करमें चामर है।
सखी जन नृत्य करती है विविध बाजे बजाती हैं
परम मधुर स्वरोंसे गान करती अति सरसतर है।
प्रतिष्ठित पौरजन नृप वर्ग श्रेणी बद्ध शोभित है
परम आनन्द से हर एकका पूरित हृदय सर है।
मुदितमन विप्रवर मुनिजन शुभाशीर्वाद देते हैं
सुकविजन भाटकुल विरुदावली वर्णनमें तत्पर है।
सिया रघुनाथ के इस शुभ शरद दरबारके अन्दर

हरेकको मिल रही देखो परम अभिमत निछावर है।
युगल पद पंकजों की भक्ति अविचल माँगले तू भी
सफल करले स्वजीवन प्रेम यह अति ही सु अवसर है१३

युगल बिराज रहे हैं शरद जुन्हाईमें
कनक भवनकी विशद रत्नअंगनाईमें।
सजा हुआ है रुचिर श्वेतरत्न सिंहासन
महा है श्वेतता मसनदमें और तुराईमें।
सफेद वस्त्र व भूषण सजेहूए परिकर
लगा हुआ है ये दम्पतिकी सेवकाईमें।
धवल वसन व विभूषण ये दम्पती तनके
दिखा रहे हैं सु छवि गौर श्यामताई में।
हरेक अंगकी शोभा है अति असाधारण
सवाम काम बराबर नहीं लुनाईमें।
वो चित्त मीन कभी प्रेम छुट नहीं सकते
फसे हैं इनकी जो छवि जालकी गुथाईमें॥१४॥

सुन्दर शरदकी आज निशा है सुहावनी
अम्बर अमल है भूमि पै छाई है चाँदनी।
निर्म्मल सरितवरा का है पावन परम पुलिन
हीरोंकी मन हरण है रुचिर वेदिका बनी।
शशिकान्तका है तख्त मनोहर सजा हुआ
फैली हुई है इसकी किरण जालिका घनी।
बैठे हुए हैं उस पै पिया मेघ द्युतिहरण

आसीन स्वामिनी हैं तड़ित द्युति लजावनी।
तिरछी भवें हैं कंज से लोचन विशाल हैं
करती ग़ज़ब है इनकी हँसी और चितवनी।
इनके पदारविन्दों पै मन अपना भृङ्ग कर
निश्चय बिचार प्रेम हैं तेरे यही धनी॥ १५॥

सोहै शरद्निशा सुख दैनी री
फूले कुमुद हैं स्वच्छ है सरयू सरित्का जल
है चन्द्रिका समान विमल तीरभूमि तल।
सरयू सरित्के नीर सदृश है गगन विमल
जिसमें उदित निशेश है लेकर कला सकल।
कैसी लसत ललित उडुश्रेणी री। सोहै०
पयफेन शुभ्र फर्श मृदुल है बिछा हुआ
सित रत्नमंच उस पै है सुन्दर सजा हुआ।
इस पर प्रिया समेत हैं प्रियतम विराजते
छवि देख कर सवाम मदन है लजा हुआ।
ऐसे कमल नयन मृगनयनी री। सोहै०
दोनोंके वस्त्र श्वेत हैं भूषण भी श्वेत हैं
परिकर भी श्वेत वेष हैं शोभा निकेत हैं।
दम्पतिके हाव भाव मनोहर निहार कर
दर्शक समूह हो रहे सारे अचेत हैं।
लागी चितवन हिय बिच पैनी री। सोहै०
सखियाँ खड़ी अनेक हैं कल गान कर रही

शोभा–सुधा है प्रेम सहित पान कर रही ।
मधुरस्वरों से तान अनोखी हैं भर रही
श्रवणोंको सुखका ये हैं महादान कर रही ।
नाचै शशि वदनी पिकवैनी री । सोहै०
आनन युगल अनूप परम छवि निवास है
चितवन हँसीमें चित्त ठगोरीका वास है ।
इनका विलोकता जो दृगोंसे बिलास है
बनता वो प्रेम इनका बिना मोल दास है ।
इनकी उपमा है नहिं व्हैनी री । सोहै० ॥ १६ ॥

यह शरदनिशा सुखदायिनि है, अति विमल चाँदनी छिटकरही ।
है विमल चन्द्रमा तारागण, अतिललित प्रफुल्लित कुमुद सुमन
सब गुल्मलताद्रुम अति शोभन, भूषित है नभ जल सकल मही ।
अति आयत स्फाटिक वेदी पर, हीरोंका है सिंहासन वर
उस पर वैठे हैं रूपछके, सिय रघुवर नव दुलहा दुलही ।
पौशाक धवलतर पहने हैं, सित रत्नों ही के गहने हैं
अति निर्म्मल शरद जुन्हाईमें, इनकी किरणें हैं छलक रही ।
सब सित शृङ्गार सजे परिकर, है दम्पति सेवामें तत्पर
युगरूप पयोनिधिमें सबके, मन नयनोंने झषरीति गही ।
सहचरियाँ वाद्य बजाती हैं, नचती हैं कलरव गाती हैं
मधुरस्वरसे लज्जित होकर, कोकिल वृन्दोंने मौन गही ।
यह दम्पति दामिनि मेघ वरण, रति मन्मथ मोहन चित्त हरण
मन मन्दिरमें सर्वदा बसैं, अभिलाषा है बस प्रेम यही ॥१७॥

इति श्रीसीतारामप्रेमप्रवाह पञ्चमतरंग समाप्त ।

॥ श्री ॥

श्रीसद्गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

श्रीसीतारामप्रेमप्रवाह

❀ षष्ठ तरंग ❀

दो० अब याहि षष्ठ तरंगमें जनकलली पद ध्याय।
शुभ विवाह शृङ्गार पद प्रेम कहत है गाय॥

पद्:-

रघुकुल कुमुद मयंक लखु सजनी
मरकत मृदुल कलेवर लोचन कमल विलोकनि बंक, लखु सजनी
उर आयत भुज युगल पीन है सूक्ष्म मनोहर लंक, लखु सजनी
मृदु मुसकान विलोकत हियमें अंकित व्है कछु अंक, लखु सजनी
इनकी उपमा त्रिभुवनमें नहिं मदन बापुरो रंक, लखु सजनी
नृप समाजमें सबको मद मथि तोरहिं धनुष निशंक, लखु सजनी
रूपवती सुकृतिनि सियसमको जिहिं भरिहैं यह अंक, लखु सजनी
प्रीति सहित करि पान अधर रस लै पौढे परियंक, लखु सजनी
दृग भरि प्रेम निहारहु इनको वदन इन्दु अकलंक, लखु सजनी १

निरखु लवले नवल नलिन दल नयनहीं।
कोटि रतिनाथ अँग अंग पर वारिये
कहत इन सरिस वर वदन सोहै नहीं।
नवल यौवन महारूप मदमत्त ये

इनहिं भरिनयन लखि कोन मोहै नहीं ।
रुचिर मृदु हास्यके पाशमें जो फसे
कोटि हू यतनतैं कबहु निकसै नहीं ।
अखिल शोभा सदन वदन विधु निरखिके
कहहु केहि को हृदय कुमुद विकसै नहीं ।
प्रेम दृग मग इनहिं आनि हिय भवनमें
रखहु री लाभ हिं सरिस कछु है नहीं ॥ २ ॥

हाँ निहारन नगर पधारे हाँ निहारन नगर पधारे ।
राजिवलोचन राज सुवन त्रिभुवन उजियारे री । निहारन०
नाम राम अरु लखण सुहाये, जे मुनिवर कौशिक सँग आये
भये विदेह विदेह नयन भरि जिनहिं निहारे री । निहारन०
यह सुनि निज निज भवन काज तजि, देखन हेतु तुरन्त चले भजि
मिथिला वासी सकल युवा बूढे अरु बारे री । निहारन०
जब यह बात तियन सुन पाई, जो जिहिं भाँति रही तस धाई
चाह चढी चित लखन हेतु अवधेश दुलारेरी । निहारन०
कोउ मँहदी इक हाथ लगाये, कोउ अंजन इक नयन अँजाये
चढी अटा पर एक वाँह कोउ कंचुकि धारे री । निहारन०
हाथ लिये कोउ मुक्ता माला, सारी उलटि ओढि कोउ बाला
चली विलोकन केश पाश कोउ अर्ध सँवारे री । निहारन०
मुग्धा मध्या प्रौढा तियवर, चढी भवन शिखरनके ऊपर
केतिक लागी भवननकी खिरकियन सहारे री । निहारन०
मणिमय सुन्दर मन्दिर राजहिं, तिनपर ललना गण अस भ्राजहिं

इन्द्र धनुष पर लसहिं अमित दामिनि तनु धारे री। निहारन०
रत्नभवन खिरकिनके माहीं, जिमि मुख दिपत जात कहि नाहीं
विधि विरचे जनु बहु विधु रविकर पुंज मझारे री। निहारन०
सब तिय रघुबर रूप सुहावन, अनिमिष होय लगी अवलोकन
परम तृषित जनु अमिय पिअत सुधि सकल विसारे री। निहा०
निरखि महाछवि अति अनुरागी, यहि विधि कहन परस्पर लागी
सखी अहहिं यह कोटिकाम मद गंजनहारे री। निहारन०
दीखत जिनकी उपमा नाहीं, हिय बिच राखिबे योग्य सदाही
इनके सुन्दर चरण कमल कोमल अरुणारे री। निहारन०
सुन्दर जंघ जानु उरु कटि अति, नाभि परम गंभीर विमोहति
विलसत वसन सुरंग मनोहर तनु अनुहारे री। निहारन०
उर आयत भूषित वनमाला, पीन मनोहर बाहु विशाला
कटि निषंग कर धरे धनुष सायक अनियारे री। निहारन०
पुष्ट अंस ग्रीवा हनु नीकी, अरुण अधर छवि द्विज अवलीकी
निरखत ही बिन मोल बिकत सब निरखनहारे री। निहा०
कल कपोल दमकत श्रुतिभूषण, नासाकी सुषमा कहि आव न
लोचन ललित विशाल लसत पैने कजरारे री। निहारन०
भ्रकुटी वंक विशाल भाल पर, तिलक रेख झलकत अति सुन्दर
अहि छोनन सम अहहिं चिकुर कारे घुँघरारे री। निहारन०
मुख समता निशिकर नहिं पावत, सदा एक रस सबहिं सुहावत
लसत लुनाई जाहि कोउ नहिं वर्णनहारे री। निहारन०
जग सुन्दर शिरताज कुँवर वर, धरे शीशपर ताज मनोहर
श्यामल गौर शरीर महा छवि मद मतवारे री। निहारन०

एकहिं एक कहत हे भोरी, यों जानि झाँकु कुँवर की ओरी
अब सुख होत बीति हैं पै निशिं गिनि गिनि तारे री। निहा०
एक एक सन बोली बतियाँ, री निर्लज्ज ढकै किन छतियाँ
का कहि है तोहि आवत जावत निरखनहारे री। निहारन०
कहत एक हे लज्जावारी, आज गई कहँ लाज तिहारी
सारि हु नाहिं सँभाराति ढाढी शीश उघारे री। निहारन०
एक कहत लागों तव चरणन, करन देहु मोहूको दर्शन
उकासि उकासि इमि बार बार मत आव अगारे री। निहारन०
एक कहत हैं श्याम कुँवर ये, योग्य अहहिं श्रीजनकलली के
सुनि बोली सब सत्य अहहिं यह बचन तिहारे री। निहारन०
भंजैं शंभु शरासन ये ही, व्याहैं राज कुँवरि वैदेही
विधिसन याचत हैं यह अंचल सकल पसारे री। निहारन०
पुरजन प्रेम निरखि रघुनन्दन, आनँदकन्द भये पुलकित तन
पूरणकाम राम अन्तरगति जाननहारे री। निहारन०
कोमल कुसुम अञ्जली डारी, ठाम ठाम आरती उतारी
तन मन धन पुरवासिन न्योछावरि करि डारे री। निहारन०
इमि प्रभु पुर अवलोकन कीन्हो, नयनन फल पुर वासिन दीन्हो
धनुमखशाल विलोकन पुनि सादर पगधारे री। निहारन०
निरखि तहाँकी परम निकाई, श्रीमुख करि बहु भाँति बडाई
पुरजन मन युत प्रेम सहित गुरु निकट सिधारे री। निहारन०
॥ ३ ॥

ये श्यामल गौर किशोर कुँवर दोउ कौशिक मुनि सँग आये हैं
रघुवंश-विभूषण भूप मुकुटमणि दशरथ सुवन सुहाये हैं।

मयूरकंठ प्रभा हर है जिनका सुन्दर तन
सखी री नाम है इनका श्रीराम अति शोभन
जो इनकी साथमें गोरे शरीर वाले हैं
ये इनके वन्धु हैं छोटे सुनाम श्रीलछमन
कौशल्या रानी और सुमित्रा पुण्यवतिनके जाये हैं। ये०
हैं वंक वंक विलोकन जिधर पसरती है
उसी तरफको ये तीरोंका काम करती है
मधुर मधुर ये है मुसकान देखिये कैसी
निहाल करती है बरबश हृदयको हरती है
इन निज छवि मदतैं नर नारिनके सहज अपान भुलाये हैं। ये०
हरेक अदा है निराली परम मनोहर है
हरेक अंग है अनुपम महान सुन्दर है
अहो अजीव ही लावण्य इनके तन पर है
निसार कोटि निशाकर रुचिर वदन पर है
इन निज शोभातैं हे अलबेली वहु रतिनाथ लजाये हैं। ये०
सियाजी राज्यदुलारीके योग्य देखो गर
तो एक है यही श्यामलकुँवर परम सुन्दर
बडी खुशी हो जो संयोग यह करे ब्रह्मा
विलोकैं व्याहका आनन्द हम नयन भरकर
इनकी गठजोरी देखनको सखि हमरे दृग् अकुलाये हैं। ये०
अपर सखीने कहा बात यह श्रवण करके
करो न आली री संदेह प्रेममें भरके
हमारी राजदुलारी सिया नवेलीका

विवाह होगा निसंदेह साथ रघुवरके
सिय चपला हेतु कुँवर श्यामलघन प्रेम विरञ्चि वनाये हैं
ये० ॥ ४ ॥

हमारो मुख भोरी है चकोरी चन्दा नाहिं
भौंह सोह यह मोह तजहु तुम भ्रम न करहु मृगकोरी। चन्दानाहिं
मुद्रित सरसिज विघटित कैरव परम प्रकाशित कुंज भई
यह सुख झाँहीं जानि जुन्हाई फिरहु संग जनि दौरी। चन्दानाहिं
मुक्तावली नहीं द्विज श्रेणी व्याली नाहीं वेणी री
काहे फिरत हमारी सँग हो दौरी हँसी मोरी । चन्दा नाहिं
विम्ब नहीं यह अधर शुकी यों सघन भवन आराममें
विहरत कौतुक करत खगनको प्रेम विदेहकिशोरी। चन्दा नाहिं५

कुन्दकली अवली न गिनो रद सुन्दर हैं यह चारुदतीके
हे अरुणाधर धोके रहो जनि प्रेम गुलावनकी पँखरीके
पुष्प सुवास नहीं मुख गंध है कंज नहीं मुख देखहु नीके
हे अलिमाल पराहु पराहु न गैल रहो मिथिलेशललीके ६

—गज़ल—

वे राजकुवर दोनों इस वागमें आये हैं
छबि जिनकी निरखकर सब विनमोल विकाये हैं।
हैं एक सजल जलधर द्युति श्याम परम शोभन
बिजलीसे अपर गोरे सब भाँति सुहाये हैं।
किस भाँति करूँ वर्णन मैं उनकी मधुरताका
शत कोटि मदन सुषमा पदनखमें वसाये हैं।

हैं बंक भवें उनकी जादूकी भरी चितवन
मुसकान निरख करके हम होश गँवाये हैं।
देखाहै उन्हें जबसे कुछ और न भाता है
वे चित्तहरैया ही नयनोंमें समाये हैं।
श्रीराजललीजूको दर्शनकी बढी इच्छा
आलीके वचन शुभ ये अति चित्तमें भाये हैं।
आगे उसी आलीको कर जल्द सिधारी हैं
वहु राजमरालोंको निजगतिसे लजाये हैं।
आये न नज़र जब वे तब नयन हुए व्याकुल
इतनेमें लताओंमें सखियोंने दिखाये हैं।
श्रीरामको जब देखा सुध भूल गई सियजू
निज नयन चकोर उनके मुखशशिके बनाये हैं।
आपसमें मिली अँखियाँ जब रामसियाजीकी
वो उनपै हुए मोहित वे उनपै लुभाये हैं।
इस भाँति प्रथम मिलना यह प्रेय निरख करके
फल पूर्ण स्वनयनोंके अलिवृन्दने पाये हैं ॥ ७ ॥

करती है सितम देखो हर एक अदा इनकी
हरती है हृदय नूतन यौवनकी छटा इनकी।
सुकुमार परम सुन्दर घनश्याम वरण तनु है
पलकोंको झपाती है मुख चन्द्र प्रभा इनकी।
आते ही नज़र करती घायल है कलेजे को
तलवार अनोखी है भ्रू युग्म लता इनकी।

उपचार करो लाखों पर वे न बचें हरगिज़
डसजाय जिन्हैं काली ये जुल्फेदुता इनकी।
मुसकान मधुर पर हैं बलिहार अमित मनसिज
जादूकी भरी चितवन है होशरुबा इनकी।
है प्रेम यही इच्छा ये श्याम कुँवर वर हो
मिथिलेशलली दुलही हो प्राणप्रिया इनकी ॥ ८ ॥

ये ही श्रीमिथिलेशदुलारी।
आई पूजन हेतु शिवा कहँ करत फिरत उजियारी।
दौरत सँग सँग अमित चकोरी वदन चन्द्र गनि इनको
मुख सुवास बश अलि न तजत अलि यदपि निवारत तिनको।
लज्जित चम्पक कुसुमश्रेणी देह प्रभा इनकी तैं
सहस गुनी सुकुमार मनोहर मदनवधू अरु श्रीतैं।
पुण्डरीकदल सदृश नयन युग काम धनुष सी भौंहैं
दशनावली कुन्दकलिका सी अधर बिम्ब से सोहैं।
कारे घुँघरारे कच इनके जनु शिवार छबि सरकी
अतिशय लघु लागत है इनको उपमा मधुप निकर की।
असाधारण सुषमा इनके अंग अंगसों बरसै
है यह बात अनोखी इनको मध्य भाग नहिं दरसै।
नखतैं शिख लों सकल अलौकिक इनकी सुन्दरताई
तातैं निश्चय होत यही यह विधिकी नहीं बनाई।
हमहू अपनी चित्तवृत्ति इनके अर्पण कर दीन्ही
मूरति मधुर मनोहर इनकी अपने हिय धरि लीन्ही।

कहि न सके आगे कछु राघव व्है आयो गद्गद् स्वर
विकसित नयन भये पुलकित तन काँपन लाग्यो थर थर।
ज्यों त्यों धीरज धारण कीन्हो पुनि अपने मन माहीं
सानुज प्रेम चले रघुनन्दन निज गुरु कौशिक पाहीं ॥९॥

श्रीराम चले धनु तोरनको
भानु उदय उडुगण इव नाश्यो तेज नृपति बरजोरनको।
भयो हितुनके हिये परम सुख मेघ चढ़े जिमि मोरनको।
तुरत उठाय चढाय लियो प्रभु श्रम नाहिं भयो मरोरनको
खैंचि तोरि डार्यो जब तब भयो शब्द प्रलय घनघोरनको
सुनि कठोर रव दिग्गज चौंके कम्प भयो रवि घोरनको।
परिजन युत नृप रानी हर्षे सुख उपज्यो तिमि पौरनको।
वर्णन होय सकत नाहिं सिय हिय आनँद उदधि हिलोरनको।
प्रभु मुख शशि लखि प्रेम भयो सुख प्रेमीवृन्द चकोरनको१०

चली पहिरावनको जय माल
संग सखी बहु उमा रमासी गावत कलध्वनि गीत रसाल।
लजत अनेकन राजहंसिनी अवलोकत अति सुन्दर चाल
पिय ढिंग जाय निहारि महा छवि विसर गई तन सुधि तत्काल।
पुलकित शिथिल प्रेम वश तनु भो स्वेद जालिका झलकी भाल
सखी कीन्ह जब सावधान तब सकुचि उठाई बाँह मृणाल।
पहिनी ललकि नमित ग्रीवा करि चतुरशिरोमणि दशरथलाल।
जन हर्षत आराध्यहिं पाये प्रभुहिं भयो तिमि हर्ष विशाल।
दुन्दुभि जय धुनि नगर गगन बिच बर्षत सुर सुमननके जाल।

भूरि भाग्य मिथिलाके बासी लखि सप्रेम छबि भये निहाल॥११॥

सिया रघुनन्दन भाँवरि देत
गौर श्याम तन लसत दुहुनके सुन्दरता लावण्य निकेत।
मौर रुचिर विच रत्न जगमगाहिं अरुण हरित अरु पिंजर श्वेत।
चोरत चित्त परस्पर चितवनि अति सुख लज्जा चाह समेत।
करि करि पान परस्पर छबि रस मानहुँ दम्पति भये अचेत।
सब रनिवास निहारत सानँद लोचनको अनुपम फल लेत।
सुर वर वधू तिया तन धरि धरि आईं कौतुक निरखन हेत।
वर्षत सुमन देव जय धुनि करि हनत नगारे हर्ष समेत।
कहत सप्रेम धन्य वर दुलही समधी पुरजन सकल जनेत॥१२॥

नयन भरि निरखो री छबिऐन
राज दुलारे लोचन तारे प्यारे दृग सुख दैन।
नाम राम अभिराम श्याम तनु समता मेघ लहै न
पूर्ण निशाकर शोभन आनन नवल कमल दल नैन।
बसन सुरंग अंग अनुहारी दामिनि या सम है न
विविध विवाह विभूशण भूषित वाणी वरणि सकै न।
मस्तक पर मणि मोर दिपत जिहिं चितवत दृष्टि टिकै न
मुक्ता माल विशाल उरस्थल लखि अलि को ललचैन।
महँदी रंजित कर पद सोहत उपमा कतहुँ मिलै न
कजरारी चख पैनी चितवन काके चित्त चुभै न।
मन्द हास्यकी पाश फसै चित बहुरि कबहु सुरझै न।
कच कारे निरखत ही हियमें डसत करत बेचैन।

रूप अनूप निहारत मोहत अगणितशत रति मैन
प्रेम विलोकि अनूप माधूरी को बिनु मोल बिकै न॥ १३ ॥

दोहा–चरण कमल कोमल अरुण यावक युत छवि देत
मीन ध्वजादिक चिन्ह युत चितवत हिय हरिलेत।
ललित अङ्गुली चरण मृदु नख छवि कही न जाय
अरुण जलजदल मृदुल पर उडु जनु बैठे आय।
ललित क्षीण कटि पर कसे पीत दुकूल बनाय
नील जलदकी रेखपर दामिनि लपटी आय।
रुचिर नाभि गम्भीरता कही कवन पै जाय
पर्‌यो प्रेमको मन तहाँ कढत न कोटि उपाय।
त्रिबली मनहुँ सुहावनी छवि सरिताकी धार
बहै जासु मन प्रेम पुनि व्है न तासु निस्तार।
सुन्दर उदर विशाल हिय पीन भुजा भुजमूल
ललित कंठ सुन्दर चिबुक कहों काहि सम तूल।
अरुण अरुण सुन्दर अधर जिनकर यह दृढ नेम
बरबश अपने वश करत सपने हु निरखे प्रेम।
कीर चंचु सम नासिका भाल तिलक द्युतिवन्त
उपमा सब फीकी लगत निरुपम प्रेम कहन्त।
मतवारे अंजन अँजे रतनारे दोउ नैन
विष शर से हियमें लगें कसकैं दिन अरु रैन।
युगल भ्रूलता ललित अति श्रुति पर्यंत विराज
धरि राखे इक ठौर जनु मदन चाप रसराज।

अलक सहित छवि देत इमि कोमल ललित कपोल।
प्रेम सुधाकर मध्य जनु अहिगण करत कलोल ।
शिर पर सोहत प्रेम अस विविध मणिनको मोर
जेहि आगे लागत सखी भानुप्रभा हू थोर ।
मोरप्रभा भूषणप्रभा अंगप्रभा रहि फैल
इन्द्र धनुष ही प्रेम जनु सोहत घनकी गैल । १४ ।

देखो री राम वदन कैसो सुन्दर सोहैं
तीखे है नयन अनोखे दोउ कटीली भौंहैं ।
मृदु मृदु हँसनि अमिय रस वरसनि चितवनि प्रेम अनोखी
होत निहाल वह यह जाहि जोहैं । देखोरी ॥ १५ ॥

कैसे हैं आली प्यारे राघोजीके तीखे नैन
चितवनि मनसिज बाण अनी सम पार होत हैं हीके। तीखे नैन
जाके हिय यह लागैं ताकी नींद भूख सब भागैंरी ।
तजि कुल कान सयान प्रेम वह बिके हाथ इनही के। तीखेनैन१६

प्यारी कैसे श्रीराघोजीके नैन हैं री ।
लागे हैं मेरे हे सजनी जबसों री चैनन आवै जी घबरावै
भावै नाहीं गेह मेरे पीर है भारी कैसेश्री राघोजीके नैन हैं री ।
मृदु मुसकान युत बंक चितवनकी कसक छिन छिन अधिकात
नेक हू घटत नाहीं कहा करों प्रेम अब करि करि अमित
उपाय हों हारी कैसे श्रीराघोजीके नैन हैं री ॥ १७ ॥

हे आली री कैसो है टोना श्रीराघवके रँगीले नयनन माहीं
हरण चित चैनन माहीं कुसुम शर पैनन माहीं। हे आली०
हरण करत त्वरितहि हिय उनके जिनहि लखैं जे इनहिं लखैं
पल हू कल नहिं तिनहिं परै री अपने तनकी मनकी घरकी
कुलकी लज्जाकी रहै सुधि नेकहु नाहीं। हे आली०
जुल्म करत नागिनिसी जुल्फैं जोहत ही मन विष पूरैं
दर्शनकी अति लहर उठै री प्रेम अनेकन जन्त्रन
मन्त्रन तन्त्रन बूटीतें सरै कछु काज हु नाहीं। हे आली०॥१८॥

अनोखे नयना हैं तेरे कोशलराजकुमार
खंजनमीनकमलबरछीसम इनहिं कहतहैं कविजन बिना विचार
खंजन करत निवास विपिनमें सदा रहहिंयह आननचन्द मझार
बंसी बिंधे देखियत मीनन अरे इन्होने बेधे हिये हजार
कमल होत केवल अरुणारे वे कहँ कहँ ये श्वेत श्याम रतनार
बरछी को यदि घाव लगेतो विशेष तनमें रहै मास द्वै चार
नयन घाव लगि प्रति दिनबाढै भरै न हियमें कसकै बारम्बार
कोउअसकहतचोरचितके दोउ अहहिं ललाकेलोचन ये कजरार
चोर करै चोरी चुपके सी हाय नयन तो लूटैं धडै बजार
मयन बाण सम पैन नयन तव प्रेम हमारे जीवन प्राणाधार
॥ १९ ॥

बलिहारी तिहारे नयननकी
उपमा कुरंगनेत्र कमल और मीन हैं
छवि देखकर दृगोंकी हुए छीन दीन हैं

इनमें से एक तो है बयाबाँमें जा छुपी
लज्जित हो दो अगाध जलाशयमें लीनहैं
समता करत त्रिलोक विजयकर रुचिर स्मरशर पैनन की ।
जिसके हृदय पै इनका तनक वार होगया
बिन मोल बिकके आपका लाचार होगया
आनन्द मद तरंगमे शरशार होगया
निःसार उसको विश्वका व्यवहार हो गया
चाह रही तिहिं एक प्रेम बस तव मूरति अवलोकनकी ॥२०॥

प्यारे राघव शोभाके निधान
धनुबाण केहि हेतु राखत हो नयना तोरे बानके समानभ्रू कमान
येही बेधत हैं प्रान, प्यारे राघव शोभाके निधान ।
मदन मद कदन शोभन वदन की ये देखत मधुर मुसकान
कैसो हू सयानो होय बिसरै अपान ज्ञान
प्रेम कहत ताकी छुटै कुल कान,प्यारे राघव शोभाके निधान २१

हिय चुभि जैहैं जो राघव नैन
आह शब्द बिहाय कछु मुखतैं न कढिहैं बैन ।
खान पान अपान सुधि रहिहै न परिहै चैन
नींद आवैगी न तलफत बीतिहैं सब रैन ।
आन अमित उपाय करि करि थकहुगी सरिहै न
प्रेम तोहि बिन दरस मुग्धे पलहु कल परिहै न ॥ २२ ॥

हमारी दिशि हेरोजी राघोजी ।
श्रीराघोजी बंक विलोकनि देखि नजर जनि फेरोजी राघोजी।

श्रीराघोजी चख झष हित यह रूप सलिल बहुतेरो जी राघोजी।
श्रीराघोजी मन्द मन्द मुसकाय कियोहै चितचेरो जी राघोजी।
श्रीराघोजी मन भावै सोही करहु रखहु नित नेरो जी राघोजी।
श्रीराघोजी बहुत दिननतैं उजरि रह्यो है हिय खेरो जी राघोजी।
श्रीराघोजी प्रेम वेग ही आय करहु अब डेरो जी राघोजी ॥२३॥

दशरथराज दुलारो धनुवारो लागै प्यारो री सखी जग उजियारो
सजलजलदतनुकारो सियप्यारोकामसगारोरी सखीजगउजियारो
रूप गरब गरबीलो मतवारो चखतारो री सखी जग उजियारो
विनदेख्यापलपलभारयोजगसारोलागैखारोरीसखीजगउजियारो
कोईमुनैसमझोदिवानीकोईस्याणीजोबिचारोरीसखीजगउजियारो
मैंतोयाँपैप्रेमतनमनधनवारदीन्होम्हारोरीसखी जग उजियारो
॥ २४ ॥

हो नवल वनाँ श्रीराम थाँनैं नैणा माहीं राखाँ जी
सुन्दर श्याम शरीर छै जामो सोहै पीत
घटा दामिनीकी छटा लीन्हीछै ये जीत। थाँनै नैणा माहीं राखाँजी।
सेहरियाकी छवि घणी भाल तिलक की रेख
तुर्रा अर सिरपेचनै कुण नाहिं मोहै देख। थाँनैं०।
आखियाँ पैनी मद भरी कोमल ललित कपोल
देख्याँ मृदु मुसकान या कुण न विकै बिनमोल। थाँनै०।
प्रेम हुया बस आपके म्हे सुध बुध बिसराय
भुरकी पटकर रूपकी चित थे लियो चुराय ॥थाँनै०॥ २५॥

बनाजी म्हाँनै थाँकी शोभा लागै प्यारी जी

बाई सियजी रा भरतार म्हानै थाँकी शोभा लागै प्यारी जी बना
बनाजी तिलक मनोहर केशर खोर सुहाई जी
सोहै सिर मन्दील सुरंग,मोत्या का तुर्रा की छबि छै न्यारी जी बना
बनाजी सेहरियो सुबरण को सुन्दर सोहैजी
जीमेंगुथरह्यारतनअमोलझलककपोलाँ ऊपरछै सुखकारीजीबना
बनाजी होठाँ ऊपर वीडीकी छै लाली जी
भावे म्हाकाँ हिवडाभायँ तीखीतीखी ये आंखियाँ कजरारी जीबना
बनाजी रूप अनोखो थाँको देखर मोह्या जी
राजादशरथजीका लाल प्रेम आप पर म्हे जावाँ बलि हारी जी बना
॥ २६ ॥

प्यारा म्हाँका नैणारा थे तारा छो रघुनाथ
नैणा माहीं थाँने राखस्याँजी म्हाँका राज ।
थाँनैं बिन देख्याँ नींद न आवै राजिवनैन
ना कुछ सुहावै थाँ बिना जी म्हाँका राज ।
म्हाँनै अब छोड्याँ प्रेम न सरसी राजकिशोर
चेरा बिन दामाँ हो चुक्या जी म्हाँका राज ॥ २७ ॥

सुणज्यो रघुराई गाली गावाँ जी थानै साँवरिया
श्याम हुयो क्यों गात गोरा तात कोशलनाथ थाँका
गोरी जननी जी रूप उजागरिया । सुणज्यो०
जाण गया म्हे प्यारा जग उजियारा थे छिणगारा त्योंही
तीखी छै अवध नगरकी नागरिया । सुणज्यो०
खीर खार सुतजाया यों बहकाया भला भ्रमाया भोला
ब्याही छै ब्यायण सब गुण आगरिया । सुणज्यो०

प्रेम वधाई पावाँ ओर न चाव्हाँ संग ले चालो म्हाँनै
चेरा कर राखो रघुवर रावरिया । सुणज्यो० ॥ २८ ॥

गजवी नणदोई कामण कर गइ जी थाँकी मंद हँसी
देख हुया वेचेन तीखा नैन हो सुखदैन थाँका
म्हाँकै हिय कसकै चितवन वाण जसी । गजवी०
यू हीं होठ गुलाबी बीड़ी चावी आई और खरावी
युवती जन लेखे हो गइ मारक सी । गजवी०
पतली कमर लचीली भोंह कटीली हो अलबेल्या थाँकी
मूरत मन मोहन म्हाँकै हीय वसी । गजवी०
कय्याँ गावाँ गारी अवधविहारी सुधवुध भूल्या सारी
हियमें डसगइ जी जुलफ्याँ नागण सी । गजवी०
वरजो लोग हजार चालाँ लार रोक्या प्रेम न रहस्याँ
कीन्हो जिद प्रेम फेर कुलकाण कसी । गजवी० ॥ २९ ॥

हो जी वाई सियजीरा रिझवार हो लागो परम सुहावणाँ
श्यामल वरण केसरयाँ जामो सोहै जीपै आभूषण मनभावणाँ
कोमल चरण महावर रंजित भावै म्हाँनै लाल सरोज लजावणाँ
कुंडल झलक कपोलाँ झलकै छै जी चोखा होठ सुरत विसरावणाँ
मन्द हँसी गजवीली थाँकी दोन्यूँ तीखा लोचन मन ललचावणाँ
धनदशरथ नृप धनकौसल्या ज्याँकै जन्म्याँ थाँसा पुत्र सुलाषणा
धन धन श्रीवाईजी म्हाँका ज्याँकै हाथाँ थे विनमोल बिकावणाँ
छिन भी दूरा प्रेम न हो थे म्हाँका नैणा माँय रहो नित पावणाँ ३०

हे सरसिजलोचन अद्भुत चरितनकी जावैं बलिहारी

रसिकन हित रघुवर सुनिये रँगभीनी गावैं हम गारी ।
कहत बराती लोग बिन पतियोग तुम कहँ प्रकट कियेहैं
ऐसी गुणवारी तुमरी महतारी । हेसरसिजलोचन०—
सुतगुण पितासमान यह जगजान हैछविखान कैसे
प्रकटे हो आप मनोभव अनुहारी । हेसरसिजलोचन०—
केकीकंठ समान है द्युतिमान तन मुख चंद सरीखो
केहरिसी लंक यही अचरज भारी । हेसरसिजलोचन०—
तिय चित वित हरि लेत पुनि नहिं देत वशकरि राखत अपने
कहियत नयनागर पै तुम छलकारी । हेसरसिजलोचन०-
अबलनके हिय तान चितवनि बान मारे तलफत सारी
करुणामय आप कि निष्ठुर कृतकारी । हेसरसिजलोचन०-
जानत हम सब बात कहि न सकात दीन्ही ब्याहि तुमकहँ
बाई श्रीसियजू त्रिभुवनउजियारी । हेसरसिजलोचन०—
अब सब दोष गये हैं पूरणकाम भये हैं आप कीजिये
सियजूकी पलक नयन ज्यों रखवारी । हेसरसिजलोचन०—
करणाहार जिय जेम अति दृढ नेम हमकहँ नाम जपनको
दीजे पदप्रेम परमानिधि सुखकारी । हेसरसिजलोचन०—॥२१॥

सुनिये रसिकनके हितकारी रघुवर अवध विहारी जू ।
गोरी मात तुम्हारी प्यारे, तैसे दशरथ भोरे भारे
जनसे आप चपलतावारे किमि श्यामल तनु धारी जू ।
शृङ्गी ऋषिहिं परम सम्माने सुत उपजावन कारण आने
दशरथ शील निधान सयाने धीरजकी बलिहारी जू ।

है यह बात विदित जग माहीं निज पति के संयोग बिनाहीं
धारण गर्भ निशंक कराहीं धन तुमरी महतारी जू।
देखत रीति स्वकुल विच आये तातैं दोष न कछु ठहराये
पर पति रति अपराध नशाये गौतमनारी तारी जू।
जानत बात जगत् यह सारी उपजत पुत्र पिता अनुहारी
जनमे आप काम छवि धारी है यह अचरज भारी जू।
जोहत आप मधुर हँसि जाको बरबश मोह लेत मन ताको
सीखे किहिं विध काम कलाको करि मुनि मख रखवारी जू।
जानत बात प्रेम हम सारी पै कहि जाय न है छलकारी
रूप ठगोरी डारि हमारी मति भोरी कर डारी जू ॥ ३२ ॥

रघुकुल उजियारे प्यारे अनियारे नयनावारे हो
नृप राज दुलारे यौवन मतवारे लोचन तारे हो।
अनुपम छवि छाके बाँके हाँसीकी फाँसी डारि
सत्वर तुम बरबश चंचलतर चित्त फसावनहारे हो।
मिथिलाके वासी सुकृतनकी राशी हैं हम धन्य
तुम जिनके पुरमें अरु उरमें चाह समेत पधारे हो।
कटि केहरिकी सी मृगके से दृग पिकके से बैन
गजकी सी गति है मन्मथ से मनमोहन सुकुमारे हो।
राका निशिकर सो आनन है नीको अति द्युति मान
इन सबकी छविके सारन को रूप लला तुम धारे हो।
हमरे हित कारण आये हो अवध पुरीतैं आप
किमि गारी गावैं सिय जू के प्यारे प्राण हमारे हो।

हम प्रेम निहोरैं कर जोरैं हे सुख सागर राम
सिय साहित हमारे मनतैं नयननतैं छिन हु न न्यारे हो ३३

थाँकी छबि पर हे श्रीरघुवर म्हे बलिहारी जावाँ जी ।
म्हाँनै नाथ आप अपणाया करके कृपा महलमें आया
थाँकै आगै म्हे हिवड़ारा पग पाँवडा बिछावाँ जी ।
थाँको श्यामल बरण मनोहर यो वर वेष अनोखो सुन्दर
नख शिख निरख निरख नैणा भर भर हिय मायँ बसावाँ जी ।
विचरो नित नजरयाँ कै भीतर मत हो पलक ओट थे पल भर
कर सब पुण्य धरम न्योछावर या विधना सैं चावाँ जी ।
जाणयो छै जिद्सै यो हाल जाश्यो आप अवधपुर काल
म्हाँकै हुयो विरहको साल पीरको पार न पावाँ जी ।
म्हे तिय जात नाथ छाँ परबस सँग चलबाको भी नाहिं बस
थे मत अवध पधारो या भी म्हे कहता शरमावाँ जी ।
सुकुमारी छै श्रीसिय म्हाँकी नीकाँ सार राखज्यो याँकी
थे खुद सुग्यानी छो म्हे थानै काई ज्ञान सिखावाँ जी ।
म्हाँकी सुरत विसर मत जाज्यो वेगा फेर जनकपुर आज्यो
सियवर प्रेम सहित या विनती बारम्बार सुणावाँ जी ३४

विसारि जानि जैयो जी श्रीरघुवीर ।
चहत हो जान जाहु वश काह हियेतैं जानि जैयेजी श्रीरघुवीर
गगनस्थितशशिकुमुदिनिढिंगरहततथाहियरहियेजीश्रीरघुवीर
कमठ जिमि अंडनकी सुधि लेत हमारी तुम लैयेजी श्रीरघुवीर
मृदुल चित जन हितकर सुख सींव बेग ही ऐयेजी श्रीरघुवीर

हमारी दृगतारा सिय युत नाथ कुशल तुम रहियोजी श्रीरघुवीर
कहैं का अन्तरयामी आप दरस तो दैयोजी श्रीरघुवीर
प्रेम शिशु चपल कृपा करि याहि आपअपनैयोजीश्रीरघुवीरा॥३५॥

अनोखे नैना वारी सिय स्वामिनियाँ ॥
हमारीप्यारीप्रियतमवदनमयंकचकोरीचखतोरीअनुरागिनियाँ
हमारी प्यारी प्रियतमसँगतुम लसी मनहु जलधरसँग दामिनियाँ
हमारी प्यारी तुमप्रियवश प्रियतोर परस्पर कीन्हो जनुकामिनियाँ
हमारी प्यारी कत जैहो ससुरारि पिया सँग हेरी बडभागिनियाँ
हमारी प्यारीतुम बिन मोर न और शपथ करिभाखौंमनभावनियाँ
हमारी प्यारीजियो हमहिं न छांडिलगी हैं हमप्यारि तबदामनियाँ
हमारी प्यारी राखोगी तस रहि हैं हम हिं सँगलीजे आभिरामिनियाँ
वचनसुनिकरुणाहियमेंधारिप्रेमयुतलीन्हीसँगआपानियाँ ॥३६॥

हो जी बाईसा थे छो फूल गुलाबका भँवर कँवर श्रीराम छै
हो जी बाईसा थे छो सुन्दर दामिनी जलधर वै सुखधाम छै
आप वस्या छो वाँका हीय में वाँको थाँका हिय भीतर विश्राम छै
थाँ दोन्यां का ई संजोग सैं म्हाँका मनका पूर्ण हुया सब काम छै
पीतम के सँग आप पधारस्यो होणो थाँसै सफल अयोध्या धाम छै
म्हांकी सुध मत आप विसारज्यो थाँसै म्हांका वारम्बार प्रणाम छै
अपणीलैरां लेर पधारज्यो बाईसा थाँको प्रेम गरीबगुलामछै ३७

अब हम जान दैहैं नाहिं ।
नयन तारक इव रखहिंगे तुमहिं पलकन माहिं ।
युग विलोचन हर्ष जलसों नित करें हैं स्नान

सुरुचि श्रद्धा गन्ध माल्य समर्पि हैं सविधान ।
वासना शुभ धूप अरु जिय ज्योति दीप दिखाय
आरती करि हैं मनोमय भाव भोग लगाय ।
अमल हिय जलजात मृदु पर्यंक पै पोढ़ाय
प्रेम सहित पलोटि हैं दोउ चरण मन मति लाय ३८

राघव सरदार तोरी मूरति हिय आन बसी
आनबसी आनबसी आनबसी आनबसी आनबसी आनबसी
हो जी तोरी मूरति हिय आनबसी ।
हसीन हो यूँ ही जोबन बहार आई है
बदन सुडोल है और तिसपै कजअदाई है
कटीली आखैं हैं चितवनकी फिर सफ़ाई है
गुलाबी होठ हैं और पानकी ललाई है
लूट लिया रघुवंशी २ हो जी तोरी गजबीली मन्द हँसी । राघव
जुल्फ़ दोनों जो काली काली हैं
घुंघरारी व इत्रवाली हैं
आपने नाजसे जो पाली हैं
दिलको मेरे कराल ब्याली हैं
चैनपडता ही नहीं २ होजी मोरे जबसे हिय प्रेम डसी । राघव३९

सजनी निहारिये ज़रा, इनकी छटा मनोहरा
देह प्रभाके सामने, फीका है रंग देखिये
मरकत तमाल मेघका । सजनी निहारिये ज़रा०
शोभा पीयूषके भरे, इनके बदन मयंकके

आगे विचारा चन्द्र क्या । सजनी निहारिये ज़रा० ।
भौंहें रुचिर क़मान हैं, चितवन मनोज बान है
होता है वार देखना । सजनी निहारिये ज़रा० ।
मुक्तावली है मन्दतर, दन्तावली को देखकर
क्या अस्ल कुन्दकी भला । सजनी निहारिये ज़रा० ।
कैसा मनोज्ञ हास है, मानो मनोज पाश है
छुटता नहीं जो फस गया । सजनी निहारिये ज़रा० ।
अगणित मनोज माधुरी प्रत्यंगमें है बस रही
यौवन उमंग है महा । सजनी निहारिये ज़रा० ।
इनके मनोज्ञ रूप पर डाली है जिसने इक नज़र
तन मन व धन वो दे चुका । सजनी निहारियें ज़रा० ।
वे ही हैं प्रेम धन्य जन जिनका लगा है इनसे मन
इनका है जिनको आसरा । सजनी निहारिये ज़रा० ॥४०॥

अहो अजीब हो रसिकेश राम छविशाली
कि इक निगाहसे सब पर है मोहिनी डाली ।
लगी हुई हो मनो लैन पुत्रिकाओंकी
खड़ी हुई है यों निश्चेष्ट सर्व पौराली ।
किसीको देहकी सुधि है न गेहकी सुधि है
डसी है आपकी जबसे उन्हे अलक व्याली ।
हुई विशेष विकल देखके वो ललनायें
जो हो रही थी महा रूप मदसे मतवाली ।
हृदय गगनमें मेरे प्रेम हे जलज लोचन

उदित रहै ये सदा रूप शीतकरमाली ॥ ४१ ॥

सजा है क्या ही सेहरा आज श्रीरघुनाथके मुख पर
है जिसमें जाल हीरोंका गुथे वहुमूल्य हैं गोहर।
लुभाया है निशाकर देखकर वर मुख सुधाकरको
वही शोभावलोकन कर रहा है पासमें आकर।
वदन सुकुमारको जन दृष्टियोंका वार सहना हैं
इसीसे बख़्तर पहिनाया गया मानो परम सुन्दर।
न सेहरा है ये तमगा है मिला इनकी मुखश्रीको
अखिल त्रिभुवनमें ये साबित हुई है सबसे आलातर।
सुभग सब अंग हैं अनुपम मृदुल श्यामल कलेवर है
विलज्जित हो जिसे अवलोककर अभिनव सजल जलधर।
चमकते हैं सितारोंकी तरह ये रत्न आभूषण
दमकता है सुनहरी ज़रकशी जामा तड़ित द्युति हर।
भवें मन्मथ शरासन सी विलोचन फुल्ल पंकज से
अनोखी है हँसी चितवन रसीली चारु बिम्बाधर।
वही त्रिभुवनके अन्दर प्रेम हैं अति भाग्य भाजन जन
किया जिनने है चित्रित चित्र यह निज चित्तके भीतर४२

निहारो हेसखी भरनेत्र दूलह वेष रघुवरका
मदन छविमद विमर्दनका रसिकधन श्यामसुन्दरका ।
अखिल संसार दृग अभिराम श्यामल मृदु कलेवर है
है फीकारंग इसके सामने नीलम व जलधरका ।
सजा है सुर्ख़ जोडा मखमली चरणारविन्दोंमें

है जिस पर काम अनुपम हो रहा ज़र्केश जवाहिरका ।
विलज्जित कररहाहै देखिये बिजलीकी आभाको ।
सुसज्जित ज़र्कशी जामा है तन पर पीत अम्बरका ।
सुभग भुजमूल हैं दोनों भुजा हैं जानु अवलम्बी
ये छविसे कर रही हैं मान मर्दन कामकरिकरका ।
विविध मणि हार माला मोतियोंकी कंठमें सोहै
प्रभायें काम करती हैं अपर फूलोंकी चोसरका ।
हृदय आह्लादकारी तापहारी है रुचिर आनन
करै इसकी जो समता दर्प क्या राकानिशाकर का ।
अनोखे हैं नयन जिनमें महा शोभा है कज्जलकी
भवें सुन्दर ललित चितवन हैं करती काम खंजरका ।
चिबुक सुन्दर अधर पल्लव अरुण छविमय ललित नासा
न वर्णन हो सके अनुपम कपोलस्थल मनोहर का ।
सुभग श्रवणोंमें अनुपम छवि ललित मणिकुण्डलों की है
दमकता है तिलक वर भाल पर अति चारु केशरका ।
सुचिक्कण केश कारे और घुँघरारे सजीले हैं
बहुत ही हीनता है जो कहैं उपमेय मधुकरका ।
सजी मन्दील मस्तक पर सुभग शिरपेच तुर्रा है
विविध मणि मौर मानो हो अपर मंडल विभाकरका ।
अलौकिक लाभ हो गर चाहते पावन मनुज तनका
तो निजमन मीन कर लो प्रेम अनुपम रूप शुभ सरका ४२

मूरत मधुर ललाकी दिलमें मेरे बसी है

चितवृत्ति मीन बन कर छवि जालमें फसीहै।
चरणारविन्द सुन्दर उंगली मनोहरा हैं
ध्वज अंकुशादि संयुत यावक रुचिर लसी है।
नीलम की गोलियों के मानिन्द गुल्फ सोहन
पिंडली भली है कैधौं युग काम तरकसी है।
मरकतके खंभ सी हैं जांघें नितम्ब अनुपम
जो दुन्दुभीसे भाखैं तिनकी मती नशी है।
नाभी है या भँवर है शृङ्गार सिन्धु मांही
त्रिवली भई कालिन्दी जनु तीन धार सी है।
सुन्दर है रोमराजी अतिशय रुचिर उदरहै
पतली कमर लचीली पट पीत सों कसी है।
आयत हृदय पै राजै गज मोतियोंकी माला
मरकतके शैल पर जो गंगाकी धार सीहै।
करि शुण्ड सी सुभग है आजानु पीन बाहू
प्रतिपालिका जनोंकी अरियोंको साल सी है।
भुजमूल सिंह के से दर ग्रीव है सुहाई
ठोडी परम मनोहर सुषमा की सींव सी है।
देखे अधर अनोखे ललचे जिया न किसका
सानी सुधा सुहाई जादूभरी हँसी है।
क्या अस्ल कुन्दकी है दन्तावलीके आगे
मोती की माल जिसके आगे बिहाल सी है।
योंही अधर गुलाबी फिर पानकी ललाई
देखे जो इक नज़र भर ताउम्र लालसी है।

बचपनको दूर करके आई किशोरताई
तिसकी ध्वजा है कैधों उठती हुई मसी है।
शुकतुण्ड सी है नासा छवि भाल पर तिलककी
जनु अर्ध चन्द्रमा पर बिजलीकी रेख सी है।
मेरे हृदय की रंजन खंजनके मदकी गंजन
अंजन अँजीली आंखियां युग मैन मीन सी है।
चितवन है चारु इनकी तीरों का काम करती
तिरछी भवैं छबीली मन्मथ कमान सी है।
लावण्यधाम कोमल रुख़सार है मनोहर
जो आरसी से भाखैं लघुता अपार सी है।
जुल्फैं जो इत्र भीनी गालों पै झूमती हैं
डसने को मन ये काली व्याली कराल सी है।
चिकुरावली है कुंचित राजै कि भृङ्ग माला
शृङ्गार सिन्धुकी ये कैधों शिवार सी है।
पट पीत अङ्ग सोहै कानोमें लोल कुण्डल
भूषण सुदेश सारे शिर पाग जर्कशी है।
विधि विष्णु शंभु गावैं शोभा न अन्त पावैं
फिर प्रेम क्या बखानें मति मन्द आलसी है॥ ४४॥

अवलोकन कर सजनी दृग भर कर रूप कुँवर रघुनन्दनका
सुख सिंधु त्रिलोक-विभूषणका स्मर शोभा-गर्व निकन्दनका।
अति सुन्दर कोमल श्याम बरन इनका तन है लावण्य सदन
यह मान विमोचन करता है इन्दीवर नीलमका घनका।

घुँघरारी नागिनि सी अलकैं मद छकी छबीली अखियाँ हैं
हरती हैं मान भवैं तीखी मनासिजके चढे शरासनका।
कोमल कपोल हैं लाल अधर मुक्तावालि वारों दशनों पर
श्रुतिचिबुकनासिकाभाललालित अतिरुचिरतिलकगोरोचनका।
मृदु हास्य रसीली यह चितवन हर अदा अनोखी मनमोहन
यह सूचित करती है सजनी आगमन हुआ है यौवनका।
यह सुछवि सुधारस चख लीजे यह चित्र हृदय पर लिख लीजे
निज लोचन प्रेम सफल कीजे लीजिये लाभ जग जीवनका ४५

सितम किया अजी चितवन लला तुम्हारी ने
बना दिया हमें वेकल अदा तुम्हारीने।
गई न जान न जीते रहे, हमें घायल
किया है तेग सी इन भ्रूलता तुम्हारी ने।
लगन लहर है चढी सव अलग हुई स्यानप
डसा है नागिनी जुल्फें दुता तुम्हारी ने।
न दिनको चैन है शबको न नींद आती है
किया है दर्द हँसी दिलरुवा तुम्हारी ने।
चलैं सप्रेम अयोध्या रहैं न हम रोके
लिया है मोल अनोखी छटा तुम्हारी ने ॥ ४६ ॥

चाहता जी है कि पलकोंमें छुपालैं साहव
दिलमें रखलैं कभी वाहर न निकालैं साहव।
होके निःशंक कलेजेसे लगालैं साहव
देह लावराय निहारैं व वला लैं साहव।

नीर नयनोंका वहा करके चरण धोयें हम
पान हाथोंसे दें और बाल सँभालें साहब ।
पास कानोंके लगी आँखें हैं ये कहनेको
तेज तीरोंसे हैं हम आप चला लें साहब ।
त्यों हीं कहती हैं भवें चाप हमारे आगे—
चीज कुछ भी तो नहीं सबको दिखालें साहब ।
आपके चरणोंकी रज आँजके निज नयनोंमें
जन्म हम अपना सफल प्रेम बनालें साहब ॥ ४७ ॥

अदा हमको भाती है प्यारे तुम्हारी
हो प्राणों से प्यारे अयोध्या विहारी ।
वो हो मस्त जिसको नज़र भर निहारो
है जादू भरी कैसी आँखें तुम्हारी ।
ये नमकीन चहरे पै घुँघरारी अलकें
सुहाती हैं दिलको अहा कारी कारी ।
ग़ज़ब का मधुर हास्य है जिसको देखे
तड़पती हैं लाखों जनकपुर की नारी ।
जुदा तुम जो होते हो पलभर भी रघुवर
तो होती है दिलको बहुत बेक़रारी ।
यही लालसा है युगल छवि निरन्तर
निहारें व बतियाँ सुनें प्यारी प्यारी ।
चरण पद्म सेवक बना लो जो प्यारे
तो हो पूर्ण आशा मेरी प्रेम सारी ॥ ४८ ॥

हे लला सीखे कहाँ हो इस अदासे देखना।
कर रहा है काम ज़्यादा खंजरोंसे देखना।
झुक रहे हैं किस तरफ और वार होते हैं किधर
इन कमानों के परम अद्भुत निशानें देखना।
दिल मसल डाले हजारों पांव इससे लाल हैं
आरहे हैं पर नज़र मेंहँदी लगे से देखना।
देखते ही जो हजारोंके दिलों को डस गई
किस बलाकी जुल्फ काली नागिनी है देखना।
हुस्न में भी एक हो यौवन नया और ये अदा
हो न ऐसा जो नज़र कोई लगादे देखना।
साथ लेकर के प्रियाको आप जायेंगे अवध
छोड़ मत जाना हमें प्यारे हमारे देखना।
साथ लेकर के हमें तुम जो न जाओगे सनम
जानसे पहिलें हमारी जान जाते देखना।
हे सखी री साँवरे को नेत्र भर कर देखलो
प्रेम फिर किस वक्त हो इनको न जाने देखना॥ ४९॥

पद—

कौसल्या निज सुकृत सराहहिं
सिय मुख शरद मयंकहिं पुनि पुनि चख चकोर करि चाहहिं।
लखि अनुपम छवि होत चकित चित सुख सागर अवगाहहिं
पैरत थकहिं अनेक यतन करि पै नहिं पावत थाहहिं।
मुख देखनिको नेग पतोहुहिं दैन सासु मन चाहहिं

पै तिहिंके अनुरूप वस्तु कोउ नहिं आवत मन माहहिं।
प्रेम सुमति अनुमति लहि तेहिछिन हिय भरि अधिक उछाहहिं
मुख देखनिमें सियहिं समर्पे श्रीरामहिं गहि बांहहिं ॥ ५० ॥

निरखो हे आली दुलही की क्या ही अदा निराली है।
दामिनी द्युति है अंग वसन सुरंग आभूषण भूषित है
मनहरणी मूरत भोली भाली है।
ललित उरोज नवीन कटि अति छीन सुन्दर सकल अंग है
मुख शशिकी फैल रही उजियाली है।
खंजन सरसिज मीन हो अति दीन शोभा निरखे जिसकी
ऐसी छवि वाली चख मतवाली है।
ग्रीवा चिबुक रसाल मुक्ता माल सी शोभित दशनावलि
होठों पर झलक रही अति लाली है।
भाल विशाल सुडोल युगल कपोल हैं अति भव्य मृदुल तर
तिन पर वर लटक रही लट काली है।
भवें महा छवि खान काम कमान शोभा हरने वाली
लम्बी अलकावलि घूंघरवाली है।
देख लिया यह रूप परम अनूप जिसने सपने में भी
उसने सब सिद्धि प्रेम निधि पाली है ॥ ५१ ॥

नवल युगल सरकार की जय
जनकनन्दिनी जगत्वन्दिनी कोशलराजकुमारकी जय।
गौर श्याम निज तनुतें दामिनि घन द्युति निदरनहारकी जय।
ललित तरुण अम्भोरुह छवि धर मृदुल चरण अरुणारकी जय।

असित शरदशशि शोभन आनन सुषमा पारावारकी जय ।
भ्रुकुटी वंक विशाल विलोचन मनसिज शर अनियारकी जय।
बिम्बाधर वर चिबुक मनोहर अति कपोल सुकुमारकी जय।
नवयौवन मद छके परस्पर अनुपम छवि रिझवारकी जय ।
प्रेमी पुरुषनके जीवनधन भक्तन प्राणाधारकी जय ।
सरल सुशील सुजान शिरोमणि परम समर्थ उदारकी जय।
प्रेम दीन अवलम्ब हीन के सब प्रकार रखवारकी जय ॥ ५२॥

ठगोरी सी डारी है हे श्रीराम ।
चितवनसें चित वशकरि मेरो फिर नहिं हेरो गजबी श्याम
अलक नागिनी हिये डसी है उठत लहर अब नहिं विश्राम।
दरस आस की प्यास बढ़ी है बिसर गई सुध तन धन धाम
ओचक आय मिलहु रघुनन्दन करहु प्रेम सब पूरण काम५३

चितवन जग अभिराम राम तेरी हियमें खटकी रे
मैन बाण सम पैन नैन शर अरे चैन दिन रैन है न
उठ गयउ चित्त विश्राम राम तेरी हिय में खटकी रे।
चिकुरपुंज जनु भ्रमरपुंज छविसर शिवार पन्नग कुमार
जनु अलक श्यामअहिवास वाम तेरी हियमें खटकी रे ।
रुचिर नाभि वह लचनिलंक वह अधर बिम्ब आनन मयंक
देखे बिन पल पल याम याम तेरी हिय में खटकी रे ।
नव तमाल वपु उर विशाल पर लुलित माल गज सरिस चाल
लखि लजै प्रेम शत कोटि काम तेरी हिय में खटकी रे ५४

अलक नागिनियाँ डस गई हाय

चित्त फसाय लगाय डंक पुनि त्वरित गई बल खाय ।
नयन अछत हू कछु न लखावत जिय घबरावत कछु न सुहावत
तन थहरत नहिं धीरज आवत लहर सही नहिं जाय ।
पीर मिटनको व्यजन करति है घसि घनसार मलय चरचति है
दूनी होत व्यथा सखि ज्यों ज्यों तू यह रचत उपाय ।
मेरो हित यदि चाहत प्यारी बेग दिखावहु अवधविहारी
निज छवि सुधा पियाइ प्रेम वे लै हैं मोहि बचाय ॥ ५५ ॥

लागे लागे पैना नैना वाके कजरारे री
ताहीकी कसक आली हीय में हमारे री ।
करत वृथा उपचार सहेली काहे
पीर तो मिटेगी प्रेम वाही के निहारे री ॥ ५६ ॥

आवत चैन सजनि मोको छिन हू नाहीं
मिलन चाह चढी रहत चितके माहीं ।
नयनन लखी राम छवि जबतें तबतें कछु न सुहावै
प्रेम भ्रमत सोही हिय दृगन माहीं ॥ ५७ ॥

मूर्ति मन मोहिनी निहारि रघुनन्दनकी
देह और गेहतें सनेह दूर हटि गो ।
रूप माधुरी निहारि भूलिके अपान प्रेम
ठाम ठाम अंगनमें मेरो मन बटि गो ।
बंक अवलोकन बिलासहास फास फस्यो
मृदु मृदु ललित कपोलनपै जटिगो ।
साटिगो जुलफ जाल चिपटिगो आननमें

डटिगो पुनीत पीत पटमें लपटि गो ॥ ५८ ॥

असित उपाय करि प्रेम हम हारी नाथ
नैनन तैं रूप माधुरी लखी गई नहीं।
बोलिबेके हेतु आप बहु मनुहार कीन्ही
आननतैं तोहू कछु बतियाँ कढी नहीं।
लाजने अकाज सब मेरो कर दीन्हो हाय
दौरिके निशंक अंक रावरे लगी नहीं
निकट एकान्त भोन आये भेटवेके हेतु
तऊ प्राण प्यारे भेट तुमसों भई नहीं ॥ ५९ ॥

मंद भई चन्द से बदनकी अमन्द कान्ति
बिम्बारुण होठन पै लाली हू रही नहीं।
अश्रुधार प्रचुर तुषारतैं सरोजिनीसी
अखियाँ ये प्रेम रही हर्षसों भरी नहीं।
मल्लिकाकी बल्लिका सी देह आह ज्वालाजाल
सन्तत जरी पै पीर काहू सों कही नहीं।
नाना भाँति कष्ट पाये प्राण कंठ माहिं आये
तऊ प्राणप्यारे भेट तुमसों भई नहीं ॥ ६० ॥

बना मेरे नैनन माँझ बसा
कढत न किये उपाय अमित अति बुधि बल सकल नशा।
सजल श्यामघन द्युति निन्दक तनु कटि पट पीत कसा।
अनियारी प्यारी अखियनमें अंजन ललित लसा।
तबतैं चेरी भई बिनागथ मो दिशि देखि हँसा।

पल भर कल न परत मोहि तुम बिन बिसरी देह दशा।
प्रेम दरस मोहि देहु बेग ही अब जानि लोग हँसा ॥ ६१ ॥
तुम्हें देखे बिना श्रीरामबना मोहि दिन अरु रतियाँ चैन नहीं
लखि औरहिं प्यारे तृप्ति लहैं अस रहे हमारे नैन नहीं।
करो जो जोरो जफ़ा हमको राम सहना है
सितम भी आपका हमको अमोल गहना है
पड़ा हमें तो तुम्हारे हि दर पै रहना है
न हो तो ख़ैर बियोगाग्नि मध्य दहना है
पै तुमहिं छाँडिके यह मम स्वामी अस निकसन के बैन नहीं।
मिलो जो ख्वाबमें दिलदार यार राघोजी
करूँ मैं जानको तुम पर निसार राघोजी
मिलो तो जल्द मिलो हे उदार राघोजी
बिना मिले है ये दिल बेक़रार राघोजी
तुमरे दर्शन बिन हमरे मनमें कबहू थिरता व्हैन नहीं।
हँसी समेत विलोकन थी बस ठगोरी थी
हरेक तुम्हारी अदा थी न चित्त चोरी थी
मुझे निहारके भौंहें तनक मरोरी थी
फसी मैं प्रेमके फन्देमें हाय भोरी थी
अब देत प्रीति दुख कल न परत कोउ वस्तु लगत सुखदैन नहीं६२

मारा हम को सनम की निगाहने,
होके ज़रूमी गिरे लब पै आई है जान।
जल्वा दिखा कर, नेहा लगा कर
दिलको चुरा कर के वो चल दिया

तब से हैं हम बेज़ार, नही मिलता वो यार,
किया बेखुद सबलियाकी चाहने। माराहमको०—
सुध है न तनकी घर और वतनकी
प्रेम अबतो ये ही लगी है लगन
मिले साहेजिबीं कब वो परदानशीं
किया मजनू मुहब्बतकी राहने। मारा हमको ॥६३॥

गजल—

अजीब लुत्फ है दिल रामसे लगानेमें
मज़ा है खंजरे अब्रू का जख्म खानेमें।
कहाँ है बरफ़ वो तीरोंमें तेग़में यारो
अदासे देखके उनके जो मुसकरानेमें।
जो आज रातको उनसे विसाल हो जाता
कहाँ था लुत्फ ये अब है जो तलमलानेमें।
रिहाई चाहो तो ज़ंजीरे जुल्फ से जकड़े
पड़े रहो सदा उल्फ़तके क़ैदखानेमें।
दिखावो ख्वाब ही में प्रेम तुम रुखे रोशन
अगर है उज्र तुम्हें इस तरहसे आनेमें ॥ ६४॥

सितम हमने किया कैसा जो दिल उनसे लगा बैठे
बहादुर शेरको सोतेसे हम गोया जगा बैठे।
सुना था और कुछ लेकिन वो बिलकुल बेतकल्लुफ़ हैं
बिना पहचान मेरे खानये दिलमें जो आ बैठे।
तन्हाईमें भी मिलकर रहगई दीदारकी हसरत

वो हमसे हाय शरमाकर रुखे रोशन छुपा बैठे।
असर हम पर करेगी क्या नसीहत अब तेरी नासेह
हम अपने दीनो ईमाँको बहुत दिनसे लुटा बैठे।
किया था उनने वादा यह कि तुमसे कल मिलेंगे हम
मगर अब प्रेम देखो उनके दिलमें आज क्या बैठे ॥६५॥

इश्क राघोसे किया जिसका मज़ा पाते हैं
दिलको हाथों से दिया जिसका मज़ा पाते हैं।
चुटकियाँ लेते हैं वो दिलमें सितमगर मेरे
है मज़ा यह कि जफ़ा करते हैं इतराते हैं।
देखने से युहीं हर एक को बनायें मजनूँ
मुसकराते हैं तो वो और सितम ढाते हैं।
दिल तो लेही गये चितवनमें चुराकर प्यारे
अब तो मिलते भी नहीं हमसे वो शरमाते हैं।
क्यों कर हो हम पै नसीहत का असर अय नासेह
बात कुछ सोचते ही दिलमें वो आजाते हैं।
यूँ तो ये हज़रते दिल ठीक है लेकिन यारो
याद आती है जब उनकी तो मचल जाते हैं।
दिन तो ज्यों त्यों कटा अब रातको आई श्यामत
देखिये जीते हैं या जाँ से गुजर जाते हैं।
प्रेम हो कुछ भी न क़दमोंसे उठाना सरको
देखें कबतक वो नहीं तुम पै रहम खाते हैं ॥ ६६ ॥

अरे प्राणो बहुत ही सख़्त की है तुमने नादानी

तरसते रहगये निज पुर गये श्रीराम सुखदानी ।
सदा संगी जो रहता नेह है उसको गिना नश्वर
जो चपलासी चपल है ज़िन्दगी उसको अचल मानी ।
तुम्हे लाज़िम था प्यारेकी विदा से पूर्व चल देना
सजा जब था अवध पुर जाके करते उनकी अगवानी ।
अगर इस देहकोटरसे विहंगम सम निकलजाते
विरह दावाग्नि ज्वालासे न होती यों परेशानी ।
अरी अब क्या हुआ जिह्वा जो यों तू गुल मचाती है
वो बोले थे न निकली तब तो तेरी एक भी बानी ।
बहा कर खून आँखो अब वृथा आँगनको रँगती हो
न देखा दृष्टि भर उनको अरी लज्जाकी दीवानी ।
अरे अंगो तुम्हें प्यारी लगी यह लाज रघुवरसे
न तडपो अब करो लज्जाकी वैसी ही निगहबानी ।
पदोंसे तू लिपट जाती जो तजकर लाज तनुलतिके
तो अपनी साथ रखते वो न होती प्रेम हैरानी ॥ ६७ ॥

आवो सिय पिय हिय नयन अयन बिच अय प्यारे
जग उजियारे छविरूप सुधारस मतवारे सिय सहित विहारकरो।
मनोज मान हरन माधुरी निहारैं हम
विपुल वियोग व्यथा ताप निज निवारैं हम
प्रहर्ष प्रेम जनित नेत्र युग्म पानिपसे
पतित पुनीत करण युग चरण पखारैं हम
आवो सिय पिय०— ।

हृदय कमल में बिठा करके हम बयार करैं
युगल स्वरूपकी अर्चा सकल प्रकार करैं
दृगों से देखके अठखेलियाँ परस्परकी
सहर्ष प्रेम दिलो जान हम निसार करैं
आवो सिय पिय०— ॥ ६८ ॥

इति श्रीसीताराम प्रेमप्रवाह षष्ठतरंग समाप्त ।

॥ श्री ॥

श्रीसद्गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

श्रीसीताराम प्रेमप्रवाह

सप्तम तरंग

दोहा—सियरघुनन्दन पदकमल वन्दि सहित अनुराग
सप्तम सरस तरंगमें प्रेम कहत है फाग।

होरी वसन्त पद०-

आयो सरस सुहावन री ऋतुराई वसन्त।
किसलयवन्त विराजत कानन पुष्पित भये लता द्रुम उपवन
सुखदा त्रिविध बयारि वहन्त। ऋतुराई वसन्त०
फूले आम्र कोकिला कूकैं उठत वियोगी जन चित हूकैं
प्रवल कुसुमशर शर निघनन्त। ऋतुराई वसन्त०
देखत वनसुषमा पिय प्यारी बतियाँ करत कंठ भुज डारी
मुख सुवास वश भ्रमर भमंत। ऋतुराई वसन्त०
उपवन छवि अवलोकि सुहावन फागहेतु हुलस्यो स्वामिनि मन
बोलि लई निज सखी अनन्त। ऋतुराई वसन्त०
मृगनयनीश्यामागजगामिनि लजतजिनहिंलखिचम्पकदामिनि
साजि सिंगार आई हुलसन्त। ऋतुराई वसन्त०
इत रघुनन्दन सखा बुलाये फाग केलि अनुरूप सुहाये
जिनहिं निरखि बहु मदन लजन्त। ऋतुराई वसन्त०
मॉंच्यो जंग रंग पिचकारिन केशर नीर घोरि भरि झारिन

लखिकि ललकि दोउ दल वर्षन्त । ऋतुराई वसन्त०
बरवश मलत कपोलन रोरी नभ फैंकत अबीर भरि झोरी
बदरा छाये सकल दिगन्त । ऋतुराई वसन्त०
डफ मृदंग मंजीर बजावैं नृत्य गान करि सुख उपजावैं
सारंगी स्वर सरस नदन्त । ऋतुराई वसन्त०
तकि तकि देत दृगन पिचकारी मूँदहिं नयन तिया सुकुमारी
लपकि भुजन भरि मसकैं कन्त । ऋतुराई वसन्त०
सखिन चपल राघव गहि लीन्हे तऊ न छाँडे हाहा कीन्हे
सिय ढिंग लाई मन्द हसन्त । ऋतुराई वसन्त०
चूमि कपोल प्रिया सकुचानी घूँघट ओट मधुर मुसकानी
दमके पट अभ्यन्तर दन्त । ऋतुराई वसन्त०
भुजा परस्पर धरि अंसन पर पुनि बैठे दोउ रत्नमंच पर
अँग अँग कूजत काम महन्त । ऋतुराई वसन्त०
सखिजन सब आरती उतारत अनुपम छवि लावण्य निहारत
लोचन फल सुख अवधि लहन्त । ऋतुराई वसन्त०
यह रस रुचिर सुचिर कालीना सिय स्वामिनि सेवा आधीना
याहि प्रेम कोउ विरल लहन्त । ऋतुराई वसन्त० ॥ १ ॥

खेलत राजकिशोरीजू होरी राघोजीके संग
नूतन यौवन लखि रजनीपाति नेहरूप जलनिधि बाढत अति
प्रकटत केलि उमंग तरंग । होरी राघोजीके संग०
पिचकारी तकि तकि दोउ मारत अंजलि भरि गुलाल पुनि डारत
करत परस्पर रंजित अंग । होरी राघोजीके संग०

लपकि परस्पर गहि बरजोरी मीडत मुखचन्द्रन पर रोरी
डारत भरि भरि केशर रंग। होरी राघोजीके संग०
भुजनिशंकभरिप्यारिहिंप्रियतम मुखसरोजनिरखतअतिअनुपम
रमँडि रहे पिय लोचन भृङ्ग। होरी राघोजीके संग०
अलवेली सियहू प्रियतमतनु लपटिरहीहैलखि सजनीजनु
तरु तमालसों लता लवङ्ग। होरी राघोजीके संग०
छविलखिसखिजनअतिसुखपावत गावतबाजनविविधबजावत
वेणु वीणा मंजीर मृदंग। होरी राघोजीके संग०
दोउनकी यह केलि सुहावनि मन भावनि आनन्द बढावनि
बसो प्रेम हिय सदा अभंग। होरी राघोजीके संग० ॥ २॥

प्यारी भाग्य सुहाग भरी सिय कोशलराजकुमार
सरयूतीर प्रमोद विपिन कुंजनमें करैं विहार।
दहिनी ओर रँगीले प्रियतम बायें राजकिशोरी
निरखहिं ऋतुपति शोभा सुन्दर किये युगल करजोरी
गमन करत आनन्द सहित अति चाल रसीलीसों री
जाको देखत मानैं हियमें राजहंस हू हार। प्यारी०
तनमें दोउनके नव यौवन अपनो राज्य जमावै
झगरो करि निज बलतैं इनकी भोरी वयहिं भगावै
अंग अंग प्रति देख सखी री सुषमा अति सरसावै
देखे लज्जित होय इन्हैं छवि मद गर्वित रतिमार। प्यारी०
फूले हैं सब गुल्म लता द्रुम अतिशय सुख उपजावैं
कूजैं कोकिल आदिक खग गण अलि गुंजार सुनावैं

त्रिविध समीर वहत सुषमा अस देखो अली लखावैं
मानो कानन ऋतुपति छल करि करै युगल मनुहार। प्यारी०
जा तरु गुल्मलताके ढिंग ये अलवेले दोउ जावैं
सो ही देह प्रभातैं मरकतस्वर्णमयी हो जावैं
केकीकुल गनिके घनदामिनी अपने पंख फुलावैं
बोलैं हंस तड़ागनमें सुनि नूपुर की झंकार। प्यारी०
देखी कानन माँही अति ही ऋतु वसन्त रुचिराई
होरी खेलनकी दोउनके हिय उमंग उठि आई
प्यारे सखा सखीजन अपने दोउन त्वरित बुलाये
आये एक निमिषमें करि करि होरीके शृङ्गार। प्यारी०
होरी सौंज लिये अवलोकत सब दम्पति मुख ओरी
दीन्ही आयसु ज्योंही खेलन हेतु किशोरकिशोरी
त्योंही उमँग भरे दोऊ दल लागे खेलन होरी
लागी होन परस्पर तकि रँग पिचकारिनकी मार। प्यारी०
दोऊ यूथ परस्पर रँगकी झारी भरि भरि डारैं
कोमल कुसुम गैंदकी तकि के एक एकके मारैं
नभमें फैंकत हैं नाना रँगकी गुलाल भरि झोरी
छाये बादर तिनके देखो चारों दिशा मझार। प्यारी०
गावैं फाग सखीजन कोकिल हू ध्वनि सुनि सकुचावैं
नाचैं और अनोखे नाना हाव भाव दरसावैं
वेणु सितार सरंगी वीणा अरु मंजीर बजावैं
छाई दुन्दुभि और पखावजकी दश दिशि धधकार। प्यारी०
नाना रंगन माहीं सबके रंजित अंग भये हैं

रोरी लिपटि रही है तातें मुख व्है लाल रहे हैं
दम्पति प्रेम सुधा रस छाके सब उन्मत भये हैं
सबकी बिलुलित है चिकुरावलि टूटगये हैं हार। प्यारी०
प्रियतम और प्रियाजू हू रँग आपसमें बरसावैं
मारैं रंग कमोरी केशर रँगमें अंग भिगावैं
मसकैं अंग मलैं मुख रोरी सुख पावैं सकुचावैं
लखिके दोउनकी झकझोरी अलि बोलैं बलिहार। प्यारी०
पियकी बाँह युगल जोरीसों दौरि आलिन गहि लीन्ही
प्यारी राजदुलाजूने मुख रोरी मल दीन्ही
बोरि रंगमें लिपटि अंगसों मनभाई कर लीन्ही
कैसे चतुर खिलारी प्यारे जीत गये री हार। प्यारी०
परम धन्य ये जोरी इनको नूतन यौवन धन्य
परिकर धन्य सकल ये ऋतुपति समय मनोहर धन्य
सरयू तीर सुहावन पावन यह उपवन है धन्य
धन्य दोउन की प्रेम केलि यह धन्य विलोकनहार। प्यारी० ॥२॥

खेलत फाग श्रीरघुबीर।
सघन विपिन सुहावनो मन भावनो उपजावनो सुख
सरस चित्त लुभावनो यह सरित सरयू तीर।
द्रुम सकल नव पल्लवित कुसुमन सहित सब भू हरित अति
मन्द मन्द सुगन्ध मिश्रित बहत त्रिविध समीर।
विपिन कुक्कुट करत कुटकुट चक्रवाक पतत्रि विहरत
नचत केकी वृन्द बोलत कोकिला अरु कीर।

एक दिशितैं सखिन लीन्हे साथ आवत मैथिलीजू
एक दिशितैं लिये रघुबर सँग सखनकी भीर।
बजत सारंगी सितार अनेक तारन के सुवाजन
उभय दिशि दुन्दुभि पखावज ध्वनि उठत गंभीर।
करत लय स्वर ताल संयुत दल युगल कल गान अनुपम
भरि रह्यो चहुँ ओर नूपुर नाद रव मंजीर।
मिलत ही युग सेन माँच्यो रंग जंग अपार कोटिन
चलत पिचकारी सनासन उड़त वहल अबीर।
धाय बरबश गहि परस्पर मलत मुख रोरी कमोरी
रंगकी डारत भिगोवत एक इकके चीर।
अरगजा डारत परस्पर गेंद मारत मृदु सुमनकी
लगत सिसकत सकत नाहिं सहि देखुरी आलि पीर।
बहि चल्यो दुहुँ ओर तैं सित श्याम पाटल रंग केतो
मिलि त्रिवेणी सरिस जातैं भयो सरयूनीर।
छै रह्यो घनपटल इव आकाश मध्य गुलाल मानहु
फाग हेतु बितान दीन्हो तान री जनु बीर।
सखिन राघव पकर लीन्हे निज मनोरथ पूर्ण कीन्हे
देखु यह छबि नयन भरि भरि प्रेम बानि अति धीर॥ ४॥

श्री सियजू रघुराई खेलत होरी कुंजन माँई।
ऋतु बसन्त तरु लता प्रफुल्लित विपिन महा छबि छाई
त्रिविध समीर बहत आलि गूँजत कूजत खग समुदाई
हरत चित सुन्दरताई। श्रीसियजू रघुराई०

अभिरामिनि शुभनामिनि स्वामिनि सिय इक दिशितैं आई
सखीसमूह संग सोहत है फाग सिंगार बनाई
लजत रति निरखि निकाई । श्रीसियजू रघुराई०
रसिकन चित चन्दन रघुनन्दन निदरन मदन लुनाई
आये एक ओरतैं निज सँग सखा समूह लिवाई
फाग कर वेष वनाई । श्रीसियजू रघुराई०
बाजत दुहु दिशि ताल दुन्दुभी डफ मृदंग सहनाई
हिलि मिलि नचत करत बहु कौतुक गावत फाग सुहाई
सुनत रव पिक सकुचाई । श्रीसियजू रघुराई०
खेलन फाग परस्पर लागे पिचकन झरी लगाई
सुरँग अबीर हर्षि भरि झोरिन लाल गुलाल उडाई
गगन मंडल बिच छाई । श्रीसियजू रघुराई०
विविध रंग डारत झोरिन भरि अमित सुगन्ध मिलाई
मृगमद द्रव घनसार अरगजा छिरकत हिय हुलसाई
कमोरिन रारि मचाई । श्रीसियजू रघुराई०
घन अबीर दुन्दुभि रव गर्जन ताडित विभूषन झाँई
पिचकनतैं जलधार गिरत वह जल धारा बहुताई
लही दुर्दिन समताई । श्रीसियजू रघुराई०
चपलाई करि पिया प्रियाकी चूनर सुरँग भिजाई
भुज भरि मसकि मसकि बरजोरी मुख रोरी लपटाई
करी अपनी मनभाई । श्रीसियजू रघुराई०
स्वामिनि रुख लखि चन्द्रकलाजू कीन्ह परम चतुराई
भरी गुलाल स्वामि दृग औचक तिन जव पलक झंपाई

पकरि लिये सखियन धाई । श्रीसियजू रघुराई०
अति उमंग युत रंग जंग रचि दीन्हे सखन हराई
स्वामिहिं पकरि मंद मुसकावत स्वामिनिके ढिंग लाई
चपलता सकल भुलाई । श्रीसियजू रघुराई०
केशर चरचि अमोल कपोलन अंजन दृगन अंजाई
बोरि रंग अंगनि मलि रोरी छाँडे निपट हराई
प्रियाके चरण छुवाई । श्रीसियजू रघुराई०
रँग बोरनि झक झोरनि रोरी मीडनमें तरलाई
उझकनि झुकनि ललित दम्पतिकी रसिकन आनँददाई
प्रेम दृग रही समाई । श्रीसियजू रघुराई ॥ ५ ॥

विपिन प्रमोद मझारी आज आनंद महा री ।
खेलत फाग उमंग भरे दोउ रसिकनके हितकारी
श्रीघनश्याम रूपमद माते सिय यौवन मतवारी
मदन रति शत बलिहारी । विपिन प्रमोद मझारी०
बरबश मलत कपोलन रोरी मारत रँग पिचकारी
झकझोरत मसकत भुज भरि भरि देत परस्पर गारी
भाज गई लाज विचारी । विपिन प्रमोद मझारी०
चूमन लगे कपोल पिया गहि चूम गई मुख प्यारी
चन्द्रकलाप्रमुखा अलबेली सखी हँसी दै तारी
कही जय जनक दुलारी । विपिन प्रमोद मझारी०
देह प्रभा दरसी लखु सजनी भीज प्रिया की सारी
झलमलात है दीपशिखा जनु झिलमिलमें तमहारी

भई कुंजन उजियारी। विपिन प्रमोद मझारी०
छिन छिन बढत उमंग पिया मुख रोरी सहित निहारी
उग्यो निशामुख समय प्रेम जनु चन्द्रकला निज धारी
चकोरी चच्छु हमारी। विपिन प्रमोद मझारी० ॥ ६ ॥

प्रियतम संग नवेली० फाग खेलत अलवेली।
छल करि निज तनु वसन बचावत प्रियतम पै रंग डारै
केशर रंग भरी पिचकारी पिय दृग बिच ताकि मारै
करत है अति रंग रेली। प्रियतम संग नवेली०
प्रियतम नहि कछु करत रसीले प्यारी चितहिं बढावैं
नवल बनीकी रगरझगर लखि अति ही आनँद पावैं
लहत दृग सुफल सहेली। प्रियतम संग नवेली०
सखि सब गावत फाग सुहावन नाना वाद्य बजावैं
धन्य जन्म निज मानि प्रेम ले फूली अंग न मावैं
निरखि यह अनुपम केली। प्रियतम संग नवेली० ॥ ७ ॥

यह का लाज तिहारी, अहो पिय प्राणन प्यारी।
फाग समय घूंघट खोलनकी कन्त करत मनुहारी
तुम सुनि सुनि जिय सकुचावति हो खंजन लोचन वारी
छिपावत बदन वृथा री। यह का लाज तिहारी०
शरद निशाकर सुन्दर मुख तव जाकी अति उजियारी
तिहिं किहि भांति छिपाय सकति है झीनी चूनर कारी
विचारहु छवि मतवारी। यह का लाज तिहारी०

मदन द्विरद गति गामिनि कामिनि स्वामिनि राजदुलारी
घूंघट खोलि खेलिये होरी प्रेम विनय हिय धारी
होयगी विजय तिहारी । यह का लाज तिहारी० ॥ ८ ॥

सरयू कुंजनमें, खेलैं रामसिया दोउ फाग
मरकत कनक वर्ण अति सुन्दर विलसत युगल शरीर
अंग अंग प्रति छवि छलकत अति निरखत करत अधीर
छाके यौवनमें । खेलैं रामसिया दोउ फाग०
उमँगभरे बहु सखा सखीजन सुन्दर सोहहिं संग
नाचत चंग बजावत गावत फाग सुराग सुढंग
तान तरंगनमें । खेलैं रामसिया दोउ फाग०
तकि तकि मारत हैं पिचकारी मुख पर मलत गुलाल
बरजोरी भुज भरि झकझोरत करत परस्पर लाल
बोरि सुरंगनमें । खेलैं रामसिया दोउ फाग०
चन्द्र वदन पर सींडत रोरी दम्पति आनँद कन्द
लपकि परस्पर गहि बरजोरी रँग डारत सानन्द
भरे हैं उमंगनमें । खेलैं रामसिया दोउ फाग०
दृग बिच तकि पिचकारी मारत गहि लीन्ही पिय धाय
छवि पावत हैं प्रिया नवेली प्रियतम तनु लपटाय
दामिनि ज्यों घनमें । खेलैं रामसिया दोउ फाग०
होरी के खिलवैया ये दोउ ये ऋतुराज विलास
युगल समाज प्रेम अति अनुपम सन्तत करो निवास
हमरी अखियनमें । खेलैं रामसिया दोउ फाग० ॥ ९ ॥

विपिन प्रमोद मझार मची है सुन्दर होरी री ।
इक ओर सखा गण लिये संग सोहैं रघुनन्दन भरि उमंग
इक ओर सखी बहु लिये संग मिथिलेश किशोरी री । मची है०
मिलि दल युगल फाग कल गावत वेणु और मंजीर बजावत
मेघ गरज सम होत उभय दिशि चंग टकोरी री । मची है०
तकि तकि देत रंग पिचकारी अंग भिगोय हँसत दै तारी
फैंकत वहल गुलाल परस्पर भरि भरि झोरी री । मची है०
वर दम्पति प्राणनके प्यारे यौवन रूप गर्व मतवारे
भुजभरि मसकत मलत परस्पर मुख पर रोरी री । मची है०
अखियाँ रुचिर मिलत जब इनकी भूलि जात हैं सुधि निज तनकी
पुनि धीरज धरि करन लगत त्योंही झक झोरी री । मची है०
परम अलौकिक अनुपम पावन दोउनकी यह केलि सुहावन
प्रेम निहारत हृदय उठत आनन्द हिलोरी री । मची है०॥ १०॥

देखो देखो आली दोउ खेलत हैं होरी री
राघव रँगीले पिय प्यारी सिय गोरी री ।
मारत कमोरी मुख मींडत है रोरी दोऊ
बोरत है रंग मांही अंग बरजोरी री ।
चलत कटाक्ष मृदु हास युक्त दोउन के
हीयमें उठत रसराजकी हिलोरी री ।
कैसे कैसे प्रौढ गूढ हाव भाव दोऊ करैं
कैसे इन सीखे हैं न बीती बैस भोरी री ।
बोलत सिखी सी बानी चित्र की लिखी सी सब

सखियाँ खरी हैं भई प्रेम मद भोरी री ।
उमग उठ्यो है अनुराग आलि वृन्दनको
सोही यह सोहत उडत नाहिं रोरी री ।
देखे यह लीला सो विकावै बिन मोल प्रेम
होरी ना ठगोरी है कि है ये चित्तचोरी री ॥ ११ ॥

रसिकनके शिरताज, खेलत होरी रघुनन्दन सिय स्वामिनियाँ
मदमाँती अलि चहुँ दिशि ठाढी लीन्हे साज समाज । खेलत०-
नाचहिं गावहिं सुख उपजावहिं विविध सुबाजन बाज । खेलत०-
धुन्धि गुलाल छये नभ बादर बर्षा भो ऋतुराज । खेलत होरी०
रँगभीने पट पीत चुनरिया अति अनुपम छवि छाज । खेलत०-
भुज भरि चूमहिं वदन परस्पर लाज गई जनु भाज । खेलत०-
निरखि प्रेम अति भयो मुदित मन जनु पायो जगराज । खेलत०
॥ १२ ॥

दम्पति आनँद कन्द, खेलत होरी सरयूतीर निकुंजनमें ।
चम्पक वरणी जनक नन्दिनी मरकत द्युति रघुनन्द । खेलत०-
गावत फाग बजावत बाजन सखा सखिनके वृन्द । खेलत होरी०
पिचकारी मारत रोरी मलि लाल करत मुख चन्द । खेलत होरी०
भुजा अंस धरि ललकि ललकि दोउ मुख चूमहिं सानन्द । खे०-
गहि गहि मसकहिं सिसकहिं प्रकटहिं विविध केलिके फन्द । खे०-
प्रेम केलि यह निरखि दुहुन की मिटहिं अखिल दुख द्वन्द । खे०-
॥ १३ ॥

हे री आली आज खेलत हैं दोउ होरी ।

मनोहर सजल जलधर वरण रघुवर ताडित द्युति सिय गोरी।
आज खेलत हैं दोउ होरी०-
कोउ कर थार गुलाल लिये हैं कोउ केशर रँग घोरी
शोभन विलसत विपुल सखिजन नवल तनु शुचि रुचि सखन गन
यौवन उमगन पूरित तन मन लिये हैं निज निज ओरी। आज०-
डफ मंजीर मृदंग बजावत नच नच गावत होरी
केशर चरचत मुख शशिन पर अबिर डारत हैं झोरिन भर भर
मलत बरजोरी रोरी उमग भर करत दोउ झकाझोरी। आज०-
दम्पति की पिचकारी मारनि डारनि रँग भरि झोरी
लपकि भुज भरि देखनि छबि जकि चूमनि मुख उझकनि
झुकनि लखि प्रेम सरस तर केलि अमृत छकि कहहु मोहत न
कोरी। आज०- ॥ १४ ॥

सलोने पिया नवल किशोरी खेलैं फाग
देखो री वय थोरी थोरी पिय श्यामल सिय गोरी। खेलैं फाग०
डारत हैं अबीर भरि झोरी मारत रँग पिचकाकारी री
छिरकत रंग कमोरी बरबश मींडत हैं मुख रोरी। खेलैं फाग०
केशर चरचत भुज भरि मसकत धरि झकझोरत आली री
होरी के मिष डारि ठगोरी करत युगल चित चोरी। खेलैं फाग०
बिसरी सुधि तन प्रेम मगन मन भई हैं सखियाँ सारी री
निरखत हैं आनन्द कन्द वर दम्पति छवि तृण तोरी। खे०-॥१५॥

देखोरी खेलैं श्रीसियरघुवर रंग महलमें फाग
अतिशय अनुराग है दोउनके मनमें रँग बरसावैं अंग भिगावैं

मसलैं मुख लाल गुलाल प्रीतियुत बरजोरी । खेलैं श्री०
भुज निशंक भरि लाय अंक पिय चूमत हैं सिय मुख मयंक,
यह छबि अनुपम लखिके सप्रेम सब सुकृतनको फल
आज लहोरी । खेलैं श्रीसिय रघुवर रंग महलमें फाग ॥ १६ ॥

होरी खेल रहे हैं अलबेले श्रीसियरघुनन्दन ।
ताकि ताकि मारत हैं पिचकारी डारत रंग करत रंजित तन
चूमत भुज भरि अमल कपोल ललित बरजोरी । होरी०
कोमल कुसुम गेंद ताकि मारत मींडत वदन चन्द्र पर रोरी
झक झोरी लखि हिये उठत आनन्द हिलोरी । होरी०
रोरी रंजित वदन दुहुनके छवि पावत सन्ध्या के शशिकी
पान करत छवि सुधा प्रेम दृग किये चकोरी । होरी० ॥ १७ ॥

सिया रघुनन्दन खेलत फाग लिये आलि वृन्द सखा वहु संग ।
गुलाल मलें मुख जोरिनसों बहु डारत रंग भिगोवत अंग ।
परस्पर धाय धैंर मसकैं भरपूर रही अँग अंग उमंग ।
मनोहर दम्पति की छवि ये हियमें हम राखहिं प्रेम अभंग ॥ १८ ॥

लाल गुलाल उडावनिमें पिचकारिनकी ताकि छोरानिमें ।
रोरिनसों मुख मींडन माहिं कमोरिनसों रँग बोरानिमें ।
हास विलासकि बातनमें मुसकावनि भौंह मरोरनिमें ।
फाग समै मन प्रेम फस्यो इन दम्पतिकी झकझोरानिमें ॥ १९ ॥

खेलके प्रीतमके सँग फाग विराजत श्रीमिथिलेशलली ।

रंजित रंगनमें सब अंग छुटी घन केशनकी अवली ।
शोभित हैं जनु पुष्प परागन संयुत हाटक कंज कली ।
प्रेम रही मँडराय मनो तिहिं पै रसलुब्ध अली अवली ॥ २० ॥

कुंजमें खेलत होरी जनकनन्दिनी राम ।
दामिनि वरणि प्रिया अलबेली पिया सजल घनश्याम ।
पिचकारी मारत रँग डारत अनुपम कौतुक धाम ।
मलत परस्पर मुख पर रोरी रसिकनके विश्राम ।
भुज भरि भरि चूमत बरजोरी अमल कपोल ललाम ।
रूप माधुरी लखि दोउनकी लजत अमित रतिकाम ।
दम्पतिकेलि प्रेम अवलोकहु निशिदिन आठों याम ॥ २१ ॥

खेलैं होरी सिय गोरी प्यारे रघुवरसों ।
बोरि दये रँग माहि सखनको सखियन पिचकनके झरसों ।
डारि गुलाल लाल कर दीन्हे रँगे सुकुमकुम केशरसों ।
दिये भगाय हराय सखनको सखियन होरी संगरसों ।
राम लखन अरु भरत रिपुहनहिं धाय धरे कोमल करसों ।
चारिहु नवल वधुनके नियरे लै आईं अति आदरसों ।
रंग डारि मुख मलदइ रोरी नयन अँजाये काजरसों ।
सारी दई उढाय रचाये कर अरु चरण महावरसों ।
प्रेम सबन छाडे दुलहिनकी जय कहाय ऊंचे स्वरसों ॥ २२ ॥

खेलैंहोरी रँगीले राम सिया, रसिक जननके चित बसिया ।
मेघ वरण मन हरण नवेले प्रिया दामिनी द्युति लसिया ।
नव यौवन आगमन जनावत तिय दृग पिय भीजत मसिया ।

उमँग भरे रँग डारि परस्पर वसन भिगोवत जरकशिया।
झोरी भरि गुलाल दोउ डारत रोरी मींडत वरवसिया।
टोना करत हरत चित विनु गथ प्रेम विलोकत मृदु हँसिया॥२३॥

खेलत हैं होरी राघव रँग भीने स्वामिनि जनकलली।
छिरकत केशर नीर सुरँग अवीर डारत भरि भरि झोरीं
रोरी वरजोरी मुख पर मलहिं भली। खेलत हैं होरी०
पिचकारिन भरि रंग सहित उमंग मारत तकि तकि दोऊ
भरि भरि भुज चूमहिं कलित कपोलथली। खेलत हैं होरी०
छकी युगल अनुराग गावत फाग बाजन विविध वजावत
परमानँद पावत छवि लखि अलि अवली। खेलत हैं होरी०
तिनकर जीवन धन्य प्रेमानन्य ध्यानावस्थित हिय करि
अवलोकहिं जे वर दम्पति रंगरली। खेलत हैं होरी०॥२४॥

पिचकारी अचानक दै गयो री।
मींडन मिष रोरी वरजोरी छतियां छैला छ्वै गयो री।
केशर चरचि अमोल कपोलन मनसिज ताप चढै गयो री।
हारी धोय अनेक यतन करि नेह रंग नहिं पै गयो री।
मधुर मधुर मुसकाय प्रेम वह चितवनमें चित लै गयो री॥२५॥

होरी खेली गई न मोसो प्यारे राघव संग
उठी न जाने दृष्टि मिलत ही उरमें कहा तरंग।
रोरी मींडन हेतु पियाने पकरि लई जब मोहि
जोतिहि अवसर दशाभई वह किमि समुझाऊँ तोहि।
रोरी को ह्वै गयो रंग सखि परसत ही मम गात

रोम उठे तन काँपन लाग्यो बिना शीत अरु वात ।
पीतम हू मम निकट रहे री झोरी माहिं गुलाल
पै मोसों डारी न गई भो कहा न जाने हाल ।
भोरी भोरी प्यारी प्यारी सुनत प्रियाकी बात
मगन भई आली सप्रेम हँसि गहे चरण जलजात ॥ २६ ॥

वृथा उपदेश करत काहे अब नाही मन मेरो ।
मानत नाहिं नेकहू सिखवन समझायो बहुतेरो ।
जबतें फाग लख्यो कुंजनमें श्रीसिय रघुबर केरो
तबतें यह मन मोहि छाँडिके भो उन ही को चेरो ।
दम्पति झकझोरनि रँग बोरनि नेह परस्पर केरो
निरखि निहाल भयो तँह मचल्यो फिरो नहीं पुनि फेरो ।
वे जन मानत नाहिं सिखावन काज करहु री तेरो
प्रेम अलौकिक यह विलास जिन स्वप्ने हू में हेरो ॥ २७ ॥

होरीमें हे री हियरा हरि लैगे रघुनाथ हमारो ।
तबतें कल आवे नाहीं पलहू घर भावे नाहीं
जबतें नयननतें उनको मोहन शोभन रूप निहारो ।
गहि कर भुजमें भरि लीन्हीं रोरी मुख पर मल दीन्हीं
जोरीसों री गोरी तोरी सोंह सकल तन मन रँग डारो ।
अब हम नहिं रोकी रहिहैं दासी उनहीं की बनिहैं
स्यानी मानो वा असयानी चाहो सोही प्रेम विचारो ॥ २८ ॥

राम सियाजीको रंगमहल माहीं
फाग खेलत लखि भई मैं मगन आली ।

सुखद सजल घन दामिनि वरण दोउ
वयस किशोर रोम रोममें अमित छवि
उपमा न दृष्टि माहिं आवत हैं उनकी री
खोजि खोजि हारी मति सकल भुवन आली।
मदन उमँग भरे रूप मद माँत दोऊ
ललकि ललकि रंग डारो री आपस माहीं
लपकि लपकि भुज भरि भरि बरजोरी
रोरी मलि मलि कीन्हे रंजित वदन आली।
संभ्रम सहित पिचकारीकी भरनि तकि
छांडनि झुकनि छवि कहि ना परत मोतें
अंकमें भरनि अंग मसकनि सिसकनि
वदन चूमनि हर लीन्हो मेरो मन आली।
भावत न भवन सुहावत न मोको कोऊ
मन न लगत गृह काज बिच साँची कहूं
प्रेम अति चतुर खिलारी अलबेले दोऊ
लागे ही रहत मेरे सन्तत दृगन आली॥ २९॥

मोपै प्यारे डारि सुरंग गये॥
तब ही तें उनके वश माहीं तन मन प्राण भये।
एक हु पल कल नाहिं परत है उनके बिन चितये
परम मनोहर श्याम रंगमें लोचन युगल रये।
अब एकान्त पाइ भुज भरि हों करिहों रंग मये
प्रेम मनोरथ सफल करूंगी जे हिय गगन छये॥ ३०॥

आज मन हरण पियाको मैं होरीमें लाल करूंगी।
रुचिर गुलाल उडाय अचानक नयनन माझ भरूंगी।
बरजोरी झकझोरी करि हों बैयाँ धाय धरूंगी।
विविध रंग तन बसन बोरि हों मुख रोरी मसरूँगी।
मनभानी करिहों सप्रेम मैं नाहिन नेक टरूँगी ॥ ३१ ॥

फागन उन बिन मोहि री सखि नाहिं सुहावै।
लतिका तरु वन अरु बागन माँहिं री फूले हैं सारे
धारे अरुणारे किसलय नाहिं री दहकत अंगारे
साँची सुन बात ये दिन रात मेरो जिया जरावै।
दुखवत हैं कोकिल केकी कीरकी कटुतर चिकारैं
बोलतहैं घातक चातक घोर भृङ्गावलि झंकारैं
लागत है तीर सरिस समीर छिन छिन पीर बढ़ावै।
तब ही है साँचो फागुन प्रेम जब उनको मुख दरसै
बिन ही डारे री अनुपम रंग सब अंगनमें सरसै
रंग महल माहिं जब वे आय भुज भरि कंठ लगावै ३२

खेल रहे रामसिया होरी री आली
उमँग भरे करत झका झोरी री आली।
विविध गुलाल उडाते हैं झोरियाँ भर कर
अदासे मारते पिचकारियाँ हैं तक तक कर
कमोरियोंसे परस्पर रहे हैं रंजित कर
मसकते अंग हैं निःशंक अंक भर भर कर
ललकि ललकि युगल रुचिर वदन मलत रोरी री आली। खेलरहे०

खड़ी हुई हैं जो सखियाँ वो फाग गाती हैं
मृदंग वीणा व बाजे विविध वजाती हैं
विलास हासकी बातें कई सुनाती हैं
खुशीसे अंगोंमें फूली नहीं समाती हैं
निरखि निरखि दम्पति छवि सकल भई भोरी री आली। खेलरहे०
सघन निकुंज ये सरयू सरितकी ये धारा
वसन्त साज ये सुखियोंके प्राणका प्यारा
जो बँध रहा है समा इस समयमें ये सारा
यही है चाह हृदयसे न हो कभी न्यारा
केलि करैं प्रेम तहाँ सतत नवल जोरी री आली। खेल रहे ३३

ललकि ललकि युगल रंग डारैं री दोउ
लपकि झपकि पिचका तकि मारैं री दोउ।
इधर उधरसे मृदुल पुष्पगुच्छ चलते हैं
अनेक इत्र सुगंधित सलिल उछलते हैं
गुलाल लाल परस्पर मुखोंपे मलते हैं
मसकते अंग हैं बरवश युगल मचलते हैं
अंस उपरि भुज धरि धरि रूप वर निहारैं री दोउ। ललकि०
सखी अनेक सरस फाग गान करती हैं
मृदु स्वरोंसे पिकोंको त्रिमान करती हैं
विदेहराजलली और राम प्यारेकी
सु छवि सुधाका दृगोंसे ये पान करती हैं
परम प्रेम विवश सकल तन मन धन वारैं री दोउ। ललकि३४

पिया पैयाँ परों झकझोरो ना।
आनन्द से सुरंग कमोरी चलाइये
बहु वर्ण की गुलाल व रोरी उडाइये
बरसाइये सुरंग बसन तन भिजाइये
चोवा व चन्दनादि मजेसे लगाइये
पिचकारी दृगन ताकि छोरो ना। पिया पैयाँ०—
हाँ मुख कमल पै नाथ मसल लीजिये गुलाल
चलिये मगर न अंग मसकने की हमसे चाल
केशर लगाके कीजिये चर्चित विशाल भाल
चुम्बन न कीजिये पै अधर बिम्ब छवि रसाल
मोरी नाज़ुक बैयाँ मरोरो ना। पिया पैयाँ०
मानोगे जो न आप तो सखियाँ ये धायँगी
इस सब सखा समूह को पलमें भगायँगी
जबरन् पकडके आपको युवती बनायँगी
मनमानी करके प्रेम ये मिलकर नचायँगी
पुनि सुनि है तुम्हारो निहोरो ना। पिया पैयाँ० ॥ ३५॥

गजलैं०—

निहारो रत्नमय प्रासाद में हैं खेलते होरी
मदन मद मस्त प्यारे रूप यौवन-गर्विता गोरी।
सखी री देखने में आरहा है दृश्य सन्ध्या का
अहा अनुकारिणी है रागकी उडती हुई रोरी।
जडी हैं भित्तियोंमें जो बहुत से रंगकी मणियाँ

चमकती हैं वो कुछ कुछ जिस तरह नक्षत्र गण होरी ।
वही रूपक है इसमें और उसमें भेद है इतना
वहाँ है एक दम्पतिके यहाँ मुखचंद्र हैं दोरी ।
अचानक डालते हैं रंग पिचकारी चलाते हैं
मसलते मुख पै हैं रोरी परस्पर करके वरजोरी ।
मसकते अंग हैं आपसमें भर भर कर भुजाओं में
सिसकते चूमते मुख कर रहे हैं क्या झकाझोरी ।
रसिक संजीवनी है प्रेम प्रेमी नेत्रकी पुतली
बसो सन्तत हमारे हृत्कमलमें यह नवल जोरी ॥३६॥

खेलते हैं फाग प्यारे राम सियजू स्वामिनी
देख शोभा धैर्य धर कर हे परम वडभागिनी ।
डालते हैं रंग रोरी हैं वदन पर मल रहे
मारते पिचकारियाँ हैं किस अदासे कामिनी ।
अंकमें भर कर परस्पर चूमनेको मुख कमल
कर रहे बरजोरियाँ चितचोरियाँ हे भामिनी ।
फागमें यों श्याम गोरे दम्पती छवि पा रहे
हों झगडते जिस तरह अनुपम सजल घन दामिनी ।
केलि दम्पतिकी निरख कर मग्न हैं सखियाँ सकल
रूप मद माती मनोहर गा रही हैं रागिनी ।
रागरंजित दम्पती मुख रूप सन्ध्या चन्द्र पर
प्रेम निज अँखियाँ चकोरी तू बना अनुरागिनी ॥३७॥

हृदय लुभावन सरस सुहावन प्रमोदवनमें मची है होरी

उधर हैं रघुवर इधर हमारी हैं स्वामिनी श्री सियाजी गोरी।
सखा बहुत से हैं साथ उनके हैं संग इनके अनन्त सखियाँ
लिये हैं पिचकारियाँ करोंमें भरे हुए हैं गुलाल झोरी।
नवीन यौवन है सबके तनमें उमंग होरीकी सबके मनमें
उछालते हैं अबीर तक कर हैं मारते रंगकी कमोरी।
लपक झपक कर नवल युगल दल सुरंग आपसमें डालते हैं
बजाते डफ हैं धमाल गाते हैं कह रहे होरी होरी होरी।
भिगो रहे हैं वसन परस्पर स्वरूप मदमत्त दम्पती ये
मसक रहे हैं मचल रहे हैं मसल रहे हैं मुखों पै रोरी।
मृदुल सुमन गुच्छ किस अदासे ये तक के आपसमें मारते हैं
ये फाग के छलसे कर रहे हैं रसिक जनोंके हृदयकी चोरी।
हमें तो अचरज ही हो रहा है निहार कर हाव भाव अनुपम
ये आगये किस तरह से इनको अभी तो है उम्र थोरी थोरी।
वो धन्य जन हैं हृदयमें जिनके ये प्रेम सन्तत हैं केलि करते
अमल सजल घन वरण ललनवर तडितप्रभाहर नवल किशोरी
॥ २८ ॥

ये आज फागमें दोनों कमाल करते हैं
विलोकते ही दृगोंको निहाल करते हैं।
प्रमोद वनकी निकुंजोंके कल्प वृक्षोंको
स्वदेह कान्तिसे चम्पक तमाल करते हैं।
पियाके मुख पै है मलती गुलाल प्यारी जू
प्रियाके मुखको वो रोरीसे लाल करते हैं।
अजब अदासे परस्पर हैं रंग बरसाते

मसकते अंग हैं लीला रसाल करते हैं ।
ये प्रेम रंगसे रंजित उन्हें भी करते हैं
जो इनकी फागका दिलमें ख़याल करते हैं । ॥३९॥

मजा चखाती तुम्हे आज श्याम होरीमें
जो इस प्रकार से होती न नाथ भोरी में ।
शिथिल शरीर यकायक मेरा हुआ ऐसा
भरी ही रहगई सारी गुलाल झोरीमें ।
हुआ न बंद ये देखो प्रवाह जारी है
अजीव वस्फ है प्यारे तेरी कमोरीमें ।
जो छल करोगे तो हम फाग फिर न खेलेंगी
लगाया चाह मिलाकर कपूर रोरीमें ।
कहा पियाने कि होरीमें प्रेम हारी हो
हुई है जीत तुम्हारी तो चित्तचोरीमें ॥४०॥

होरीमें संवलियाने दिल मेरा चुरायाहै
सुध बुध को हरण करके बेसुध सा बनाया है ।
एकान्त निपट पाकर आकर के निकट उनने
मुख पर है मली रोरी और रंग लगाया है ।
भर करके भुजाओंमेंहै देह मेरी मसकी
रंजित है किया मुझको और खुदको बचाया है ।
छुटता ही नहीं आली दिन रात कसकता है
कुछ रंग अजब उनने आँखोमें रमाया है ।
वो रूप परम सोहन मुसकान मदन मोहन

अन्दाज हरेक उनका नयनोंमें समाया है । ॥ ४१ ॥

राजीवविलोचनने सजनी मन मेरा चुरालिया होरीमें ।
अनुपम छवि रूप ठगोरी से मुझे अपना बनालिया होरीमें।
एकान्त में आकर घेर लिया, उनने मुझ पै रँग डाल दिया
निःशंक भुजाओं में भर कर सीने से लगा लिया होरी में।
बरजोरी रोरी मुख पै मली मन भाया किया मेरी कुछ न चली
मुझे रंग से रंजित उनने किया और खुदको बचा लिया होरीमें।
मुसकान समेत विलोक लिया सखि टोना सा मुझ पर डालदिया
घुँघरारी काली नागिन सी जुल्फोंमें फँसा लिया होरीमें ।
गुण प्रेम सदन सुख सागरको अति सुन्दर अनुपम नागरको
उस चन्द्र वदन को मैंने भी नयनोंमें बसा लिया होरी में ॥४२॥

डोलके पद०—

दोउ डोल में पिय प्यारी झूलैं, ठाढीअलियां मुदित झूलायरही।
पारिजात द्रुमावली तिन पर छई बहू भाँति लतिका
कोटि नन्दन विपिन छवि याहि कुंज सरिस न तूलैं । दोउ०
कनक रचित हिंडोर मणिगण खचित ग्रथित सृगादि किसलय
निरखि रचना रुचिर गिरा विरञ्चि मति गति भूलैं। दोउ०
मुखप्रभा गनि चन्द चन्दिनि डोलकान्ति दिनेश कर गनि
वन प्रमोद तड़ाग सरसिज छिन मुदत छिन फूलैं। दोउ०
मंद हँसि हँसि करत बतियाँ ललकि लेत लगाय छतियाँ

प्रेम छवि निरखत परस्पर भुज दिये भुज मूलैं। दोउ० ॥ ४६ ॥

झूलत सुन्दर डोल मझार, स्वामिनि सिय रघुनन्दन प्यारे ।
मृदु किसलयमय डोल सुहावन, निरखत हिय अति सुख उपजावन
माला जालक चित्त लुभावन, मानो निज कर काम सँवारे ।
गद्दी मृदु गुलाब पखरिनकी, मसनद विविध सुरभि सुमननकी
डांडी विलसत कल्पलतनकी, निरखत मोहत जोहन हारे ।
दम्पति श्यामल गौर सुजान, शोभाधाम सकल गुण खान
प्रेमी भक्त जननके प्राण, राजहिं अंसन पर भुज डारे ।
लोचन युगल पत्रपुट करि करि, अनुपम रूप सुधारस भरिभरि
दोऊ पान छबीले करि करि, सजनी भये परम मतवारे ।
तन पर अनुपम लसत लुनाई, उपमा परत न कतहुँ लखाई
खोजत खोजत त्रिभुवन माहीं, गणपति गिरा शेष हू हारे ।
यह छवि परम अलौकिक पावन, हिय अनुराग तरंग बढावन
देखत हैं हम भरि भरि लोचन, धन धन प्रेम सुभाग्य हमारे ४४

बिराजते हैं सुमन डोल में सिया रघुवर
सुमन सिंगार सिंगारे हुए परम सुन्दर ।
मनोज्ञ रूप सुधारस का पान करते हैं
रुचिर विशाल विलोचन पुटोंमें भर भर कर ।
जो फागकेलिमें वरजोरियाँ हुई थी कल
उन्हींका जिक्र ये करते हैं आज हँस हँस कर ।
सखी सप्रेम झुलाती हैं गीत गाती हैं

रँगी हुई हैं युगल रागरंगके भीतर।
यही है चाह हमारा ये चित्त अलि बनकर
सदा भ्रमा करे इनके चरण सरोजों पर॥ ४५ ॥

इति श्रीसीतारामप्रेमप्रवाह सप्तमतरंग समाप्त।

॥ श्री ॥

श्रीसद्गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

श्रीसीतारामप्रेमप्रवाह

अष्टम तरंग

दो०-अष्टम रुचिर तरंगमें सिय रामहिं उर आनि ।
वर्णत प्रेम चितावनी विनय सुमंगल खानि ॥

पद०—

राम सुखधाम हैं सरल समरथ धनी
तिनहिं सेये सकल विधि कुशल आपनी ।
दास गुण चित धरहिं दोष सब परिहरहिं
करहिं विन हेतु हित हृदय करुणा घनी ।
गीध गणिका शबर भालु कपि रजनिचर
राम संमुख भये बात सबकी बनी ।
जे सदूषण रहे नाम जपि ते भये
भुवन भूषण सरिस वेद कीरति भनी ।
कपट परिहरि सकल दीनता हृदय धरि
भक्ति कुरु प्रेमयुत भव विपत भंजनी ॥ १ ॥

रघुनाथ सो है हितू नाहिं कोई, मन मूढ है ना यह बात गोई ।
सुधरी भई के सब लोग साथी, बिगरै तबै होत नहीं सँघाती
बिन स्वार्थ कोई अपनो न होई । रघुनाथ सो है०...
यह जानि जीमें प्रभुको भजो रे, जग जाल झूठो सबको तजो रे ।

भल प्रेम यातें सब भाँति होई। रघुनाथ सों है०॥ २॥

धिक धिक रे मनवा साहब बिसरायो श्रीरघुराज सों।
परमारथ बादी छिन हू ना छाँडैं जाको नाम
हिय बीच निरन्तर राखैं जिहि शंकर सुर शिरताज सों।
खग गीध निशाचर व्याधादिक अगणित हिंसक जीव
अरु पाहन तारे कहु को है राम गरीबनवाज सों।
रे रे कृत हन्ता करुणा करि के जाने तनु तोहि
दीन्हो अति पावन तरसै जाको जो है सुरराज सों।
तोहि बोरहि प्राणी संसृति सागरमें गाहिके बाँह
अपनो करि मान्यो मूरख जो तैने साज समाज सों।
जग विषय विपिन में पच्छी ज्यों विहरै तू निःशंक
का करि हैं रे जब झपटैगो काल बली तोहि बाज सों।
सुत मात पितादिक हितकर जो दीसै हैं अति तोहि
जब यम भट गहिहैं एको नहिं ऐहैं तोरे काज सों।
यदि प्रेम चहसि भल हियतैं तू कपट सयानप छाँडि
जप नाम निरन्तर दुस्तर जग जलनिधि पाज जहाज सों॥ ३॥

मन भजरे सियबर स्वामी को।
अशरणशरण शरण गुणगाहक शुद्ध प्रेम अनुगामीको।
अखिल विश्व वन्दित सुरसेवित घट घट अन्तरयामीको।
शिला गीध निस्तारक तारक अघी अजामिल नामीको।
प्रेम वही निस्तार करैंगे तोसे कुटिल खल कामीको॥ ४॥

निशि दिन भज प्राणी आरतहर रघुवर आनँदकन्द॥

तन धन अरु ऐश्वर्यको गर्व न कर मन माहिं
तव इनमें तैं एकहू करि है रचा नाहिं
जब यमदूत तोहि लै चलि हैं डारि गरे बिच फन्द ।
मात पिता भ्राता सुहृद हितकर दीसहिं तोहि
चाहहिं यह स्वारथ सकल तोहि न चाहहिं कोय
बिन स्वारथ चाहनहारे हैं केवल दशरथनन्द ।
नारि कुलीना गुणवती रूपवती अत्यंत
अति निन्दित है जगतमें छाँड दियो यदि कन्त
त्यों हीं बिन सुमिरे प्रभुकहँ नर गुणवान हु मतिमन्द ।
महा मोह निद्रा प्रबल मन मूरख कर चेतु
बिषयनके सुख स्वप्न हैं जनि भटकै इन हेतु
प्रेम करहु वह यत्न मिलै तोहि जातैं परमानन्द ॥ ५ ॥
श्रीरघुबर छाँडि और जगमें नहिं है रे कोई तेरो ।
निशि दिन भज ताहि लाय चित भूलहि ना रे चेतरे २
सब तजि आश पाश बन साँचो सेवक वाही केरो । श्रीरघुबर०
तन धन अरु कुटुम्ब प्रभुताको गर्व न हिय धरि जब यमदूत
पकरि लै चलि हैं तब दुख पै हैं तू पछितैहैं राखि हैं
प्रेम श्रीरघुबर और एक नहिं आवैगो रे तेरो नेरो । श्रीरघु० ॥६॥
राम सीता पद ध्यावोरे, यों ना जन्म गमावो रे ।
या जग बिच कछु सार नाहिं है है सब झूठो सार है रे
सीता राघोको नाम जाप ताको कीजे बेर न नेकहु लावो रे । यों ना०
हित नीको वे करि हैं रे सन्तत तव परलोक लोकमें
पितु माताकी सम तो को सन्तत रखि हैं प्रेम गोदमें

चित्तसों ना बिसरावो रे यों ना जन्म गमावो रे ॥ ७ ॥

भली प्रकार जान बूझि होत काहे बावरो
बिचार चारुनेत्र युक्त होत काहे आँधरो।
बडे बडे प्रतापवान तेज पुंज हैं भये
कराल काल गाल माहि अन्तमें समागये
समस्त ठाट बाट राज पाट है रह्यो धरो। भली प्रकार०...
अनेक देह तैं जराय छार हाथ सों किये
तऊ न नेक बोध होत हाय हाय रे हिये
ममत्व देह गेह और द्रव्यको नहीं टरो। भली प्रकार०...
बिचारि देख विश्व माहिं सार एक है यही
सदा विसारि सर्व आस जापु राम नामहीं
कृपानिधान रामको तू प्रेम राखु आसरो। भली०... ॥ ८ ॥

सीता राम चरण चित दीजे
है संसार असार सकल ये स्वप्न हु में नहिं याहि पतीजे
मन थिर करि परिहरि प्रपंच छल युगल नाम रस भरि भरि पीजे
श्रवणन सुनिय युगल कल कीरति गुणगण गान निरन्तर कीजे
निशिदिन यहि आचरण निरत रहि प्रेम मनुज तनु फल भल लीजे
॥ ९ ॥

श्रीसियराम बिपतहरवैया, दुहुँ लोकनमें सुख सरसैया।
स्वारथ बिन हित करहिं सबन को जन पर रखहिं करनकी छैया।
दोषनकी दिशि दृष्टि न लावहिं स्वल्प हु गुण निज चित्त धरैया।
निज गौरव तजि होत दास वश सुमिरत ही दुख दुरित दहैया।

यह असार संसार त्यागि सब युगल चरणमें लागहु भैया।
प्रेम भलो यहि माहि तिहारो लागिहैं पार सहज ही नैया ॥१०॥

जिन पावन मानव देह दई उपकार अनेक प्रकार किये
चितवैं पित मात हु तैं हित सो गुण औगुण कोटि धरैं न हिये
इक बेर प्रणाम किये अपनावहिं तारहिं धोके हु नाम लिये
अस रामहिं प्रेम भजे नहिं जो तो कहो जगमें फल कौन जिये११

निशि बासर जे अति सोवहिं प्रेम विमोह महा मद पान किये
बररावत ज्यों बतरावत हैं अनखावत सज्जन छाँह छिये
अपकार विकार अपार भरे नहि सार असार विचार हिये
पग एकधरे न सुमारगमें तो कहो जगमें फल कौन जिये१२

नरकाय मनोहर पाय सप्रेम न राघवके गुण गान किये
लहि वित्त अपार कियो उपकार न लोक सुधार न नेम लिये
तन छीन कुदारिद दीननको लखि प्रेम दया उपजी न हिये
न चल्यो पग एक सुमारगमें तो कहो जगमें फल कौन जिये १३

तेरे जन्मते ही तेरी माताके स्तनोंमें दूध
पैदा किया जिसकी उदार ऐसी नीति है।
जागते व सोतेमें जो रहता सदा है साथ
करता निवारण सदैव नाना भीति है।
कारण बिना कृपाल सन्तत प्रणत पाल
प्राणियों पै एक रस रखता जो प्रीति है।
भूला हुआ है तू ऐसे निज प्रभुको हे प्रेम

हाय हाय मूर्ख तेरी कैसी यह रीति है ॥ १४ ॥

रामसियाजीसैं लाग रै जिवड़ा।
भोग जगतका सब मृग जल छै हिरण वण्यो मत भाग रै जिवड़ा।
मिनखा जूँण राम भजवा की मतनै लगावै ईंकै दाग रै जिवड़ा।
सूतो घणो मोहनिद्रामें छोड आलकस जाग रै जिवड़ा।
धन परवार भवन सपना छै सबकी ममता त्याग रै जिवड़ा।
प्रेम भलो अपणो चावहै तो युगल चरण अनुराग रै जिवड़ा ॥१५॥

समझ मन बावला रै काँई पर इतनो करै छै गुमान।
जीं अपणी कायानै देखर घणो रह्यो तू फूल
या तो इक दिन भसम होयली ढूँढी मिलै न धूल।
मान रख्या छै जो तू अपणा ये धन घर परिवार
जीं दिन आर मौत पकड़ैली एक न चलसी लार।
भलो बुरो तू ज्यो कुछ करसी सो छै तूनै त्यार
अन्धधुन्द व्है मत चालै रै करलै परउपकार।
मृग तृष्णा जल जगका सुख छै दुख याँको परणाम
दोन्यूँ लोकाँमें सुखदायक छै प्रभु हीको नाम।
खबर नहीं कुणसी स्वासामें काल दबाले आर
तीं सैं प्रेम हरेक सासमें राम नाम उच्चार ॥ १६ ॥

गजल।

सिया रघुवर बिना तेरा कोई हितकर न होना है
जगत जंजालमें फसकर स्वजीवन व्यर्थ खोना है।

मनुजतन देव दुर्लभ पाके विषयासक्त होजाना
ये सुन्दर कर्म्मभू में हाथ से कांटोंका बोना है।
जगत्में स्वार्थ संगी हैं उन्हें अपना समझ लेना
ये पत्थर बांध करके कूपमें खुद्को डबोना है।
समझना धाम धन परिजनको अपना भूल है भारी
अरे इन सबसे आखिरकार तुझको हाथ धोना है।
भला धन धामकी क्या बात तन भी तो नहीं तेरा
किसी दिन ये भी छुटकरके चिता शय्यामें सोना है।
नज़र आते हैं जो अपने अरे सुन मूढ उनमें से
किसीको तू कोई तुझको दिवस दो चार रोना है।
इकट्ठा पाप रूपी भार तू दिन रात करता है
किये जा याद रखना यह सकल तुझ ही को ढोना है।
विकट यम भट तुझे जब बाँध लेंगे पाशके अन्दर
इकेला जायगा तब तू न कोई साथ होना है।
घसीटैंगे तुझे लटकाके ऐसे मार्गके अन्दर
कि जिसमें लोह कंटक और छुरियोंका बिछोना है।
सकल फट जायगा तन मुद्गरोंकी मारसे तेरा
तू तब रो रो के अपने खून से वह पथ भिगोना है।
सँभलना हो सँभलजा अब तलक भी कुछ नहीं बिगडा
शरण उन रामकी जा जिनका ये सब जग खिलौना है।
कृपागंगा बहा करती है जिनकी एकरस सन्तत
विरुद जिनका शरण आये हुओं के पाप धोना है।
भयातुर होके ये कह हे पतितपावन शरण हूँ मैं

तेरे तो वास्ते यह प्रेम सौरभ और सोना है ॥ १७ ॥

यह क्या किया जो तैंने निज नाथको बिसारा ।
अपने भले बुरेको तूने नहीं विचारा ।
उपकार सब तरहसे उनने तेरा किया है
जो है सुरोंको दुर्लभ वह तन तुझे दिया है
जो साधनोंका घर है और मोक्षका है द्वारा। यह क्या०
सब योनियोंके अन्दर भटका कई दफा तू
मरने व जन्मनेसे अति ही दुखित हुआ तू
अफसोस इन दुखोंसे अब भी नहीं तू हारा। यह क्या०
माता पिता व भ्राता सुत देह गेह जाया
है कौन जिसने इनको अपना नहीं बनाया
पर कौन साथ लेकर है अन्तमें सिधारा । यह क्या०
व्यवहार सब जगत् का है ज़िन्दगी का मेला
निश्चय किसी दिवस है जाना तुझे अकेला
उस वक्तमें न देगा कोई तुझे सहारा । यह क्या०
जो स्वप्न सा है जग सुख उसको तू चाहता है
सच्चा जो सुख है तेरा उसको बिसारता है
इस बातसे नहीं है हरगिज़ तेरा उबारा । यह क्या०
जितने जगतमें तुझको अपने नज़र हैं आते
रखते हैं साथ तेरे सब स्वार्थ ही के नाते
बिन स्वार्थ है हितू इक अवधेशका दुलारा । यह क्या०
हे जीव चाहताहै अपनी अगर भलाई

तजकर कपट कुटिलता उनकी शरण हो भाई
सद्भाव से ये कहदे मैं दासहूँ तुम्हारा। यह क्या०
रघुवर दयाके सागर तुझ पर दया करेंगे
वो दोष प्रेम तेरे दिलमें नहीं धरेंगे
उनको पतितउधारण प्रण है विशेष प्यारा। यह० ॥१८॥

करु कृपा स्वामिनी सीय मृगलोचनी।
जानि शिशु आनु अपराध जानि चित्तमें
देखु दिशि आपनी प्रणत भय भंजनी।
ब्रह्म हरि रुद्र सनकादि नारद सकल
सिद्धि सब शक्ति तैं अहहु तुम वन्दिनी।
मृदुल चित भक्त हित करणि समरथ परम
तुम सरिस है न कोउ जनक नृप नन्दिनी।
देह चम्पक वरण दिव्य तर आभरण
नील पट सरिस घन चन्द्रिका शिर बनी।
कुन्द सम सित रदन भ्रूलता छवि सदन
मन्द सस्मित वदन स्फुटित आभा घनी।
नयन अंजन अँजे मीन खंजन लजे
हरिण कानन भजे दृष्टि दाया सनी।
अंग जलजात मकरन्द छवि सरस अति
कीन्ह बश भ्रमरवत कुँवर कोशलधनी।
दास जन सुख करणि दुःख दूषण हरणि
अभिलाषित दायिनी बानि तव श्रुति भनी।

युगल पद कमल की भक्ति अविचल अमल
प्रेम मोहि दीजिये सकल शुच मोचनी ॥ १९ ॥

सुनिय मम बिनय सियाजू रानी हो ।
शरदशशिवदनिकुन्दकलिरदनि हँसनिकृपासरसअमृतसानीहो
वयसकी थोरी विदेह किशोरी पिया मुख चन्द्र चकोरी स्यानी हो
सेवत ब्रह्माणी रमा गुणखानी सभय रुखजोवत भवानी वानी हो
युगल पदकमल भक्तिदेहु अमल अनन्यता मानसकरम बानीहो
वसो हियमाँहसहित निजनाह प्रेम तवमेरी सबमन मानी हो २०

सियाजी मोको तुमरे चरण ही की आस ।
नीके हैं तापस सुर नर मुनि पै नहिं मोहि विश्वास ।
सब स्वारथ हित सबहिं सुहावत सुमति सरल चित दास
मो सम मलिन कुटिल खल जीवहिं कोउ न बिठावै पास ।
अनहित हू पर करत कृपा तुम कोप न नेकहु भास
सुनि उदारता अतुल शरण मैं आयो सहित हुलास ।
जिन निशिचरिन दशानन आयसु तुमहिं दई अति त्रास
तिनहुँ न दुखवन दई मारुतिहिं असको दया निवास ।
खोटो खरो दास मैं तुम्हरो काटो संसृति पाश
प्रेम हृदय मन्दिरमें सन्तत पतियुत करहु विलास ॥ २१ ॥

सियाजी मोको चरण कमल रति देहु
अतुल कृपामूरति निज दिशि लखि अपनों जन कर लेहु ।
यद्यपि मैं शुभ कर्म्म रहित हूँ मूरख अवगुण गेहु
विमल विरुदकी सुधि करि स्वामिनि तुम जानि छांडहु नेहु ।

लोक प्रसिद्ध कहावत अम्बे अविदित है नहिं केहु
पूत कपूत होत पै जननी तजत न छोह अछेहु ।
पारिजात लतिके अब पुरवहु मोर मनोरथ येहु
प्रेम करहु मम लोचन चातक तुम दोउ दामिनि मेहु ॥२२॥

भावत मोहि सिया चरण जलजात
जिन पर अमित योगिजन-मुनिमन-मधुप माल मँडरात ।
बाल दिवाकर वरण वरण है गुण परन्तु अधिकात
ध्यावत ही मिटजात मोह तम प्रकटत भक्ति प्रभात ।
कामद तरु से अभिमत दाता सकल भुवन विख्यात
भाव समेत जिनहिं सेवत ही भुक्ति मुक्ति मिलजात ।
रच्छा करत सदैव दासकी हरहिं सकल उत्पात
प्रेम दीन अवलम्ब हीन के हैं ये ही पितु मात ॥२३॥

द्वैत अद्वैत कथान लगे कोउ मानत और सबै रस फीके
साधत हैं हठयोग कोऊ जिनको अति भावहिं बिन्दु असीके
शंभु कृपाल सुहावत काहुहि हैं कोउ शक्ति उपासक नीके
प्रेम हमैं अति भावत हैं पदपंकज श्रीमिथिलेशललीके॥२४॥

ते बिजयी गुणसागर ते अति त्रासक हैं कलिकाल बलीके
पुण्य पयोनिधि ते जन प्रेम शिरोमणि सन्तनकी अवलीके
पूजित ते तिहुँ लोकन माहिं विलासी मनोरम मुक्ति थलीके
काय मनो बच सेवक जे रघुनन्दन औ मिथिलेशललीके २५

मोह निशा तम नाशक त्रासक पाप उलूकनकी अवलीके

मार मदादिक तस्कर दुःखद दायक दिव्य सुदृष्टि भलीके
भक्त सुकोकनके सुखदानि विकासक हैं हिय कंज कलीके
हैं सविता यह प्रेम किधों पद पंकज श्रीमिथिलेशललीके ॥२६॥

सियाजी थाँकी जाँवाँ बलिहारीजी
स्वामिनि म्हाकी सकल गुणाँकी थे छो खान ।
रूप अनोखोजी स्वामिनि थाँको रूप अनोखोजी
न दीखै ईंकी उपमा जगत माँहीं और । सियाजी०
वशमें हुया छै जी सियाजी थाँका वशमें हुया छै जी
पियाजी प्यारा रघुवर परम सुजान । सियाजी०
दीन सुहावैजी सियाजी थाँनै दीन सुहावैजी
हियासें थाँके बसै छै दया दिन रात । सियाजी०
गुण ही निहारयाजी सियाजी थे तो गुण ही निहारया।जी०
निहारया नहीं दासाँका कदे भी अपराध । सियाजी०
रोस न आवैजी सियाजी थाँनैं रोस न आवैजी
स्वामिनि थाँको शीतल छै बडोई सुभाव । सियाजी०
और न दीखै जी सियाजी म्हाँनैं और न दीखै जी
बेली छो म्हाँसा आलकश्याँका थे ही एक । सियाजी०
लैर लग्या छाँ जी सियाजी थाँकी लैर लग्या छाँ जी
बणीली म्हाँकी थाँहीकी बणाई सारी बात । सियाजी०
सेवा बकसो जी सियाजी म्हाँनैं सेवा बकसोजी
लगाल्यो थाँका चरणाँमें म्हाँको मन प्रेम । सियाजी० २७

सिया स्वामिनि नेक कृपा करिये, मम औगुण पै चित ना धरिये।

तुम प्राण प्रिया रघुनन्दनकी, अति राखत सार सदा जनकी
भव दुःख कुरोगहिं विद्दरिये, पद पंकज प्रेम हिये भरिये।
मतिहीन मलीन अघी अति मैं, नहिं गावत पावन कीरति मैं
अपराध अगाध क्षमा करिये, जननी अपनी ढरनी ढरिये।
सद्भाव कुभाव तैं दास भयो, तुमरो यह प्रेम कहाय गयो
यह जानि त्रितापनको हरिये, अब अम्ब विलम्ब न आचरिये
॥ २८ ॥

गजल०—

कीजे दया तनकसी मेरी स्वामिनी सिया
आनन्द जिससे प्राप्त करे मम विकल हिया।
जप योग ज्ञान ध्यान न मुझसे कभी बने
सत्संगमें रहा न कभी दान ही किया।
पापोंमें लीन मैं हूँ यथा मीन नीरमें
मद मोह काम कोह ने कैदी बना लिया।
किससे कहूँ मैं कौन सुने मुझ ग़रीबकी
दीनोंका है हितू न कोई विश्वमें बिया।
मैं हूँ मलीन तो भी न मुझको बिसारिये
सुनकर परम उदार सुयश आसरा लिया।
चरणारविन्द भक्ति मुझे प्रेम दीजिये
दिलमें निवास कीजिये सन्तत सहित पिया॥ २९॥

सदा जय हो प्यारी सिया स्वामिनी की
रसिक जन बिमल चित्त अभिरामिनी की

असाधारण देह भा धारिणी की
शरण जन मनोमोह तम हारिणी की ।
मनोहर असित कंज दल लोचनी की
त्रिविध ताप हर पूर्ण चन्द्राननी की ।
महा शुद्ध रस राज बासस्थली की
श्री राम भ्रमर हेतु पंकज कली की
परम मत्त वर हंस गति गामिनी की
मदादिक कमल पुंज हिम यामिनी की
रमादिक अखिल शक्तिगण बन्दिनी की
गुणागार मिथिलाधिपति नन्दिनी की
परा भक्ति ऐश्वर्य सुख दायिनी की
प्रणत जन हृदय प्रेम संजीविनी की ॥३०॥

राघव देखिये निज ओर
शरण अशरण तरण तारण दीनवन्धु दरिद्र दारण
हित अकारण विदित यश जग नाथ गई बहोर ।
योग जप तप ज्ञान ध्यान न भक्ति लेश न आन साधन
कृत लखे नहिं होय मम निस्तार कल्प करोर ।
मैं मलिन मति मन्द कामी कुटिल कपट निधान नामी
सकल भाँतिन कुपथ गामी तदपि कहियत तोर ।
अहहिं नातो नाथ तुम सन सो बिचारि बिसारिये जनि
प्रेम हेरहु तनक इत करिके कृपा की कोर ॥ ३१ ॥

बूडत उबारो श्रीरघुबीर

संसृति महा ये जलधि भरो है परम अथाह
राखन हारो कोई ना हमारो जाको लैं सहारो श्रीरघुवीर।
पाहन तरैया कोल भील भैया कपिकुल मीत
जूनी मोरी नैया तुरत तरैगी तनक निहारो श्रीरघुवीर।
हित बिन कारण अधम उधारण अशरण पाल
दूजो को दुनीमें देहै जो सहारो आप ही बिचारो श्रीरघुवीर।
यद्यपि हौं पापी अनृत अलापी मलिन महान
तदपि तुम्हारो प्रेम ना बिसारो बिरुद सँभारो श्रीरघुवीर ३२

पाहन तरैया जन सुखदैया करुणासिन्धु
सब दुखहारी बिपति हमारी दूर करो हो श्रीरघुनाथ।
कामादिक चारी देत दुख भारी दिन अरु रैन
चित थिर व्है ना भजन बनै ना मोतैं रावरो हो श्रीरघुनाथ।
करै मन भायो सुनै ना सिखायो मम मन नीच
कुपथ चलै है तजि के तिहारो प्रीति डगरो हो श्रीरघुनाथ।
बोरै भव माहीं प्रेम बश नाहीं अब मम नाथ
वेगही सम्हारो बूडत उबारो करुणा करो हो श्रीरघुनाथ ३३

तुमहिं तजि काके ढिंग जाऊँ हे श्रीराम
अधमउधारक गुणगाहक तव सरिस अपर कहँ पाऊँ हे श्रीराम।
अवगुण उदधि कृतघ्न अभागी क्रोधी सत्पथ त्यागी मैं
तुम तजि कहहु दीन जन बन्धो काके भवन खटाऊँ हे श्रीराम।
स्वार्थ परायण जगके साथिन जानि निकम्मो त्याग दियो
सुर सुकर्म्म संगी हैं तातैं तिनहु न नेक सुहाऊँ हे श्रीराम।

तुम हू जानि पतित त्यागो तो त्याग देहु पै लाभ नहीं
अन्त वनहिं अपनाये राघव प्रेम तुम्हार कहाऊँ हे श्रीराम ३४

कवहु सुधि मेरी हू लाइय राम ।
समझि मोहि मन्द आचरणयुक्त फेरि मुख जानि विसराइय राम
दया निधि गुणगाहक अघ हरण दया मोहू पर धारिय राम
दूर करि कामादिक षड़ वर्ग हृदय विच भक्ति वसाइय राम
विलज्जित अमित असमशर करण रूपकी झलक दिखाइय राम।
प्रेम निज अधम उधारण विरुद सुरति करि मोहि अपनाइय राम
॥ ३५ ॥

अपनी ओर निहारिये करुणाकर राम ।
नेम धर्म्म आचार व्रत कोऊ शुभ काम
भूलिहु में कीन्हो नहीं नहीं सुमिर्यो नाम ।
आरातिहरण दयाल हो निज जन सुखधाम
विश्व विदित सरकार को अघहारी नाम ।
मैं अत्यन्त मलीन हूँ सव भाँतिन वाम
अस करणी मम नाथ है नहिं नरक हु ठाम ।
तुम बिन राखन हार कोउ मोहि नाहिन प्रेम
यह विचार राखहु शरण अशरण विश्राम ॥ ३६ ॥

मैं अति दीन सुनहु रघुनाथ ।
आयो शरण हरण जन दूषण वेद विदित सुनि प्रभु गुणगाथ।
जप तप ज्ञान योग व्रत वर्जित कवहु न कियो साधुजन साथ ।
देह गेहतें नेह मोहि अति खोयो समय अमूल्य अकाथ ।

राखहु शरण कहों यह किहिं विधि लज्जावश उठत न मम माथ।
जो जिय रुचै करो करुणामय ठाढो प्रेम जोरि दोउ हाथ॥३७॥

हेश्रीरघुवर तुमही हो या जगमें हरवैया विपति अति दीननकी।
तुम तजि जाऊँ कहाँ मैं, थल मोहि नाहिं जहाँ में। हे श्रीरघुवर०
मनुज दनुज सुर ऋषि मुनि योगी हैं सब स्वारथके संगी।
विन स्वारथ हो केवल तुम ही साथी, रघुबर तुमही हो
या जगमें हरवैया विपति अति दीनन की। हे श्रीरघुवर०
प्रेम पतित सब भाँतिन मैं हूँ आप पतित निस्तारक हो
करुणा करके करुणानिधि निस्तारो, रघुबर तुमहीं
होयाजगमें हरवैया विपति अति दीनन की। हे श्रीरघुवर० ३८

सुधि मेरी लेहु दीन दयाल
प्रणतपाल अनाथनाथ कृपाल कोशल पाल।
विमुख व्है तुमरे चरणतें जिय फस्यो जग जाल
सुरझि है नहिं नाथ जब लगि करहुगे न सँभाल।
अवल लखि निगलन चहत विकराल यह कलि व्याल
गरुडगामी स्वामि लेहु छुडाय करहु उताल।
केहि कहों को सुनै को हरिसकै विपति विशाल
हेतु विन हित एक नाथ समर्थ अति सब काल।
देहु रघुपति सुमति अनुपम विरति भक्ति रसाल
राखि चरणनकी शरण मोहि प्रेम करहु निहाल॥३९॥

राखो दयाधाम राम मोको रावरी शरण
यद्यपि मैं शुभ कर्म रहित हूं, कुपथ मध्य सन्तत विचरत हूं

पाप करत नहिं नेक डरतहूँ काम क्रोध मद रत हूँ
पै हो कृपासिन्धु आप पाप पुञ्ज विद्दरण । राखो०
करुणा सागर करुणा करिये निज दिशि देखि ढरन शुभ ढरिये
अवगुण मोर हिये जानि धरिये सुमति नाथ मम करिये
जातें सन्तत करों मैं गुण रावरे श्रवण । देखो०
दीजे पद सरोज रति पावन शुक सनकादि शंभु मन भावन
बसै मूर्ति हिय काम लुभावन प्रेम और कछु चाह न
चाहे छूटै वा न छूटै मिथ्या जनम मरण । राखो० ॥४०॥

सुनहु करुणामय श्रीरघुराय
केहि कारण मो दीन दास की दीन्ही सुरत भुलाय ।
तीव्र त्रिताप तपावत मेरो सन्तत मानस काय
बाप आप अवलोक रहे हो आरति हरण कहाय ।
बन्दी छोरन नाथ हरण दुख दारिद दुरित निकाय
तासु कहाय जीव दुख पावै अहहिं कहा यह न्याय।
अब जानी मैं प्रभु साँचे हिय जनकी कीन्ह सहाय
करिके कृपा कुपन्थ जालतें याहि मिष लियो बचाय ।
प्रणत कल्प तरु मम इच्छा हू सुनिये चित्त लगाय
कहि आवत है प्रभुहिं जानि अति समरथ सरल सुभाय।
यदपि जगत सुख मृषा तदपि रुचि तासु रही अधिकाय
पूरणकाम ताहि पुरवहु नतु देहु समूल मिटाय ।
दोउ सम तदपि मिले भावत सुख यह है लाभ अघाय
जगत् माहिं पावत हरिजन दुख कोउ यह कहि न सकाय

जनहिं सुखी लखि शरण रावरी ऐहैं जीव निकाय
पतित उधारण यहि विधि तरि हैं अमित पतित समुदाय।
देहु वृत्ति अस शुभ सुख विलसै अशुभ न कोउ नियराय
कमल पत्र ज्यों जलतैं त्यों मन विषयन तैं बिलगाय।
डगर धरत डग नागरि चिततैं जिमि गागर न डगाय
त्यों सुख भोग करत हू जियतैं प्रभु की सुरत न जाय।
घनतैं चातककी चकोरकी शशितैं प्रीति सुभाय
प्रचुर प्रीति तिहिं भाति हमारी प्रभु तैं होय अमाय।
निपट पंगुको यथा अगम है उल्लंघन गिरिराय
तथा मनोरथ सिद्धि मोहि यह दुर्लभ परति लखाय।
प्रभु समर्थ सब भाँति कर सकहिं जो जिय माँहिं समाय
मुनि दुर्लभ गति दई पाँवरन पाहन दिये तराय।
मम मनसा पूरण करिबेको है यह सुगम उपाय
प्रेम कृपा करि तनक हेरिये विरुद सुरति चित लाय ४१

तुम दीनदयालु कहावत हो, निज जन मन सुख उपजावत हो।
जब जब संकट आय परत है तब तुम ताहि नशावतहो
नाम पतित-पावन जन तारण पतित अनेक तरावत हो।
आर्तगिरा सुनि दास बत्सकी धेनु सरिस तुम धावत हो।
अशरणशरण निपट असहायन निजकर छाँह बसावत हो।
जन गुण अल्प गहत हो बहु करि दोष बडहु विसरावत हो।
सहन शीलता कहों कहाँ लगि प्रेमहु से अपनावत हो॥४२॥

अभिनव जलधर द्युतिहर रघुवर जयति स्वजन सुखकारी

दामिनि बरणी भवभयहरणी जयति सिया पिय प्यारी ।
पंकजलोचन ताप विमोचन युगल सरिस कोउ नाहीं
निज जन शिर पर रखहिं निरन्तर कर कमलनकी छाँहीं ।
सब विधि हीन मलीन दीन जे इनहिं शरण ताकि आवैं
अपनो विरुद् पतित पावन गानि तुरत तिनहिं अपनावैं ।
अगणित अवगुण गणत न जनके लघुगुण बहु करि मानैं
निज कृत हित चित रहत न जन यश बारम्बार बखानैं ।
अति समर्थ अति सरल प्रकृति दोउ हितरत अभिमत दानी
सकृत नमत ही जन पर रीझत दलत दोष दुख ग्लानी ।
सहनशीलता अति गभीरता किहिं विधि बरणी जावै
परम मलिनमन अतिखल प्रेम हु इनको दास कहावै ॥ ४३ ॥

करिये मम अवगुण क्षमा कृपा सिन्धु स्वच्छन्द
दया दृष्टि से देखिये रघुनन्दन सुख-कन्द ।
रघुनन्दन सुखकन्द ललित निज पद कमलों पर
बना लीजिये परम दीन जन मनको मधुकर
हे रघुकुल रवि मोह ध्वान्त को सत्वर हरिये
शुभ मति देकर सफल प्रेमका जीवन करिये ॥ ४४ ॥

आरति हरण अशरणके शरण राम
पूछत हूँ ढीठ ह्वै न करणी कछू करी ।
दीहदुःखदाता सब भोगन की माता यह
दूर ही रहैगी कामबासना जरी धरी ।
मूरति मनोहर तिहारी अवलोकबेको

अँखियाँ रहैंगी प्रेम वारितैं सदाभरी ।
ह्है है यह कौन जन्म कौन बर्ष कौन मास
कौन तिथि कौन बार हे उदार को घरी ॥४५॥

दोषन को कोष हूँ सरोष तन पोष हूँ मैं
विगत भरोस हूँ नही हूँ काहू काम को ।
दीन मति हीन हूँ मलीन और पाप पीन
मीन नीर नेही ज्यों सनेही लोभ काम को ।
शील सिन्धु अधम उधारण विरुद सुनि
शरणाभिराम राम दास बन्यो नाम को ।
अपने विरुद ही की ओर गौर कीन्हे नाथ
प्रेम होय है उवार मोसे ढीठ बाम को ॥४६॥

अति नीच निशील निशंक अघी हम नाथ भरे वहु दोषनि हैं
शुभ कर्म्म विहीन मलीन महा खल पातकि पुंज शिरोमणि हैं
प्रभु दास परन्तु कहावत हैं ताजि हो तो कहो सब का भनि हैं
अपनी दिशि देखि दयामय राम तुम्हें अपनाये हितैं बनिहैं॥४७॥

यदि जानि कुदास तजोगे कृपाल तो लोग न औगुण मो गनि हैं
शरणागतपालक राघव हू प्रण त्याग दियो जग यों भनि हैं
प्रण लाजत देखि गहोगे प्रभो तव बानि जनारति भंजन है
अघ भंजन नाम दृढ ब्रत राम तुम्हें अपनाये हि तैं बनि है ॥४८॥

प्रभूजीम्हे तो थाँकी करुणाकी बलिहारीजी होजी रामगरीबनवाज
म्हे तो थाँकी करुणाकी बलिहारी जी प्रभू ।

प्रभूजी गौतमनारी पाप कन्या छा भारीजी, होजी दोष
बिसारण राम आप कृपा कर घोर शाप सैं तारीजी प्रभू ।
प्रभूजी भील भीलणी अगणित थे निस्तारयाजी, होजी जन
गुण गाहक राम गीध राजकी गति सब भाँति सुधारीजी प्रभू ।
प्रभूजी वानर निशिचर परम कुटिल खल कामीजी, त्याँने
थे अपणाया नाथ चूक दासकी सपनामें न निहारीजी प्रभू ।
प्रभूजी अधम उधारण बिरुद् सुण्यो म्हे थाँको जी,जीसैं शरणैं
आया प्रेम अपणावो अब शरणागत हितकारीजी प्रभू ॥ ४९ ॥

बिपत म्हाँकी थेही हरोलाजी होजी प्यारा समरथ श्रीरघुनाथ बि०
नाथ थे तो अधम उधारणछो हे जी स्वामी म्हा सिरसा कोई अधम
जगत्में थे नाहिं लखोला जी ।
करी ना चोखी करणी भलाँही म्हे श्रीराघोजी शिलातिरावण
बाँण आपकी सो नाहिं तजोला जी ।
भलाँई म्हेतो ओगणगाराछाँ श्रीराघोजी पतिततारणथाँको बिरुद्
कदे भी म्हाँने ना बिसरोला जी ।
प्रेम थाँकी शरणागत म्हे छाँ श्रीराघोजी थे शरणागतपाल
कदे तो म्हाँकी सुरत करोला जी ॥ ५० ॥

दीना रा बेली हो पावणा हिवडामें म्हाँके आवज्यो ।
प्यारा भाई श्रीलछमनजी सेवक श्रीहनुमान
थाँकी जीवन जड़ी सियाजी याँने लैराँ ल्यावज्यो ।
नाहीं म्हाँ मैं छै चतुराई छाँ म्हे निपट गँवार
थे भिलणी निस्तारण छो प्रभु म्हाँकी पार लगावज्यो

जय्याँ राख्या थे शरणागत बानर निशिचर भालु
उय्याँ करज्यो कृपा कृपानिधि म्हाँनै भी अपणावज्यो ।
थाँनै आयाँ होसी सारा मंगल दीनानाथ
वेगा आज्यो बिरद निभाज्यो प्रेम बिसरमत जावज्यो ॥५१॥

म्हाँकी करणीपै थे मत जाज्यो राम उदार
अपणी ही ओडी देख ज्योजी म्हाँ का राज ।
करणीनै देख्या म्हाँको नाँ कदे भी होसी निस्तार
करी ना भलाई भूलसूँ भी म्हाँ का राज ।
बिरुद छै थाँको अधमउधारण परम दयाल
ऊँनै देख्याँ म्हाँकी सुधरसीजी म्हाँका राज ।
छाँ तो म्हे निकम्मा लैराँ पण लाग्या थाँकी
अब प्रेम शरणै आयाँ की राखज्यो जी म्हाँकाराज ॥ ५२ ॥

म्हाँकी थाँहीं के लगाया स्वामी लागैली जी पार
सुणज्यो जी दीनाँका बेली रघुवंशी सरदार ।
छाँ म्हे कामी अर क्रोधी लोभी मोही शुभ मति हीन
द्रोही पूरा किरतघनी पापाँ माँय रहाँ छाँ लीन
खोटा छाँ पण दास आपका छाँ हे करुणाधीन
थाँनैं तजकर कुणकै घर जाकर अब म्हे कराँ पुकार ।
साँची खाँ छाँ रघुनन्दन सुकरम म्हे नाहिं कदे कर्‌या छै
जितना ओगुण छै जगमें वै सब म्हाँके माँय भर्‌या छै
म्हाँकी करणी के ऊपरनै नाथ आप मत जावो
अपना बानाँ की सुरत करोजी रघुवर अधमउधार ।

ज्यो ज्यो करमाँमें होसी दुख सो खुशी खुशी म्हे सहस्याँ
थाँनें कुछ भी नाहिं कहस्याँ मनमें मगन बण्या ही रहस्याँ
पण थे म्हानें अपणा ल्यो अर हिवड़ामें आजावो
होजी दुखियाँ का बेली दूरा मतनें हो छिटकार ॥
साँचो दुख छै यो ही म्हाँको चित नहीं आपमें लागे
झूँठा झगडाँनें साँचा गिणकर वाँकी ओड़ी भागै
ईहीं कारण झूठा भी सब दुख साँचा सा लागै
जाणाँ छाँ म्हे पण कृपा बिना नहिं व्है दुख सूँ निस्तार ।
प्रभु जी झूँठा झगडाँमें सैं चित म्हाँको दूर हटा द्यो
थाँका कोमल चरणाँ के माँही ईंको बास करा द्यो
आशा तृष्णा मेट जगत की प्रेमकी प्यास वढा द्यो
राखो शरणै आयाँकी लज्जा शरणागत रिझवार ॥ ५३ ॥

बिसार्‌याँ म्हानै नाहिं सरैलो जी
बेगासा म्हाँकी सुध ल्योजी दीन दयाल ।
शरणैं आयांजी राघोजी थाँकै शरणै आयाजी
हे जी स्वामी थे शरणागत पाल ॥ बिसार्‌याँ०
दास कहाया जी राघोजी थाँका दास कहाया जी
हे जी स्वामी थे दासाँनैं सुख देण ॥ बिसार्‌याँ०
ओगणगारा छाँ राघोजी म्हेंतो ओगणगारा छाँ
हे जी स्वामी दोष बिसारण आप ॥ बिसार्‌याँ०
ज्यो म्हाँने तजस्यो जी राघोजी प्यारा ज्यो म्हाँने तजस्यो जी
हे जी स्वामी लोग करैला थाँकी बात ॥ बिसार्‌याँ०

अपजस होसी जी राघोजी छोडयाँ अपजस होसी जी
हे जी स्वामी निन्दा सुणयाँसें आसी लाज । बिसार्‌याँ०
अन्त अपणास्योजी राघोजी म्हानें अन्त अपणास्योजी
हे जी स्वामी अब ही ल्यो अपणाय । बिसार्‌याँ०
दरशण देद्‌यो जी राघोजी म्हाँनें दरशण देग्यो जी
हेजी स्वामी करो थे हियामें म्हाँकै बास । बिसार्‌याँ०
जस थाँको होसी जी राघोजी प्यारा जस थाँको होसीजी
हेजी स्वामी होसी यो प्रेम निहाल ॥ बिसार्‌याँ० ॥ ५४ ॥

सुणो म्हारी बीनती जी, होजी प्यारा रघुबर परम सुजान।
बिरद् गरीबनवाज रावरो जाणै छै संसार
दुखियाँ का दुख दूर करो छो सुणतांहीं दीन पुकार ।
ओगणगारो जाण तजो छो यो अचरज छै राम
आयो शरण नाथ मैं थाँकी दोष हरण सुण नाम ।
मैं थाँनै भूल्यो जीहीं सैं काँई थे मुनै दियो छै बिसार
पण म्हारी र आपकी छै काँई बराबरी सरकार ।
मैं तो बिचारो माया कै बश माया थाँकै हाथ
मूँ सिरसा होगयाँ आपनैं कय्याँ सरैलो जी नाथ ।
महा मोह मातो यो मन गज करै छै घणा उत्पात
ईं नैं रोक सकूँ या छै काँई म्हारा बलकी बात ।
ओगण देख र रोष करो मत करद्यो अस्यो उपाय
थाँका चरण कमल पर म्हारो मन भौंरो बण जाय ॥
तजस्यो तो म्हारी बात बिगडसी आसी थाँनैं लाज

भलो बुरो सुनै लोग गिणै छै थाँहीं को हे रघुराज ।
दो बाताँ में आप करो वा जीसें गिणो सुपास
प्रेम लगाल्यो मन थाँमें वा थे हिय करो निवास ॥ ५५ ॥

करणी देखे से मेरा नाथ नहीं निस्तारा
जप तप से वर्जित हूँ मैं, सुकृतोंसे विरहित हूँ मैं,
दान दया दम शील सहज शम का न स्वप्न भी कभी निहारा।
चरणों में चित न लगाया अति पावन चरित न गाया
कभी प्रेमसे सुदृढ नेमसे जपा न मैंने नाम तुम्हारा।
क्रोधी हूँ कामी हूँ मैं, कुटिलों में नामी हूँ मैं
फिरता है मन मेरा स्वामिन् विषयों के सँग मारा मारा।
करुणा नहिं होगी जब तक, हरगिज नहिं रुकनी तब तक
राग द्वेषकी हर्ष शोक की सुख दुःखों की गहरी धारा।
कीजे वह करुणा रघुबर, जिससे तारे बहु वनचर
शिला उधारी शवरी तारी प्रेम महाधम गीध उधारा ॥५६॥

महरकी हो नजर अबतो मेरे सरदार राघोजी
कभी हो ख्वाबमें ही आपका दीदार राघोजी।
जुदा तुमसे हुआहूँ जबसे अपना देहको जाना
अविद्याने किया है मुझपै अपना वार राघोजी।
फसा हूँ कीर मर्कटकी तरह दुनियाके फन्देमें
ये मैं तू ये तेरा मेरा गिना घरबार राघोजी।
सहज गुण काल कर्म्मादिक के वश हो विश्वके अन्दर
जनम लेले के मरता हूँ मैं बारम्बार राघोजी।

हरेक जग योनि में वहु वार बेहद् कष्ट पाये हैं
तआज्जुब है कि इस पर भी न मानी हार राघोजी ।
अगम संसार सागर ये मदादिक जन्तु संकुल है
कृपाकी वायुसे किश्ती लगादो पार राघोजी ।
भयंकर मोह रूपी नींदमें गाफिल पड़ा हूँ मैं
जगादो निज दयासे हे दया आगार राघोजी ।
कुटिल हूँ मैं अधम हूँ मैं मगर प्रभुका कहाता हूँ
निभाना ही पड़ैगा हे अधम उद्धार राघोजी ।
तमन्ना प्रेम यह है नाथके कदमोंमें दम निकले
नहीं है ज्ञानकी और मुक्तिकी दरकार राघोजी ॥ ५७ ॥

वोदिन होगा कि हम भी आपके प्रेमी कहायेंगे
तुम्हारी यादमें हम आपको बेखुद बनायेंगे ।
वियोगानलमें होंगी भस्म खोटी वासनायें सब
प्रबल मद मोह कामादिक को खोजा भी न पायेंगे ।
वचन मन कर्म्मसे निश दिन रहैगी चाह मिलने की
तुम्हारे देखनेको हर घड़ी आसूँ बहायेंगे ।
कलेजे को डसेगी जुल्फ काली नागिनी बन कर
तुम्हारी तीरसी चितवनका दिल पर ज़ख्म खायेंगे ।
मिलैगा फल हमें जीवनका तब ही प्रेम हेरघुवर
समझ कर आप अपना हमको सीनेसे लगायेंगे ॥ ५८ ॥

जो चाहो चौगुना करना अधम उद्धार निज प्रण को
तो तारो नाथ मुझ से नीच अधमाधम कुटिल जनको

जगत्‌में छा गया यश आपने अपना लिया साहव
शिलाको गीधको शवरीको निशिचरको शवरगणको।
जो पूछो आप उनमें और तुझमें भेद ही क्या है
तो साहव जाँचलो उनके व मेरे अति अधमपनको।
नहीं दुष्कृत सुकृतको जानते थे मुग्ध थे वे सव
यही सीखा था उनने पालना अपने मलिन तनको।
वहुत कम कोप आता है तुम्हें अज्ञात पापों पर
अवुध उन्मत्त के अपराध पर ज्यों भूप भूषण को।
मेरी हालत है ऐसी जान कर भी पुण्य पापोंको
अघोंको चाहता हूँ जिस तरह चातक चहै घनको।
समझ कर भी जो आज्ञा भंगमें सन्तत रहे तत्पर
तो उस पर कोप आता है महा नरनाथके मनको।
जो वो दुष्कर्म्म करते थे उन्हें वे कव छुपाते थे
छुपा रक्खे हैं मैंने हे प्रभो जैसे कृपण धनको।
नरकका नाथ भी और पाप पुण्योंका हिसावी भी
थकित होता है लिखते वक्त मेरे घोर अघ घनको।
गिना सकता नहीं मैं पाप जो लेखा ही करना हो
तो वुलवावो गिराको या जो रखता है सहस्रफनको।
अलावा आपकी सरकारके सरकार कोई भी
तरा सकती नहीं है मुझ महा पापी व दुर्जनको।
कपटसे वा सरलचितसे शरणमें प्रेम आया है
तरावो हे पतितपावन तरानेवाले पाहन को॥ ५९॥

सुनो श्रीराम मैं सब साधनोंसे हीन हूँ स्वामिन् ।
निपट निःसार इस संसारमें अति लीन हूँ स्वामिन् ।
सुधा सरिता सदृश जो भक्ति है उससे विमुख होकर
विषय सुख रूप रविकर नीरका मैं मीन हूँ स्वामिन् ।
जगत् बन्धन विमोचन आपका जो नाम है पावन
उसे त्यागे हुए हूँ निज सुमति से चीण हूँ स्वामिन् ।
अगम उद्धार है मेरा कृपा बिन हे कृपा सिन्धो
विरति विज्ञानसे हूँ हीन मैं अति दीन हूँ स्वामिन् ।
शरणमें प्रेम आया हूँ अजी अशरण शरण रघुवर
उबारो मत उबारो आपके आधीन हूँ स्वामिन् ॥ ६० ॥

दयाकी दृष्टि थोडी सी अगर सरकार हो जाये
तो यह संसार सागर धेनुपद आकार हो जाये ।
ये प्यासा मन हरिण भव भोग मृगजल हेतु व्याकुल है
पिलावो इसको प्रेमामृत परम उपकार हो जाये
जो बनकर सत्य वत अति दे रहा है दुःख सुख सन्तत
नजरमें स्वप्न वत मायाका यह परिवार हो जाये
जगत् जलनिधि के मोहावर्तमें यह जीव दुःखित है
दयामय गर सहारा दो सहज निस्तार हो जाये ।
कृपा मुझ पर करो तो काम दो हों एक ही पथमें
सुयश सरकारका हो और मेरा उद्धार हो जाये ।
सुनो रघुबर दिखा दो गर मनोहर साँवरी सूरत
निहारे प्रेम भर करके नजर बलिहार हो जाये ॥ ६१ ॥

दयालु रघुवर दया करोगे मेरा तो तबही उबार होगा
मेरे क्रियेसे तो कोटि कल्पों तलक न हरगिज सुधार होगा।
न भक्ति वैराग्य ज्ञान साधन न ध्यान जप तप न योगका बल
कभी किसी दिन विचारसे भी बना न धर्म्मोपकार होगा।
ये जानता हूँ विषय अनल है जलायगा स्पर्श मात्र ही से
उसीसे फिर भी लिपट रहा हूँ न मुझसा कोई गँवार होगा।
सबल समद है निपट निरंकुश ये मन करी और मैं अबल हूँ
क्या अपने बलसे मैं बच सकूँगा सकोप जब इसका वार होगा
विषय विपिनमें है काम क्रोधादि दुष्ट सत्वों ने आन घेरा
करोगे रक्षा न आप अब भी तो जीव इनका शिकार होगा।
तुम्हीसे हूँ मैं पुकार करता इसी लिये हे समर्थ स्वामिन्
शरण्य करुणानिधान प्रभु सा हुआ न कोई उदार होगा।
असंख्य पापी तराये प्रभुने मुझे अधम गिनके टालते हो
मेरे लिये ही क्या हे दयामय भले बुरेका विचार होगा।
पतित हूँ मैं तुम पतित उधारण मैं दीन हूँ दीनबन्धु स्वामी
है दिलमें निश्चय मेरा गुजर तो फकत तुम्हारे ही द्वार होगा।
यही है इच्छा समझ लो दिलमें भला बुरा प्रेम है ये मेरा
इसीसे सब दुःख दूर होंगे सहज ही बेडा ये पार होगा॥६२॥

विचित्र गति आप हैं कृपामय मेरे हृदयमें निवास कीजे
अधम उधारक हेराम प्यारे मुझे भी चरणोंका दास कीजे।
दशन चबाता है दण्डप्रद यम मेरे महा पाप देख करके
हे कौतुकिन मुझको दास अपना बनाके उसको हताश कीजे।

मदादि असुरोंने शून्य पाकर हृदयमें थरपी है राज धानी
सुरारिगण वंशध्वंसकारक समूल उनका विनाश कीजे।
हृदय जलज होरहा है मुद्रित उसे सुविकसित बनाके रघुबर
सदा हे अरविन्दनेत्र उसमें मिलिन्दकी सम विलास कीजे।
चरण सरोजों की भक्ति विमला अनूप अनपायिनी व अचला
मुझे कृपा करके प्रेम देकर सनाथ सफलाभिलाष कीजे ॥६३॥

कृपानिधान कृपाकी ज़रा नज़र हो जाय
अधम उधार इधर भी तनक महर हो जाय।
कठोर और निरस है मेरा हृदय अत्यन्त
ये नाथ नेह में कोई तरहसे तर हो जाय।
भटक रहा है ये आवारा बनके मन दिन रात
अनाथनाथके चरणोंमें इसका घर हो जाय।
व्यतीत हो गया आवागमनमें अति चिर काल
मरण व जन्मका अबतो ये तै सफर हो जाय।
यही है चाह सुनो राम प्रेम करुणाधाम
कुदास दास जनों में मेरा गुज़र हो जाय ॥ ६४ ॥

हमारे दिलमें दया धाम राम आ जावो
अनोखी साँवरी सूरत ज़रा दिखा जावो।
बढी ही जाती है दुर्वासना दवारी ज्यों
समूल इसको हे आनन्दघन बुझा जावो।
बहुत दिनोंसे हैं करुणानिधान प्यासे हम
नयन पुटोंसे हमें छबि सुधा पिला जावो।

जगत समुद्रमें डूबा है चाहती नैया
दया पवनसे कनारे इसे लगा जावो ।
जगत्की पाश गलेसे निकालदो स्वामी
फसाना हो तो स्वछवि-जालमें फसा जावो ।
महेश चित्त विमल सर कमल युगल पद पर
हमारे मनको मधुप प्रेम तुम बना जावो ॥ ६५ ॥

दिलकी किसें सुनायँ हम किसके समीप जायँ हम
हैं हम तो नीचता भरे पर हैं कहाते आपके
अब किससे सर झुकायँ हम । दिलकी०
स्वामी बनाके आपको किसके समीप हे प्रभो
जाकरके गिड़ गिड़ायँ हम । दिलकी०
सन्तोंकी जो हँसी करें उनकी तो कामना फलें
लज्जासे मुख छिपायँ हम । दिलकी०
कामादिकोंकी आगसे जाते हैं रातदिन जले
कैसे इसे बुझायँ हम । दिलकी०
जाताहै मन ये भागके चरणोंमें इसको नाथके
कैसे भला लगायँ हम । दिलकी०
कालिके कराल जालके फन्देसे किस प्रयत्नसे
खुदको प्रभो छुड़ायँ हम । दिलकी०
दुस्तर जगत समुद्रके निकलें महान पंकसे
यह बल कहाँसे लायँ हम । दिलकी०
अपने विरुदकी लाजसे करिये कृपा कृपानिधे

प्रेमावलम्ब पायँ हम । दिलकी०
ऐसी कृपा करो हरे पावन चरित्र आपके
सन्तत सप्रेम गायँ हम । दि० ॥ ६६ ॥

दिलका जो हाल है वो सुनाते हैं आपको
जैसा है आचरण वो जताते हैं आपको
झूठे जगत्के कार्यमें सन्तत निमग्न हैं
एकाग्र करके चित्त न ध्याते हैं आपको।
है आपसे न प्रेम हमें लेश मात्र भी
करके फरेब भक्त बताते हैं आपको।
प्रभुके समीप बैठ के भिव ध्यानका करैं
मनको भुलाके दूर हटाते हैं आपको।
निष्काम एक पल भी हैं करते भजन नहीं
कर-करके कामनायें सताते हैं आपको।
रखते हैं वेष भक्तका करते कुकर्म हैं
करके कपटका प्रेम बनाते हैं आपको।
है व्याज पद बनाने का और असल बात ये
श्रेणी प्रतिष्ठितोंकीमें लाते हैं आपको।
संगीतके व्यसनसे करैं उत्सवादि हम
और हैं दिखाते यह कि रिझाते हैं आपको।
होते हैं हम दुखी तो कुकर्मोंके भोगसे
और दोष इसका व्यर्थ लगाते हैं आपको।
सब दोष हममें नाथ हैं ऐसे मलिन हैं हम

सेवक कहाके नाथ लजाते हैं आपको ।
इन निज कृतोंको देखके जब सोचते हैं हम
आवागमनके योग्य ही पाते हैं आपको
सूरत उबारकी तो फ़कत एक है प्रभो
हम प्रेम अपना नाथ बताते हैं आपको ॥ ६७ ॥

घनश्याम राम अपना जल्वा दिखाइयेगा
मेरे विलोचनोंको चातक बनाइयेगा ।
अगणित मनोज मद हर अनुपम सुछवि सुधाधर
सुन्दर वदन निशाकर अब मत छुपाइयेगा ।
नीरस मेरे हृदयमें पैदा स्वभक्ति करके
मरुमें समर्थ रघुवर गंगा वहाइयेगा ।
उजड़ा हुआ है तुम बिन यह मन भवन हमारा
उजडी वसाने वाले इसको बसाइयेगा ।
शंकर हृदय सरोवर अरविन्द पद युगल पर
मम चित्त रूप मधुकर अतिशय लुभाइयेगा ।
दिलमें दहक रही है दुर्वासना दवारी
आनन्द वारिधर अब इसको बुझाइयेगा ।
अपने विरुदको देखो रघुवर अधमउधारण
मेरे कृतोंको अपने दिलमें न लाइयेगा ।
मैं हूँ महा मलिन पर हो प्रेम तुम दयामय
अपनी दयासे साहब मुझको निभाइयेगा ॥ ६८ ॥

हृदयसे तुम्हें हम विसारे हुए हैं

कुटिलताको हरदम सँवारे हुए हैं।
प्रबल काम क्रोधादि दुष्टोंके वश हैं
विषय लालसाओंके मारे हुए हैं।
नहीं परगुणों का ग्रहण हम हैं करते
दुखद दोष दृग को पसारे हुए हैं।
निठुरपन व आलस्य ईर्ष्याके मारे
सुनो राम हम सबसे खारे हुए हैं।
मलिन हैं महा और उसपै ये तुर्रा
समझते हैं हम सब सुधारे हुएहैं।
बिरुद्धाचरण सब तरह है कृपामय
फकत नामके जन तुम्हारे हुए हैं।
उबारो हमें यह कहें किस वदन से
निरखकर निजाचार हारे हुए हैं।
मलिन जन भी जगमें सुहाते हैं प्रभुको
समझकर यही धैर्य धारे हुए हैं।
अधमजन उधारण जो प्रण आपका हैं
सदा बाट उसकी निहारे हुए हैं।
निहारोगे अपनी तरफ प्रेम तुम जब
तरेंगे ये निश्चय विचारे हुए हैं। ॥ ६९ ॥

मैं दीन आप दीन जनों के आधार हो, करुणा आगार हो
मैं हूँ सदोष आप क्षमा पारावार हो, अति ही उदार हो।
शुभ कर्म्म धर्म्म ज्ञानका मुझमें है वल नहीं, यह सच है छल नहीं

सरकार की कृपा ही से मेरा उधार हो, बेडा ये पार हो।
जाऊँ कहाँ मैं मुझको जगह दूसरी नहीं, देखा है सब कहीं
बिगडी हुई है मेरी कृपामय सुधार हो, तो इस ही द्वार हो।
रहने दो द्वार ही पै पडा भील उद्धरण, हे दास दुख हरण
मेरा निकट निवास अगर नागवार हो, प्रभुको जो बार हो
हेप्रेम दास तू है कहाता श्रीरामका, शरणाभिरामका
अपनायँगे जरूर न यों बेकरार हो, निश्चल विचार हो ॥७०॥

छाया है सुयश विश्वमें श्रीराम तुम्हारा; है नाम तुम्हारा
आया जो शरण जीव उसे आशु उधारा, अवगुण न निहारा।
जब गजने किया याद तो पहुचे हो वहीं पर, वाहनसे उतर कर
जब तक कि शरण शब्द भी पूरा न उचारा, दुख उसका निवारा।
कपि भालु शबर गीध शिलाऔर निशाचर, करुणा की सभी पर
गणिका व रजक दुष्ट अजामिल सा उधारा, ग्रन्थोंने पुकारा।
सुन कर के सुयश नाथका आया हूँ शरणमें, गिरता हूँ चरणमें
मुझ पर भी दयाधाम दयाका हो इशारा, हूँ दीन विचारा।
सरकार दयागार का पद युग्म मृदुल है, सानिन्द कमल है
झूमा ही करे उसपै ये मन भृङ्ग हमारा, हो प्रेम न न्यारा ॥७१॥

दीन जनको आप बिन है और किसका आसरा
हे चतुर चूडामणे करुणानिधे सोचो जरा ।
छल कपट ही से सही पर आ गया प्रभुकी शरण
मत बिसारो नाथ यद्यपि दोषसे मैं हूँ भरा ।
मुझ पतित से फेरना फिर दृष्टि पहिले यह कहो

क्या जगत्में हैं पतित पावन भी कोई दूसरा।
गर घृणा है पापियोंसे किसतरह गणिका तरी
क्यों यवनकी गति हुई पापी अजामिल क्यों तरा।
टालनेसे आपके कहिये तो मैं क्योंकर टलूँ
आपको मुझसे बहुत मुझको न प्रभु सा दूसरा।
जान कर अपना कृपा चितवन से मुझको देखलो
दोष गुण हो जायँगे सब बातिनी और ज़ाहिरा।
हे सजल घनश्याम करके वृष्टि करुणा दृष्टि की
प्रेम हृदयस्थलमें करदो प्रेम रूपी तरु हरा ॥७२॥

किस्मत में लिखा जो हो वह सब प्रभु मुझसे सहन करवा लीजे
होकर के समर्थ दयामयभी रघुवर मेरे कष्ट को हरते नहीं
ये शिकायत मैं न करूंगा कभी चाहे मुझसे नाविश्त लिखा लीजे
फरयाद मेरी तो है नाथ यही मन मत्त मतंग ये वशका नहीं
निज भक्ति जंज़ीरसे अपने निकट नृपराज इसे बँधवा लीजे
अघ भाजन दीन मलीन हूँ मैं अति ढीठ हूँ भक्ति विहीन हूँ मैं
विरुदावलि सुनके हूँ आया शरण दुख दोष हरण अपना लीजे
मैंने नाथ को दिलसे भुला ही दिया करुणामय आप न भूलियेगा
मुझे प्रेम निहारके अपनी तरफ शरणागत पाल निभा लीजे ७३

मेरी तो विनय केवल सरकार सुनोगे तुम
इस दीन दशा पर तो बस गौर करोगे तुम
कामादि वधिक कुलने मन मृगको फसाया है
फन्देसे इसे उनके आज़ाद करोगे तुम।

शुभ मति को दबाताहै कलिकाल महा निशिचर
इज्जत न बचेगी जो रक्षक न बनोगे तुम।
विपरीत ज़मानाहै कोई न ठिकाना है
बिगड़ैगी सभी मेरी जो नाथ तजोगे तुम।
हो आप शरण पालक मैं प्रेम शरण आया
मति मन्द मलिन जनकी भी लाज रखोगे तुम ॥७४॥

आरति हर शरण राख लीजिये स्वामी
करुणामय निज दिशि लखि रीझिये स्वामी।
न ज्ञान ध्यान किया और न भक्ति की मैंने
सुकृतकी भूलके की है न यादभी मैंनें
उदार नाथकी विरुदावली सुनी मैंनें
अनाथ नाथ इसीसे शरण है ली मैंने
शरण सुखद पतित पावन अब न देर कीजिये स्वामी।
स्वदास अल्प सुकृतको भी कोटि गुन गिनकर
हृदयमें आप हो रखते न भूलते पल भर
महा भी दोष जो बन जाय दास से रघुबर
तो आप उसको न लाते हैं दृष्टिके भीतर
अस निज ब्रत जगत विदित तापर चित दीजिये स्वामी।
जो मंगलोंकाहै आगार दुःख भंजन है
युगल स्वरूप प्रदर्शक है मोह गंजन है
तमाम साधु महात्मा जनोंका भूषण है
सुकृत सरोज बनोंके लिये जो पूषण है

अस निज पद कमल अमल अचल प्रेम दीजिये स्वामी ७५

इति श्रीसीतारामप्रेमप्रवाह अष्टमतरंग समाप्त।

प्रेमप्रकाश इलेक्ट्रिक प्रेस जयपुरमें मुद्रित।

शुद्धपाठ मोटाकागज बड़ीसाइज़

में

॥ श्रीरामचरितमानस ॥

श्रीअयोध्या जानकीघाटनिवासी अखिलश्रुतिशास्त्रमर्मज्ञ
साधुभूषण अनन्तश्री पं० श्रीरामवल्लभाशरणजी
महाराजकी आज्ञानुसार

यहांपर छप रहा है

छपाई और कागज

के लिये

प्रेमप्रकाश इलेक्ट्रिक प्रेस जयपुर

को आर्डर दीजिये।

यहांपर:-

हिन्दी संस्कृत और अंग्रेजीमें पुस्तकें और जाब (अर्थात् नोटिस निमन्त्रणपत्र चिट्ठीके कागज कार्ड बिलफार्म रसीदबुक रजिस्टर आदि सभी प्रकारके दफ्तरों व व्यापारियों के काम) उत्तमतासे छापे जाते है।

और

लिखने और छापनेके कामका अनेक प्रकारका कागज और लिफाफे विजिटिंगकार्ड, पोस्टकार्ड मेन्यूकार्ड आदि अनेक प्रकारका स्टेशनरी का सामान बिक्रीकेलिये हमेशा मौजूद रहता है।

पूरापता:-पीतलियोंका रास्ता जौहरी बाजार जयपुर।